



www.sukhparivar.com

₹25

समृद्ध सुखी परिवार

जून 2013

समृद्धि
विशेषांक

आभूषण
सौंदर्य भी
स्वास्थ्य भी

जीवन में सुख-
समृद्धि का मंत्र

संभव है समृद्धि
और भाग्य में वृद्धि

प्रसन्न रहें
स्वस्थ रहें



VASU CREATION

B-4/1626, RAI BAHADUR ROAD, LUDHIANA - 141 008

Phone No. 0161-2740154, 98142-62392

Mfrs. of PREMIUM RANGE OF GIRLS, LADIES & GENTS NIGHT WEARS

—: SPECIALISTS IN :—

LONG KURTA ❖ 3PC SET ❖ MATERNITY WEAR ❖ JIM WEAR ❖ CAPRI SET & SLEX SUIT

सुखी और समृद्ध परिवार का मुखपत्र

वर्ष : 4 अंक : 5

जून 2013, मूल्य : 25 रु.



स्वयं की खोज



घर में चली आएगी समृद्धि



मदुरै: तमिल संस्कृति का गौरव



- 4 कामयाबी का रहस्य
- 6 मार्कण्डेय पुराण का महात्म्य
- 6 फेंगशुई से समृद्धि
- 7 स्वयं की खोज
- 8 महाफलदायक है व्रत
- 9 समृद्धि के देवता कुबेर
- 10 जीवन को स्वर्ग बनाएं
- 11 यदि हम मनुष्य हैं, तो दूसरा कौन है
- 11 जीवन में सुख-समृद्धि का मंत्र
- 12 सुख-समृद्धि के लिए पद्मावती साधना
- 13 धन के प्रकार
- 13 सच्चा भक्त कौन?
- 14 संसार एक सांस है
- 14 अदम्य जिजीविषा और अथक परिश्रम
- 15 आभूषणों से स्वास्थ्य रक्षा भी
- 16 अनंत संसार में चाहिए मुरारी की कृपा
- 16 समृद्धि के नौ सूत्र
- 17 मानव मूल्यों की रक्षा का संकल्प
- 18 सुखी जीवन के वास्तु टिप्स
- 18 मंत्र संगीत से होती है आत्मिक शुद्धि
- 19 बंजर होती जमीन
- 20 खाटू श्याम: हारे का सहारा
- 21 नंदू भैया: श्याम रंग में रंगी विरल विभूति
- 22 रमल से जानें वाहन योग
- 22 सही वास्तु दिलाएगा धन-समृद्धि
- 23 दृढ़ सकलपी के लिए कहीं कोई कमी नहीं
- 27 मधुमेह में शर्करा पर नियंत्रण रखता है जामुन
- 28 धन प्राप्ति हेतु लक्ष्मी साधनाएं
- 29 प्रतिस्पर्धा वह जो प्रेम बढ़ाए
- 29 स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए किचन की ऊर्जा
- 30 घर में चली आएगी समृद्धि
- 31 जीवन एक प्रतिस्पर्धा है
- 31 प्रसन्न रहें, स्वस्थ रहें
- 32 आप वही दे सकते हैं जो आपके पास है
- 32 नाकामी में छिपा होता है सफलता का रहस्य
- 33 समृद्धिदायक हैं गणेश
- 34 निर्गुण संत कवि रविदास
- 34 खो गया बचपन
- 35 भगवान शिव के तीन प्रमुख नाम: शिव, शंभु और शंकर
- 36 समृद्धि का मूल स्रोत है गाय
- 37 बरसात में स्वास्थ्य की देखभाल
- 38 शक्ति के स्रोत हैं मंत्र
- 39 नियति और पुरुषार्थ का समन्वय
- 40 Appropriate counsel for path of Righteousness
- 40 Prayer, A Tele-a-Tele with the Supreme Power
- 41 Living in the Present Matters
- 42 संभव है समृद्धि और भाग्य में वृद्धि
- 42 आह है संपूर्ण उपचार प्रक्रिया
- 45 मदुरै: तमिल संस्कृति का गौरव
- 46 सर्वधर्म समभाव

मौलाना वहीउद्दीन खां
शुभदा पांडेय
गायत्री शर्मा
महायोगी पायलट बाबा
ममता भारती
मोहन कुमार कश्यप
डॉ. संपत सेठी
प्रेम रावत 'महाराजजी'
विपिन जैन
आचार्य अशोक सहजानंद
श्री श्री रविशंकर
विनोद किला
जगजीत सिंह
सुरेश पंडित
उमेश पांडे
आचार्य शिवेन्द्र नागर
विनोद कुमार बंसल
डॉ. वंदना कुण्डलिया
पं. महेश नंद शर्मा
ज्ञानचंद जैन
प्रो. अश्विनी केशरवानी
उमेश वर्मा
बेला गर्ग
डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'
प्रकाश जैन
आरती जैन-खुशबू जैन
शशिभूषण शलभ
मंजुला जैन
भक्ति विचार विष्णु महाराज
भारती कांटेड
मुरली कांटेड
ओशो
राहुल फूलफगर
जितेन कोही
स्वामी शिवानंद
सुधा गर्ग
प्रो. महेन्द्र रायजादा
उमा पाठक
स्वामी अवधूतानंद
डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
शिवप्रकाश अरोड़ा
आचार्य सुदर्शन
आचार्य महाश्रमण
Radha Prathi
Dorothy Victor
Leela Ramaswamy
गोपाल शर्मा
अश्विनी कुमार
पुखराज सेठिया
गणि राजेन्द्र विजय

मार्गदर्शक: गणि राजेन्द्र विजय संपादक: ललित गर्ग (9811051133)

डिजाइन: कल्पना प्रिंटोग्राफिक्स (9910406059) वितरण व्यवस्थापक: बरुण कुमार सिंह +91-9968126797, 011-29847741, कार्यालय: ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25 आई.पी. एक्सटेंशन, पटपडगंज दिल्ली-110092

फोन: 011-22727486, E-mail: lalitgarg11@gmail.com

शुल्क: वार्षिक: 300 रु., दस वर्षीय: 2100 रु., पंद्रह वर्षीय: 3100 रु.

Published, Printed, Edited and owned by Lalit Garg from E-253, Saraswati Kunj Apartment, 25 I.P. Extn. Patparganj, Delhi-110092. Printed at : Bookman Printers, A-121, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi-110092. Editor : Lalit Garg



मत-सम्मत

समृद्ध सुखी परिवार मासिक पत्रिका रंगीन, बहुआयामी एवं आकर्षक व भाव चित्रात्मक पत्रिका है। इसमें कई विदेशी लेखकों के भी दिलचस्प लेख हैं। यह पत्रिका वैश्विक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए एक आदर्श पत्रिका है।

—**डॉ. सीए श्रीधर के गणपति**
602-ए, एमीरल्ड प्लॉट नं. 46,
15 रोड, चेम्बूर, मुम्बई-400071

समृद्ध सुखी परिवार एक संपूर्ण पत्रिका है। यह शरीर, बुद्धि, मन और आत्मा के लिए एक निश्चित रूप से भोजन की आपूर्ति करती है। समृद्ध सुखी परिवार अनुभवजन्य दिव्य वस्तुओं का एक मिश्रण है। सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए पत्रिका पठनीय है। आशा है निकट भविष्य में पत्रिका और सशक्त लेखन का माध्यम बनेगी। पत्रिका के ई-संस्करण उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद।

—**डॉ. रतना पुरोहित**

समृद्ध सुखी परिवार का अप्रैल-2013 अंक प्राप्त हुआ। इसके पूर्व के अंक भी मुझे प्राप्त हो रहे हैं। सुखी व समृद्ध जीवन जीने की कला का मंत्र सूत्र 'हर दिन खुशी से जियो' को प्रतिपादित करता संपादकीय लेख 'युग की आवाज और खुशी के दीपक' प्रेरणादायी व

आचरणीय बन पड़ा है। वर्तमान परिस्थिति में व्यक्ति के दुःख का कारण दूसरे की खुशी है। इंसान के पास जो-जो है उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करने के बजाय उसके पास जो नहीं है उसकी प्राप्ति हेतु येन-केन चिंता करता रहता है तथा दुःखी रहता है। वह अपनी सकारात्मक ऊर्जा का सदुपयोग करने की अपेक्षा नकारात्मक चिंतन करके दुखी रहता है।

पत्रिका की समस्त सामग्री ज्ञानवर्द्धक व रोचक है। अतः अंक संग्रहणीय है। पत्रिका की टंकण, छपाई तथा साज-सज्जा मनमोहक है। भारतीय संस्कृति की पोषक 'समृद्ध सुखी परिवार' के प्रस्तुत अंक हेतु समस्त सहयोगियों सहित संपादकजी को सादर साधुवाद।

—**सुनील कुमार सारस्वत**

संपादक: मानस चंदन, सारस्वत सदन
सिविल लाइंस, सीतापुर-261001 (उ.प्र.)

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका निरंतर प्राप्त हो रही है। सर्वगुण संपन्न यह पत्रिका अपनी अलग पहचान रखती है। अतः उत्सुकता बनी रहती है।

—**महेन्द्र रायजादा**

5-ख-20, जवाहर नगर
जयपुर-4 (राजस्थान)

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका को पढ़ने से कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि जीवन में कुछ छूटा हुआ था, जो अब प्राप्त हो रहा है इस पत्रिका के माध्यम से। इस पत्रिका की एक विशेष और अति सुंदर बात जो लगी, वो यह है कि आप आज के युग के संतों का मान करते हैं। आपकी पत्रिका के किसी भी अंक में भगवान, दैव, प्रकृति, संस्कृति व संतों के विरुद्ध कहीं भी छोटी-सी झलक नहीं दिखाई देती। गुण-अवगुण सबमें होते हैं। अच्छी बात यही है कि गुणों को अपना लिया जाए व अवगुणों की ओर से दृष्टि फेर ली जाए। यही आपकी पत्रिका के की मुझे विशिष्टता लगी। अप्रैल-2013 अंक की प्रति पढ़कर बड़ी आत्मिक शांति प्राप्त हुई।

—**विनोद कुमार बंसल**

129, सिविल लाइन (उत्तरी)
मुजफ्फरनगर-251001 (उ.प्र.)

आपके संपादन में 'समृद्ध सुखी परिवार' का कलेवर तथा चयन सामग्री का प्रकाशन प्रशंसनीय है। वर्तमान आपाधापी युग में लघु लेखों का प्रचलन लघु कथाओं की भांति हो गया है। वह लोगों को अधिक रुचिकर लगता है।

—**बद्री नारायण तिवारी**

38/24, प्रयाग नारायण शिवाला
कानपुर-208001 (उ.प्र.)

समृद्ध सुखी परिवार के अंक नियमित मिल रहे हैं। अप्रैल-2013 अंक समक्ष है। क्या खूब पत्रिका निकाल रहे हैं आप! आदि से अंत तक सब सुघड़-सुंदर! बेहतरीन! बड़ी बात ये है कि पत्रिका भारतीय संस्कृति की सच्ची पोषक समर्थक है। प्रस्तुत अंक में बड़े-बड़े विद्वानों ने खुश रहने के जो तरीके बताये हैं प्रशंसनीय हैं। यूं भी जीवन का परम लक्ष्य खुश रहना और खुशी बांटना ही है। आप 'समृद्ध सुखी परिवार' से ये खुशी बांट रहे हैं। अनंत बधाइयां।

—**अशोक 'अंजुम'**

स्ट्रीट-2, चन्द्रविहार कॉलोनी
'नगला डालचंद', क्वारसी बाईपास
अलीगढ़-202002 (उ.प्र.)



आगामी अंक

'समृद्ध सुखी परिवार' मासिक पत्रिका के आगामी अंकों के विषय के अनुरूप रचनाएं आमंत्रित हैं। हमारा प्रयास हर अंक को अनमोल, अद्भुत, संग्रहणीय और पठनीय बनाना है। विषय केन्द्रित अंकों की यह शृंखला निश्चित ही पाठकों को पसंद आयेगी।

जुलाई 2013

अगस्त 2013

परिवार

स्वतंत्रता

—संपादक



मौलाना वहीउद्दीन खां

अगर आपका पिछला कल खो गया है तो उसको खोया हुआ न समझिए, उसको अनुभव कमाने का साधन बनाइए। इस तरह आपकी कोई हुई पूंजी भी पाई हुई पूंजी बन

समृद्ध सुखी परिवार | जून 2013

कामयाबी का रहस्य

जाएगी। अतीत के अनुभव की पूंजी को अपनी वर्तमान की पूंजी में मिला दीजिए। और फिर आप देखेंगे कि आपकी कोई हुई चीज भी और अधिक वृद्धि के साथ आपको दोबारा मिल गई है।

पिछले कल का अफसोस करना मानो अपनी क्षमता के एक हिस्से को नष्ट कर देना है। आप ऐसी गलती क्यों करें। आप नए दिन में अपनी अधूरी क्षमता के साथ क्यों प्रवेश करें। पिछले कल के दुख से अपने दिमाग को खाली कर लीजिए और अपनी पूरी ताकत को लेकर

अपने नए दिन की योजना में लग जाइए। यही कामयाब जीवन का सही तरीका है।

आप चाहे कितनी ही ज्यादा पिछले कल की चिंता करें, पिछला कल अब दोबारा आपकी तरफ वापस आने वाला नहीं। जाने वाली चीज जा चुकी, रहने वाली चीज बाकी है। जाने वाली चीज को भुला दीजिए और रहने वाली चीज को अपनी पूरी ताकत के साथ पकड़ लीजिए। यही इस दुनिया में कामयाबी हासिल करने का एकमात्र रहस्य है। यहां कामयाबी हासिल करने का दूसरा कोई तरीका नहीं।



आज दुनिया के हर कोने में इंसानों ने समृद्धि के नये-नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। समृद्धि के इन्हीं नये क्षितिजों के अंतर्गत कोई चांद पर बस्ती बसाने और प्लॉट काटने का उपक्रम कर रहा है तो वैज्ञानिक हर शहर में अपना एक नकली सूरज की योजना को आकार देने में जुटे हैं। कल्पना की जा रही है कि समृद्धि के इन्हीं पायदानों पर चढ़ते-चढ़ते हर मकान के आगे निजी हवाई जहाज (ऐरोप्लेन) का सपना भी साकार होते हुए देख सकेंगे। समृद्धि के ये सुहावने चित्र आकर्षक ही नहीं, विडम्बनापूर्ण भी हैं। क्योंकि समृद्धि के नयी छटाओं के बीच इंसान का मूल्य कम होता जा रहा है। बूढ़े मां-बाप जहां वृद्धाश्रम को भेज दिये जाते हैं वहीं कोमल और मासूम बचपन आयाओं के गोद में पलता है। बेकन ने सही कहा है, 'समृद्धि शक्ति भर दुर्गुणों को खोज निकालती है। परन्तु विपत्ति शक्ति भर गुणों को खोज निकालती है।' जरूरत है समृद्धि को जीवनमय बनाने की। सच है कि सपनों की दुनिया हमारी इच्छाओं की दुनिया है। जिनके पास सपने नहीं होते, वे कुछ नहीं कर सकते। ये सपने भी हमारी समृद्धि को तय करते हैं, यही हमारी

शक्ति होते हैं। लेकिन इन सपनों में गहरी संवेदना और सघन भावावृत्ति होना जरूरी है।

अपनी संस्कृति और देश के संदर्भ में जब समृद्धि के बारे में सोचता हूँ तो लगता है कि सब कुछ बदल रहा है। भारतीयता, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, व्यवहार, जीवनशैली, शिक्षा और आचरण सभी पीछे छोड़ दिये गए। सभी बदल गए। समृद्धि की मानसिकता ने बदले या स्वयं बदल गए, खोज का विषय हो सकता है। पर अभी जो कुछ है वह मिश्रण है, नकल है, भटकाव है और गिरावट है, इसे खोज की जरूरत नहीं है। समृद्धि का अर्थ सारी परम्पराओं से हटना नहीं, इंसानियत या इंसानी जड़ों को धूमिल करना नहीं अपितु उपयोगी-अनुपयोगी का भेद कर उनको साथ लेकर चलना होता है। एक साल के बच्चों को जब आप हवा में उछालते हैं तो वह हंसने लगता है क्योंकि उसे पता होता है कि उसे आप थाम लेंगे। ये थाम लेने का विश्वास ही वास्तविक समृद्धि है। ईश्वर ने जितने रूपों में जीवन की रचना की है, उनमें मनुष्य सर्वोत्कृष्ट माना गया है। ऐसा नहीं कि दैहिक सुंदरता या भावना से भरपूर होने की वजह से मनुष्य को सबसे उत्तम बताया गया है। सच यह है कि मनुष्य के अंदर मौजूद तार्किकता और उद्देश्यपरक जीवन-दृष्टि में रुचि ही उसे विशिष्ट बनाती है। ऐसे में सहज है कि उसने जीवन से जुड़े सवालों और इसके अर्थ की तलाश शुरू की है। संभव है समृद्धि की दृष्टि को भी वह जग की भलाई में अपनी भलाई के दृष्टिकोण से विकसित करेगा।

संसार में अनगिनत लोग ऐसे हैं जो जीवन की संपूर्णता को अलग-अलग तरीके से तलाश कर रहे हैं। इनमें से कई असफल हो जाते हैं तो कुछ को सांसारिक रूप से गहन सफलता नसीब हो जाती है लेकिन अधिकांश लोगों का मानना यही है कि वे अब भी अपने लिए पूर्णता तलाश कर रहे हैं। धन, संपत्ति, रिश्तों- हर क्षेत्र में समृद्धशाली होकर भी आंतरिक खुशी की दौलत से वे महरूम ही रह गए होते हैं। सच तो यह है कि जो कुछ आंख से दिखता है, हाथों में कैद किया जा सकता है, लेकिन वही जीवन को मुकम्मल नहीं बनाता। कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ ऐसा है, जो हमारी पहुंच से तब तक दूर है, जब तक हम दिल की नजर से उसकी तलाश नहीं करते। प्रश्न उठता है- फिर वह है क्या, जो साधारण तरीकों से तलाशने पर नहीं मिलता? ईश्वर, धर्म, आस्था या फिर कुछ और ही, जो दिव्य है, सहज अनुपलब्ध है।

ईमानदार होना आज अवगुण है, अपराध के खिलाफ कदम उठाना पाप हो गया है, धर्म और अध्यात्म में रुचि लेना साम्प्रदायिक माना जाने लगा है। किसी अनियमितता का पर्दाफाश करना पूर्वाग्रह माना जाता है। सत्य बोलना अहं पालने की श्रेणी में आता है। साफगोई अव्यावहारिक है। भ्रष्टाचार को प्रश्रय नहीं देना समय को नहीं पहचानना है- ये बढ़ती तथाकथित समृद्धि के लक्षण हैं।

एक समृद्ध समाज में गरीबी का होना सबसे बड़ा अभिशाप है। एक आजाद मुल्क में, एक समृद्धि की ओर बढ़ते विकासशील राष्ट्र में, एक शोषण विहीन समाज में, एक समतावादी दृष्टिकोण में और एक कल्याणकारी समाज व्यवस्था में गरीबी का होना और गरीबी रेखा का होना समृद्धि पर सबसे बड़ा प्रश्नचिन्ह है? यह गरीबी की रेखा समृद्धों के लिए 'शर्म की रेखा है', जिसको देखकर उन्हें शर्म आनी चाहिए।

- जो गरीबों को रोटी नहीं दे सके वह कैसी समृद्धि?
- जो इज्जत और स्नेह न दे सके, वह कैसी सामाजिकता?
- जो अभय न बना सके वह व्यवस्था कैसी?
- जो गरीबी और अमीरी की खाई न पाट सके वह सरकार कैसी?

वस्तुतः यह गरीबी की रेखाएं तथाकथित गरीबों ने नहीं खींची। आप सोचिए भला कौन दिखायेगा अपनी जांच। ये रेखाएं उन्होंने खींची है जो अपनी समृद्धि को महिमामंडित होते हुए देखना चाहते हैं।

इस गरीबी की रेखा (दीवार) में खिड़कियां हैं- ईर्ष्या की, दम की, अहंकार की। पर दरवाजे नहीं है पार जाने के लिए। जब तक समृद्धि नैतिक और इंसानपरक नहीं बनेगी तब तक उसे कल्याणकारी नहीं कहा जा सकता। असल में देखा जाए तो समृद्ध होता हुआ इंसान भौतिक दृष्टि से भले ही पराक्रमशील दिखाई दे लेकिन नैतिक दृष्टि से वह अनुत्साही एवं जड़ ही है। क्योंकि असली समृद्धि आदमी को आदमी बनाती है। लेकिन वर्तमान परिदृश्यों को देखकर ऐसा नहीं लगता कि इंसान इंसानियत की ओर अग्रसर हो रहा है। अगर तटस्थ दृष्टि से बिना रंगीन चश्मा लगाये देखे तो हम सब गरीब हैं। विशेषतः जो समृद्धि का अहंकार पाले हुए हैं वे ज्यादा गरीब हैं। गरीब, यानी जो होना चाहिए वह नहीं है। जो प्राप्त करना चाहिए वह प्राप्त नहीं है। चाहे वह अज्ञानी है, चाहे वह भयभीत है, चाहे वह लालची है, चाहे वह निराश है। हर दृष्टि से हम गरीब हैं।

जैसे भय केवल मृत्यु में ही नहीं, जीवन में भी है। ठीक उसी प्रकार भय केवल गरीबी में नहीं, अमीरी में भी है। ये भय है आतंक मचाने वालों से, सत्ता का दुरुपयोग करने वालों से, येन-केन प्रकारेण अपने स्वार्थों की पूर्ति करने वालों से, व्यवस्था को भ्रष्ट एवं अराजक बनाने वालों से। जब चारों तरफ अच्छे की उम्मीद नजर नहीं आती, तब मनुष्य नैतिकता की ओर मुड़ता है।

हमें समृद्धि को अभिशाप नहीं, बल्कि वरदान बनाना है। इसे शक्ति का रूप देना है, न कि संहार का। हमारे कदम उस ओर बढ़े, रेखाओं के आर-पार जाने के लिए दरवाजे बनाने के लिए, शर्म की रेखा को तोड़ने के लिए। शर्मा और बेशर्मा दोनों मिटे। गरीबी का सम्बोधन मिटे, तब हम वास्तविक समृद्धि के सूर्योदय के नजदीक होंगे, तभी हम चांद पर बस्ती बसाने के वास्तविक हकदार होंगे और तभी हर शहर का अपना नकली सूरज वास्तविक ऊर्जा दे सकेगा।



समृद्धि



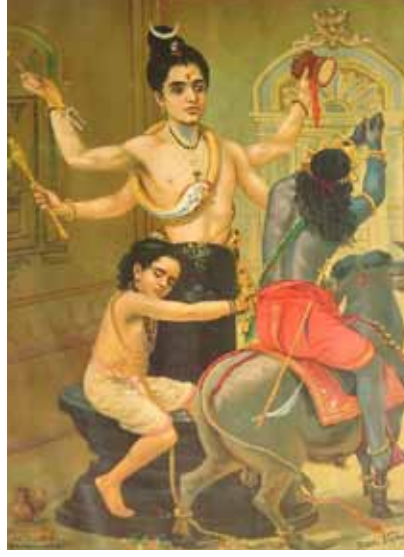
शुभदा पांडेय

मार्कण्डेय पुराण के वक्ता चार धर्म पक्षियों ने जैमिनि को मार्कण्डेय पुराण का माहात्म्य बताते हुए कहा कि इस पुराण के श्रवण एवं पठन करने वाले व्यक्तियों की सभी कामनायें पूरी होती हैं एवं व्यक्ति समस्त पापों से मुक्त होकर ब्रह्मलीनता को प्राप्त होता है। मार्कण्डेय पुराण का श्रवण करने से श्रोता ब्रह्महत्या जैसे महापाप कर्मों से मुक्त होता है सौ करोड़ कल्प के पाप नष्ट हो जाते हैं-

‘श्रुत्वा पुनश्च ते पापं कल्प कोटिशतैःकृतम’
इसका श्रवण करने से पुष्कर में किये गये दान के समान पुण्य प्राप्त होता है। श्रद्धालुओं को मार्कण्डेय पुराण के वाचक को ब्रह्मा के समान मानकर उनका पूजन करना चाहिए अन्यथा उसके सभी पुण्य नष्ट हो जाते हैं पंडित उनको शास्त्रचोर कहते हैं।

नासौ पुण्यमवाप्नोति शास्त्रचोरः स्मृतो हि सः
मार्कण्डेय पुराण को ज्ञान-विज्ञान से संयुक्त पुराण की संज्ञा दी गयी है। इस पुराण को सुनकर व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है एवं व्यक्ति अच्छे विमान में बैठकर स्वर्ग लोक को जाता है स्वयं इस पुराण के अनुसार मार्कण्डेय पुराण सहित अठारह महापुराणों के नाम का जप, त्रिकाल में करने से अश्वमेध यज्ञ के फल के

मार्कण्डेय पुराण का माहात्म्य



समान पुण्य व्यक्ति को प्राप्त होते हैं।

मार्कण्डेय पुराण के माहात्म्य को सुनाते हुए वक्ता पक्षी कहते हैं कि जो नास्तिक हो, वेद-पुराण की निन्दा करनेवाले, मर्यादा भंग करनेवाले ऐसे प्राणी के प्राण कंठगत होने पर भी इस पुराण को न दें। जो प्राणी इस पुराण को भय, मोह या लोभ वश श्रवण या पठन करता है उसको नरक की प्राप्ति होती है। अतः प्राणी को

शुद्ध मन से इस पुराण का श्रवण-पठन करना चाहिए। मार्कण्डेय पुराण के अध्ययन करने वाले प्राणी को दुर्भिक्ष का सामना नहीं करना पड़ता, सभी सुख साधन संपन्न होते हैं तथा अनेक प्रकार के पातकों से छूट जाता है। जो इस कथा को सुनता है, ऋद्धि, वृद्धि, स्मृति, शांति, लक्ष्मी, पुष्टि, तुष्टि उसको नित्य प्राप्ति होती है-

**ऋद्धि, वृद्धि, स्मृति, शांतिः श्रीः
पुष्टिस्तुष्टिरेव च।**

**नित्यं तस्य भवेद्विप यः श्रृणोति
कथाभिमाम्॥**

मार्कण्डेय पुराण धर्म-स्वर्ग एवं अपवर्ग को देने वाला है। मार्कण्डेय पुराण का श्रवण प्राणियों को भक्तिपूर्ण मन से सुनना चाहिए अन्यथा अवज्ञा करने पर प्राणी अनेक जन्म तक मूक एवं सात जन्म तक बहरे रहते हैं।

मूको भवति जन्मानि सप्त मूर्खः प्रजायते।

मार्कण्डेय पुराण को सुनकर पुराण पूजन करना चाहिए। ऐसे प्राणी पाप रहित होकर विष्णुलोक को प्राप्त होते हैं। इस पुराण को सुनने वाला को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। व्यक्ति को पुराण का पाठ करने वाले व्यास को यथाशक्ति दान देना चाहिए जैसे सुवर्ण, वस्त्र एवं सुसज्जित गौ, ग्राम एवं वाहन आदि देना चाहिए।

**-असम विश्वविद्यालय,
शिलचर-788011 (असम)**



गायत्री शर्मा

जैसे-जैसे हमारी जिंदगी में तनाव बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे हम शांति सुकून पाने के उपायों को तलाशने में अपनी शक्ति का प्रयोग करने लगे हैं फिर चाहे वह वास्तु हो, फेंगशुई हो या फिर ध्यान क्रिया ही क्यों न हो। वास्तु की तरह ही फेंगशुई में घर में शांति, सुकून व कलह से मुक्ति के लिए अनेक उपाय बताए गए हैं।

फेंगशुई में विंड चाइम, लॉफिंग बुद्धा, प्लास्टिक के फूल, कछुआ, जहाज, सिक्कों आदि का बहुत अधिक महत्व है। इन्हें अपने घर या कार्यस्थल में किसी निर्धारित दिशा में रखकर जहां आप अपने व्यापार-व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं, वहीं शांति-सुकून भी पा सकते हैं। आइए हम आपको बताते हैं फेंगशुई के कुछ उपयोगी टिप्स:

- भोजन करते वक्त टीवी देखना हमारे स्वास्थ्य की दृष्टि से भी नुकसानदेह होता है इसलिए टीवी को डाइनिंग रूम में नहीं रखना चाहिए।
- वास्तु और फेंगशुई दोनों के अनुसार पुराना कबाड़ व बेकार पड़ी चीजें परिवार में कलह पैदा



फेंगशुई से समृद्धि

करती है इसलिए विशेषकर दंपति अपने पलंग के नीचे से पुराना कबाड़ तत्काल निकालकर बाहर फेंक दें क्योंकि फेंगशुई के अनुसार इससे दंपति के बीच कलह होती है।

- शुभ लाभ प्राप्ति व सौभाग्य के लिए ड्राइंग रूम के प्रवेश द्वार के कोने पर दायें हाथ की ओर छह छड़ वाली विंड चाडम लटकाना फेंगशुई के अनुसार शुभ फलदायक होता है।
- बेडरूम में लव बर्ड्स या बत्तख के जोड़ों के

चित्र रखने से दंपति के संबंध मधुर बनते हैं।

- लॉफिंग बुद्धा की मूर्ति, जो कि फेंगशुई में बहुत शुभ मानी जाती है। उसे अपने ड्राइंग रूम में ठीक सामने की ओर रखें ताकि घर में प्रवेश करते ही आपकी नजर सबसे पहले उस मूर्ति पर पड़े।

- गोलाकार डाइनिंग टेबल फेंगशुई में शुभ मानी जाती है। परन्तु ध्यान रखें कि टेबल के साथ लगी कुर्सियों की संख्या सम होनी चाहिए।



महायोगी पायलट बाबा

हम सब जीव हैं। हम सब अपनी-अपनी यात्रा में हैं। अनंत की यात्रा में। हम खोजी हैं, हम सब खोजते चले आ रहे हैं। वह खोज आज तक समाप्त नहीं हुई है।

मनुष्य ने अपने जीवन में अनेकों प्रयोग किए हैं। उसने मानव मन ही नहीं, मानव की बुद्धि ही नहीं, मानव की इच्छा ही नहीं, मानव का तन ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के अनेकों कोरों पर प्रयोग किया है। अपनी खोज की पूर्ति के लिए परन्तु वह पूर्ति आज तक नहीं हो पाई।

विज्ञान के रूप में जिसने इतना विकास किया कि मानव के जीवन को अत्यंत आरामदायक बना दिया। परन्तु मनुष्य को फिर भी आराम नहीं मिला। ऋषियों-मुनियों ने तरह-तरह की तपस्या करके अपने मन को, बुद्धि को प्रगाढ़ बनाया, लेकिन फिर भी उसकी यात्रा पूरी नहीं हुई। आज हम सब यहां हैं, जीवन की लंबी यात्रा करते चले आए हैं, परन्तु वह यात्रा पूरी दिखाई नहीं पड़ रही है।

हमारी खोज क्या है, किसे तलाश कर रहे हैं हम, घर से निकलकर बाहर किसलिए जाते हैं। हम मंदिर, मस्जिद, शिवालय, गिरिजाघर क्यों जाते हैं। देवी-देवताओं का दर्शन करते हैं, स्तुति

करते हैं, प्रार्थना करते हैं। परन्तु यह खोज आज तक पूरी नहीं हुई है।

हमने देखा, आप सबने देखा, संपूर्ण मानवजाति को देखा, सदियों से खोज रहे उन मानव इतिहासों को पढ़ा, सुना, देखा। वे सब मानव अधूरे हैं। कुछ लोग ही पूरे हुए हैं। विज्ञान ने इतनी खोज की है आपको सुख संपन्नता देने के लिए, वह खोज भी आपकी पूर्ति नहीं कर पाई।

केवल कुछ लोग हैं जिन्हें हम बुद्ध कह सकते हैं, महावीर कह सकते हैं, शंकराचार्य कह सकते हैं, गौतम कह सकते हैं, दत्तात्रेय कह सकते हैं, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य कह सकते

हैं और आज भी कुछ लोग हैं। लेकिन आपकी खोज पूरी क्यों नहीं हुई। आज भी आप अधूरे हैं। क्या आपकी खोज ईश्वर है, क्या आप ईश्वर को पाना चाहते हैं। मैंने देखा कि कोई भी ईश्वर की खोज नहीं कर पा रहा है। वह एक ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है, मानव के रूप में देवता के रूप में, ईश्वर के रूप में। एक ऐसे व्यक्ति की खोज में निकला है, जो उसे सुखी बना दे, जो उसे दुःख से मुक्त कर दे। आज परमात्मा किसी भी रूप में आपके समक्ष खड़ा हो जाए तो आप मोक्ष नहीं मांगेंगे, आप मुक्ति नहीं मांगेंगे, आप अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ वरदान ही मांगेंगे। ●



नारद की उलझन



एक बार देवर्षि नारद के मन में यह जानने की इच्छा हुई कि इस ब्राह्मण्ड में सबसे बड़ा और महान कौन है? नारदजी वैकुण्ठ गए और उन्होंने भगवान विष्णु से अपने मन की जिज्ञासा रखी कि सबसे बड़ा कौन है?

विष्णु ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, नारदजी! सबसे बड़ी तो यह पृथ्वी है, इसलिए हम पृथ्वी को सबसे बड़ा कह सकते हैं। पर समुद्र ने पृथ्वी को घेर रखा है। इसलिए समुद्र उससे भी बड़ा है। विष्णु ने यह कहकर नारदजी को संशय में डाल दिया। नारदजी बोले-चलो मान लेता हूँ कि सबसे बड़ा समुद्र है। विष्णु ने नारद की बात सुनकर फिर कहा-नारदजी महाराज, समुद्र को अगस्त्य मुनि ने पी लिया, इसलिए समुद्र कैसे बड़ा हो सकता है? बड़े तो अगस्त्य मुनि हुए। नारदजी ने कहा-चलो भगवन, आप कहते हैं तो अगस्त्य को सबसे बड़ा मान लेता हूँ। फिर विष्णुजी ने कहा-पर नारदजी यह तो समझो कि वे रहते कहां है। अनन्त आकाश में एक सुई जितनी जगह में वे एक जुगनू की तरह चमक

रहे हैं, इसलिए आकाश उनसे भी बड़ा है। नारदजी इकतारा बजाते हुए बोले-ठीक कहते हैं आप सबसे बड़ा आकाश है। आकाश की नीली छतरी के नीचे पूरी दुनिया समाई है। विष्णु ने फिर कहा-लेकिन वामन अवतार ने इस आकाश को भी एक ही पग में नाप लिया। इसलिए आकाश से तो वामन ही विराट है। नारदजी ने विष्णु के पांव पकड़ते हुए कहा-भगवान, आप ही वामन अवतार थे। अब आपने सोलह कलाएं धारण की हैं इसलिए वामन से विष्णु बड़े हैं। इसलिए मैं आपको प्रणाम करता हूँ। विष्णु ने कहा-मैं विराट स्वरूप धारण करने के बाद भी अपने भक्तों के छोटे से हृदय में विराजित हूँ। इसलिए सर्वोपरि महान और बड़े तो मेरे वे भक्त हैं जो शुद्ध मन से मेरी आराधना करते हैं। तुम भी सच्चे भगवान के भक्त हो इसलिए वास्तव में सबसे महान और बड़े तुम स्वयं हो। विष्णु की इस बात को सुनकर नारद को लगा कि बड़े लोग कभी अपना बड़प्पन नहीं छोड़ते।

-सरोज सेठिया, लाजपत नगर, दिल्ली



ममता भारती

महाफलदायक है व्रत

भारतीय संस्कृति में पर्व और त्योहारों की महत्ता सर्वविदित है। वस्तुतः, व्रत करने के अनेक लाभ हैं। शर्त यही है कि विधि-विधानपूर्वक किया जाये। व्रत करने से आरोग्यता में वृद्धि होती है। मन, बुद्धि और चित्त में शुद्धता आती है। सभी सकारात्मक शक्तियों सहित आत्मबल बढ़ता है। फलस्वरूप जीवन में सुख-शांति और संतोष की वर्षा होने लगती है। चिंता, कुंठा, क्रोध, अशांति और बीमारियां घटने लगती हैं।

स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं आत्मिक शुद्धि के लिए व्रत-उपवास अत्यंत उपयोगी है। यही कारण है कि पूर्वजों ने इसे धर्म, कर्म एवं पूजापाठ से जोड़कर जीवन का अभिन्न अंग बना दिया।

व्रत लेना और रखना दोनों अलग-अलग चीजें हैं। एक संकल्प और प्रतिज्ञा है तो दूसरा अनुष्ठान और साधना। एक हमारे आचरण से संबंधित है तो दूसरा हमारे आहार से। इन सबके बावजूद, इन दोनों में एक बड़ी समानता है यह कि व्रती को हमेशा संयमी, शांत और आस्थायमान रहना चाहिए, तभी व्रत सार्थक होगा है। जो व्यक्ति अपने आराध्य के समक्ष संकल्प लेकर व्रतोपवास करते हैं, ठीक करें उनके मनोरथ पूर्ण होने में कोई संशय नहीं रहता।

इस्लाम-धर्म में रमजान के महीने को बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। ईश्वर के समीप जाने के लिए पहला कदम है- आत्माशोधन करना। आत्मोत्थान तभी संभव हो सकता है जब हम अपने मन और इंद्रियों पर नियंत्रण करना सीख जायें। व्रतोपवास हमें उस दिशा में अग्रसर करता है। सच्चा व्रत और उपवास वही है जब हमारा मन पूरी तरह से अपने इष्टदेव के चरणों में रम जाये कि हमें भूख-प्यास का अहसास न हो।

मोटापा, कब्ज, गैस, दर्द, तनाव, ज्वर, अरुचि, अनिद्रा आदि दूर करने के लिए व्रत-उपवास करना लाभदायक रहता है। इसके अतिरिक्त कायिक, वाचिक, मानसिक तथा संसर्ग जनित सभी रोगों को दूर करने में भी व्रत-उपवास करने से शीघ्र लाभ होता है। ज्वर आदि प्रकोपों में भूख स्वतः बंद हो जाती है। इसका मतलब है कि खान-पान त्यागें। अर्थात् उपवास करें, लेकिन दिल है। जो व्यक्ति का मानता नहीं।

व्रत और उपवास में मात्र इतना अंतर होता है कि व्रत में तो भोजन किया जा सकता है, किन्तु उपवास में निराहार रहना पड़ता है। अभ्यासी व्यक्ति निर्जल भी रह सकते हैं। लेकिन, इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए। ये शरीर तपाने के तरीके हैं। इनसे हमारे पुण्य संचित होते हैं। किसी पुण्य-तिथि या शुभ-दिन में व्रत-उपवास किया जाये तो इसके लाभ और बढ़ जाते हैं, उदाहरण के लिए शास्त्रानुसार एकादशी के व्रत को सर्वोत्तम कहा जाता है।



नवरात्र के दिनों में रखे जाने वाले व्रत विशेष रूप से महाफलदायक होते हैं। इन दिनों प्रकृति स्वयं ही सृष्टि में शक्ति का संचार करती है। इसके अतिरिक्त रामनवमी, महाशिवरात्रि, जन्माष्टमी, गणेशचतुर्थी, करवाचौथ, अहोई अष्टमी, पुत्रदा एकादशी आदि अनेक पर्व-त्योहार ऐसे हैं जब व्रतोपवास अवश्य ही किये जाते हैं तिथि या दिन कोई भी क्यों न हो, व्रत या उपवास रखने की सार्थकता तभी है जब हम उस दिन चटखारे लेने और चटोरेपन से मुक्त रहकर अपने कार्य, कर्तव्य और ईश्वर का ध्यान करें तथा बुराइयों से दूर रहें।

व्रतोपवास के साथ-साथ मन-ही-मन कोई मंत्र, भजन या प्रभु का नाम गुनगुनाते रहें और निष्ठापूर्वक अपने काम में लगे रहें। जिस प्रकार पनघट से घड़े में जल भरकर लाने वाली स्त्री के पांव और नजरें ऊबड़-खाबड़ और पथरीले रास्ते पर होते हैं तथा उसका ध्यान सिर पर रखी हुई गगरी पर लगा रहता है, उसी प्रकार व्रती व्यक्ति को अपने कर्तव्य के प्रति रत रहते हुए अपना ध्यान ईश्वर के श्रीचरणों में लगाये रखना चाहिए ताकि चंचल मन अज्ञानवश इधर-उधर न भटकें। यही सतो गुणी का मार्ग है, रज को घटाने तथा तम को मिटाने का उपाय है।

इस प्रकार, विधिपूर्वक व्रतोपवास करने से ओज, तेज और आभा बढ़ती है। लेकिन, ध्यान रहे कि व्रत में काल एवं आहार की मात्रा तथा शुद्धता का महत्व बहुत अधिक होता है। लगातार काम करने के बाद जिस प्रकार अवकाश आदि की आवश्यकता होती, उसी प्रकार हमारे पाचन-तंत्र को भी नियमित अवकाश की आवश्यकता होती है। उपवास से उदर को आराम मिलता है और उसमें नवशक्ति का संचार होता है। व्रत-उपवास करने से शरीर के आंतरिक अवयवों की धुलाई और सफाई भली प्रकार हो जाती है।

व्रत-उपवास के दौरान यदि सामान्य दिनों की भांति तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन किये

जायें तो वह व्रत नहीं होता है। बार-बार फलाहार के नाम पर खाने का अर्थ यही है कि हमारी जीभ वश में नहीं है। जिस व्रत के दौरान भूख सताती रहे अर्थात् भूखा न रहा जा सके। व्रत तो एक साधना है और साधना करना आसान कार्य नहीं होता है। उसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। व्रत तथा उपवास करने से हमें सफल साधना का मार्ग मिलता है। व्रतोपवास का अर्थ होता है-आहार-त्याग। आयुर्वेदाचार्य ने आहार के कई भेद बताये हैं। चबाने, चूसने, चाटने और निगलने के अतिरिक्त चक्षु आहार, घ्राणाहार तथा मानसिक आहार भी होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि देखकर, सूँघकर तथा सोचकर ग्रहण किया जाता है, आनंद लिया जाता है तथा तृप्त हुआ जाता है। अतः व्रत-उपवास के दिन भोजन की चिंता या चर्चा में लीन रहने के स्थान पर भगवान के भजन में लीन रहना श्रेयस्कर होता है।

जिस दिन व्रतोपवास रखें, उस दिन खूब पानी पीयें। दूध या दही का सेवन करें। इसके बावजूद काम न चले तो दिन में एक बार ताजा फल या उबली हुई सब्जियां खायें। यदि नमक और अन्न ग्रहण न करें तो अति उत्तम, असत्य और अनावश्यक बातों से बचें। दान, पुण्य, परोपकार और परमात्मा का ध्यान करने में रुचि लें।

शास्त्रों के अनुसार व्रत करने से ऋणों से मुक्ति, अपने प्रियजनों से मिलन, सुख, संतान तथा संपन्नता की प्राप्ति होती है तथा पितरों को भी प्रसन्नता मिलती है। जो व्यक्ति निष्काम भाव से व्रतोपवास करते हैं, उन्हें इस लोक में सुख तथा परलोक में मोक्ष की प्राप्ति होती है। जिसने जीवन में ठीक से व्रत और उपवास करना सीख लिया, समझें उसने रोग, राग, द्वेष और अनेक प्रकार के कष्टों से मुक्ति पाने का मार्ग खोज लिया। अतः, व्रत या उपवास जब भी करें तो ठीक प्रकार से, पूरी तरह से सोच-समझ कर, शांत मन और प्रसन्न भाव से करें। ●



मोहन कुमार कश्यप

समृद्धि के देवता कुबेर

पुराणों एवं इतिहास के अनुसार धनाधिपति कुबेर समस्त यक्षों, गृह्यकों और किन्नरों अर्थात् इन तीन देव योनियों के राजाधिराज कहे गये हैं।

धनाध्यक्ष, धनादीप, धनदेश्वर, वित्तपति जैसे अनेक नामों से विभूषित लोकपाल कुबेर की शक्ति से कौन परिचित नहीं हैं? यक्ष जाति के स्वामी और उत्तर दिशा के दिक्पाल कुबेर का पद ईश्वर तुल्य है। मां लक्ष्मी के समान ही कुबेर धन प्रदान करने वाले देव हैं। पुराण, महाभारत इत्यादि ग्रंथों में कुबेर से संबंधित विभिन्न तथ्यों और कथा प्रसंगों का वर्णन प्राप्त होता है।

धन प्राप्ति के लिए जैसे हम मां लक्ष्मी का पूजन करते हैं, उसी प्रकार कुबेर का पूजन भी किया जाना चाहिए। आमजन लक्ष्मीजी को ही धन की देवी मानकर उनकी पूजा-अर्चना करते हैं, लेकिन उन्हें कुबेर के बारे में अधिक जानकारी नहीं होती है। अगर दीपावली को धन की देवी लक्ष्मीजी के पूजन के साथ-साथ धन के देवता कुबेर का भी पूजन-अर्चना किया जाये तो आर्थिक समस्यायें शीघ्रताशीघ्र दूर होकर आर्थिक समृद्धि प्राप्त होने लगती है।

पुराणों एवं इतिहास के अनुसार धनाधिपति कुबेर समस्त यक्षों, गृह्यकों और किन्नरों अर्थात् इन तीन देव योनियों के राजाधिराज कहे गये हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार ये नौ निधियों (पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्चसु) के स्वामी हैं। कोई भी एक निधि सभी सुखों को देने वाली कही गयी है जबकि राजाधिराज कुबेर तो गुप्त, प्रकट संसार के समस्त वैभवों के अधिष्ठाता देवता हैं। जैसे देवताओं के राजा इन्द्र हैं, गुरु बृहस्पति हैं, उसी प्रकार कुबेर निखिल ब्रह्माण्डों के धनाधिपति होते हुए भी प्रधान रूप से प्रसिद्ध हैं। महाभारत में कहा गया है कि महाराज कुबेर के साथ भार्गव-शुक्र तथा धनिष्ठा नक्षत्र भी दिखाई पड़ते हैं। इन तीनों की पूर्ण कृपा हुए बिना अनंत वैभव या गुप्त निधि की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए वैभव आदि की प्राप्ति के लिए इन तीनों की संयुक्त उपासना का विधान आवश्यक बताया गया है।

विश्रवा मुनि की पत्नी और भरद्वाज मुनि की कन्या इडविडा (इलविला) के गर्भ से उत्पन्न हुए। विश्रवा के पुत्र होने से ये वैश्रवण कुबेर के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा इडविडा के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण ऐडविड भी कहलाये।

उत्तम कुल में उत्पन्न होने तथा जन्मान्तरीय शिवाराधना के अभ्यास योग के कारण बाल्यकाल से ही दिव्य तेज से संपन्न, सदाचारी एवं देवताओं के भक्त थे। उन्होंने दीर्घकाल तक ब्रह्माजी की तपस्या द्वारा आराधना की। इससे प्रसन्न होकर ब्रह्माजी देवताओं के साथ प्रकट हो गये और उन्होंने उसे लोकपाद पद, अक्षय निधियों का स्वामी, सूर्य के समान तेजस्वी पुष्पक विमान तथा देवपद प्रदान किया।

वर देकर ब्रह्मा आदि देवगत चले गये। तब कुबेर ने अपने पिता विश्रवा से हाथ जोड़कर कहा कि भगवान! ब्रह्माजी ने सब कुछ तो मुझे प्रदान कर दिया, किन्तु मेरे निवास का कोई स्थान निश्चित नहीं किया, अतः आप ही मेरे योग्य कोई ऐसा सुखद स्थान बतलाइए, जहां रहने से किसी भी प्राणी को कोई कष्ट न हो। इस पर उनके पिता विश्रवा ने दक्षिण समुद्र तट पर त्रिकूट नामक पर्वत पर स्थित विश्वकर्मा द्वारा निर्मित, देवराज इन्द्र की अमरावती के समान अद्वितीय लंका नगरी कुबेर को प्रदान की और कहा कि वह नगरी स्वर्ण द्वारा निर्मित है और वहां कोई कष्ट, बाधा नहीं है। पिता की आज्ञा से कुबेर लंकाध्यक्ष होकर अत्यंत प्रसन्नता के साथ वहां निवास करने लगे।

कुबेर शंकरजी के परम भक्त थे। बाद में इन्होंने भगवान शंकर की विशेष रूप से आराधना की तथा उनकी कृपा से उन्होंने उत्तर दिशा का आधिपत्य, अलका नाम की दिव्यपुरी, नन्दनवन के समान दिव्य उद्यानयुक्त चैत्रथ वन तथा एक दिव्य सभा प्राप्त की। साथ ही वे माता पार्वती के कृपापात्र और भगवान शंकर के घनिष्ठ मित्र भी बन गये।

भगवान शंकर ने कहा हे सौम्य धनेश्वर! अब तुम मेरे साथ मित्रता का संबंध स्थापित करो, यह संबंध तुम्हें रुचिकर लगना चाहिए। तुमने अपने तक से मुझे जीत लिया है, अतः मित्र बनकर यहां अलकापुरी में रहो।

महाराज कुबेर की उपासना से संबंधित

मंत्र, यंत्र, ध्यान एवं उपासना आदि की समस्त प्रक्रियाएं श्रीविद्यार्णव, मंत्रमहार्णव, मंत्रमहोदधि, श्रीतत्त्वनिधि तथा विष्णुधर्मोत्तरादि पुराणों में निर्दिष्ट हैं। तदनुसार इनके अष्टाक्षर, षोडशाक्षर तथा पंचत्रिंशदक्षर आत्मक छोटे-बड़े अनेक मंत्र प्राप्त होते हैं। मंत्रों के अलग-अलग ध्यान भी निर्दिष्ट हैं। इनके एक मुख्य ध्यान श्लोक में इन्हें मनुष्यों के द्वारा पालकी पर अर्थात् श्रेष्ठ पुष्पक विमान पर विराजित दिखाया गया है। इनका वर्ण गारुडमणि या गरुडरत्न के समान दीप्तिमान पीतवर्ण युक्त बताया गया है। समस्त निधियां इनके साथ मूर्तिमान होकर इनके पार्श्व भाग में स्थित हैं। ये किरीट-मुकुटादि आभूषणों से विभूषित हैं। इनके एक हाथ में श्रेष्ठ गदा तथा दूसरे हाथ में धन प्रदान करने की वरमुद्रा सुशोभित है। यह उन्नत उदरयुक्त स्थूल शरीर वाले हैं। ऐसे भगवान शिव के परम सुहृद् भगवान कुबेर का ध्यान करना चाहिए-

**मनुजवाह्यविमानवरस्थितं गरुररत्ननिभं
निधिनायकम्।**

**शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधत्
भज तुन्दिलम्॥**

मंत्र महार्णव तथा मंत्र महोदधि आदि में निर्दिष्ट महाराज कुबेर के कुछ मंत्र ये हैं-

अष्टाक्षरमंत्र-ॐ वैश्रवणाय स्वाहा।

**षोडशाक्षरमंत्र-ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं
क्लीं वित्तेश्वराय नमः।**

**पंचत्रिंशदक्षरमंत्र- ॐ यक्षाय कुबेराय
वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं
मे देहि दापय स्वाहा।**

प्रायः सभी यज्ञ-यज्ञादि, पूजा-उत्सवों तथा दस दिक्पालों के पूजन में उत्तर दिशा के अधिपति के रूप में कुबेर का पूजन होता है। धन त्रयोदशी तथा दीपावली के दिन कुबेर की विधिपूर्वक पूजा होती है। यज्ञ-यज्ञादि तथा विशेष पूजा आदि के अंत में षोडशोपचार पूजन के अनन्तर दीपदान और पुष्पांजलि का विधान होता है। पुष्पांजलि में तथा राजा के अभिषेक में ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, इस मंत्र का विशेष पाठ होता है, जो महाराज कुबेर को ही प्रार्थना का मंत्र है। महाराज कुबेर राजाओं के भी अधिपति हैं, धनों के स्वामी हैं, अतः कभी कामन-फल की वर्षा करने में महाराज कुबेर ही समर्थ हैं।

व्रतकल्पद्रुम आदि व्रत ग्रंथों में कुबेर के उपासकों के लिए फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी से वर्षभर प्रतिमास शुक्ला त्रयोदशी को कुबेर व्रत करने के अनेक विधान निर्दिष्ट हैं। इससे उपासक धनाढ्य तथा सुख-समृद्धि से संपन्न हो जाता है और परिवार में आरोग्य प्राप्त होता है।

**-389, जोशी भवन
मनिहारों का रास्ता,
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-3**





डॉ. संपत सेठी

अनादिकाल से स्वर्ग की चर्चा सुनने में आ रही है। स्वर्ग या जन्त क्या है, कैसे अनुभव किया जाए, इसकी उत्सुकता सदैव बनी रहती है। शास्त्रों में ऐसा प्रमाण है, 'भूखण्ड के पूर्व एवं उत्तर में रास्ता हो, वास्तुशास्त्र अनुकूल भूखण्ड की रचना की जाए, तो स्वर्ग को भूखंड में लाया जा सकता है। स्वर्ग में सभी निवास करना चाहते हैं। अच्छे घर में रहना हो, तो अच्छा घर बनाना पड़ेगा, अच्छे बगीचे में भ्रमण करना हो, तो अच्छी बगवानी करके बगीचे को सुंदर बनाना होगा। उसी प्रकार अगर स्वर्ग में रहना हो, दिशाओं से ऊर्जा प्राप्त कर शास्त्र अनुकूल भवन का निर्माण करना होगा। भूखंड के उत्तर दिशा में या पूर्व दिशा में जलाशय होना चाहिए। अगर नहीं है, तो स्वीमिंग पुल का निर्माण किया जा सकता है। बोरिंग आ अंडरग्राउंड वाटर टैंक का निर्माण किया जा सकता है। दक्षिण और पश्चिम में पहाड़ों का निर्माण किया जा सकता है। बड़े, घने ऊंचे पेड़ों को लगाया जा सकता है। ईशान में राम तुलसी और श्याम तुलसी को लगाकर सम्मानित किया जा सकता है। दिशा बदलने से दशा बदलती है। जहां चाह होती है, वहां राह मिलती है। मन में जीतने का जब्बा हो तो कभी भी हार आपके सम्मुख नहीं आएगी। मन में सोचने से सभी समाधान संभव है।

स्वर्ग का तात्पर्य क्या है हर आदमी के मुंह से दिवंगत को स्वर्गीय कहा जाता है। यह सम्मानसूचक शब्द है। सम्मानसूचक शब्द को सही में सम्मानित करता हो तो अपने अंदर अनुभूतियां करनी पड़ेंगी। परिवार से अलग हो जाना, अपने आपको श्रेष्ठ बताना, परिवारजन का विरोध करना, जरा-जरा सी बातों पर कमियां निकाल कर शर्मिंदगी कराना आदि कारणों से आप स्वर्ग के नजदीक नहीं आ सकते।

दूसरों को बदलने के लिए आपको बार-बार कहो मत, इससे दूरी बढ़ती है। वे आपके आचरण को देखकर स्वयं ही महसूस करने लगेंगे। हो सकता है कि वे अपने आपको बदलें या नहीं भी बदलें। यह पूरा आपके हाथ में नहीं है। इस बात

जीवन को स्वर्ग बनाएं



स्वर्ग बनाने को तैयार नहीं हो तो स्वर्ग की इच्छा मत करो। मांगने मात्र से स्वर्ग नहीं मिलता, स्वर्ग को चाहने की गहरी चाहत और लगन होनी चाहिए।

की ज्यादा फिक्र करोगे या बहस में जाओगे तो फिर स्थिति खराब होगी। इस बात को भूलकर स्वयं को बदलते रहने पर ही पूरा ध्यान लगा दो तो बहुत अच्छा होता जाएगा। मनुष्य की सबसे बड़ी अनुभूति एवं कसौटी है आप अपने परिवार के वातावरण में स्वर्ग का माहौल सृजन करें। शास्त्रों में ऐसा प्रमाण है दिशाओं का सहयोग, शास्त्रों का आदेश, आदरणीय एवं सम्माननीय की सलाह एवं सात्विक भोजन एवं आचरण सुसंगत स्वर्ग का माहौल बनाने में सहायक है।

स्वर्ग बनाने को तैयार नहीं हो तो स्वर्ग की इच्छा मत करो। मांगने मात्र से स्वर्ग नहीं मिलता, स्वर्ग को चाहने की गहरी चाहत और लगन होनी चाहिए। सच्ची लगन हो तो काम अभी से चालू कर देना चाहिए। पल भर की देरी भी क्यों? कल क्या होगा क्या भरोसा, कल-कल करते जीवन निकल जाता है। हम मात्र सोचते रह जाते हैं? स्वर्ग मात्र एक अनुभूति है। जब आप समूचे अस्तित्व से प्रेम करने लग जाते हो, दुःख और सुख की अवस्था में सामान्य रहते हो, क्रोध, लालच, अहंकार, वासना, घृणा आदि विकारों में अछूते रहते हो, डर का साया आपके अस्तित्व

पर नहीं होता, हर पल आनंद अवस्था में रहते हो बस यही स्वर्ग है। जग में पुरुषार्थ करने वालों के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं। पुरुषार्थ और अच्छे सोच और सच्चे सोच से आप अपना नया स्वर्ग बना सकते हो। स्वर्ग में रहने की चाहत हो, बड़ी तैयारी के साथ पुरुषार्थ में जुड़ जाना पड़ेगा। तभी कहीं जाकर स्वर्ग की अनुभूति हो पाएगी। यह एक बहुत साहसिक कार्य है। यह बात सभी पर लागू होती है। यह बात साकार तभी होगी, जब इन सब बातों पर भरोसा करके हम पुरुषार्थ में लग जायेंगे, हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु बदल जाएगा। जितनी ज्यादा हमें स्वर्ग की अभिलाषा होगी, उतनी ही स्वर्ग के नजदीक पहुंच पायेंगे। आप असलियत से घबराएं नहीं, अपने सामान्य चित्त से सकारात्मक पक्ष को देने का प्रयास करें। आपके सुकर्मों की छाया आस-पास का माहौल खूबसूरत और सुंदर बना देगी और स्वर्ग का वातावरण बन जाएगा। यह कहानी या कल्पना नहीं है यह यथार्थ सच्चाई है। स्वर्ग आपके साथ में है, आपके हाथ में है, आपके पास में है।

—विवेक विहार, हावड़ा (प. बं.)

रंगों का चयन बताता है हमारा व्यक्तित्व

रंग हमारे व्यक्तित्व की पहचान होती है। रंगों से व्यक्ति के स्वभाव, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान का अंदाजा लगाया जा सकता है।

दरअसल हर व्यक्ति अपने घर को अपने मनपसंद रंगों से सजाना चाहता है, जिन रंगों के प्रति हम ज्यादा आकर्षित होते हैं फिर जिन रंगों को हम ज्यादा पसंद करते हैं, वह हमारे स्वभाव को दर्शाने के साथ-साथ हमारे व्यक्तित्व को

बतलाता है।

लाल रंग से सजी दीवारों वाले कमरे में समय धीमे-धीमे गुजरता-सा प्रतीत होता है जबकि नीले रंग से रोशन दीवारों वाले कमरे में वक्त बहुत तेजी से कटता है। आफिसों की भीतरी दीवारों नीले रंग से सजी होती हैं।

चटख लाल और पीला रंग ब्लडप्रेसर को बढ़ाता है, जबकि नीला रंग ब्लडप्रेसर को घटाता

है। हल्के और गाढ़े रंग के प्रयोग से कमरे का आकार बड़ा जैसा दिखता है।

अगर दीवारों पर ऑरेंज कलर का प्रयोग किया गया है तो यह आपकी भूख को बढ़ाता है, जबकि बैंगनी रंग भूख को कम करता है। वार्मर कलर नजदीकी का अहसास कराते हैं जबकि कूल कलर दूरी का अहसास देते हैं।

—डॉ. आलम अली, मुंबई



प्रेम रावत 'महाराजजी'

यदि हम मनुष्य हैं, तो दूसरा कौन है ?

हम कौन हैं? हमें मनुष्य का ही शरीर क्यों मिला है? भगवान क्या है? हम इस संसार में क्यों आए हैं? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जो भाषा देश, रंग और अंग का भेदभाव नहीं करते। सारी दुनिया के लोग इन सवालों से जूझते हैं। उनका जवाब मेरे पास है, पर पहले एक कहानी सुनो।

एक खरगोश जंगल में जा रहा था। चौकन्नी आंखों से इधर-उधर देखता हुआ, नाक ऊपर उठा कर सूंघता हुआ कि कहीं कोई खतरा तो नहीं है। लेकिन अचानक सामने एक शेर आ गया। शेर को भूख लगी थी। खरगोश ने सोचा कि अब तो गए! अगर बचना है तो जल्दी कोई उपाय सोचो। तो उसने शेर की तरफ देखा और पूछा, क्या चाहिए-तुमको? शेर को झटका लगा कि इतना छोटा खरगोश उससे पूछ रहा है कि क्या चाहिए तुमको?

शेर ने दहाड़ते हुए कहा, मुझे भूख लगी है, तुमको खाऊंगा। तो खरगोश बोला, तुम मुझे नहीं खा सकते। मुझे इस जंगल के देवता ने भेजा है। मैं कोई ऐसा-वैसा खरगोश नहीं हूँ। मुझे तो यहां राज करने के लिए भेजा गया है। मैं तेरा राजा हूँ, तु मुझे कैसे खाएगा?

सुनकर शेर को धक्का लगा, यह पिढ़ी सा जानवर कह रहा है कि उसका राजा है। लेकिन क्या पता, कहीं जंगल के देवता ने सचमुच ही इसे राजा बना दिया हो। तो शेर ने थोड़ी देर सोच कर कहा, पहले साबित करना पड़ेगा कि तू यहां का राजा है।

खरगोश ने कहा, कोई चिंता की बात नहीं। तुम मेरे पीछे-पीछे आओ और मैं तुम्हारे आगे-आगे चलता हूँ। खुद देख लेना कि जंगल

के सारे जानवर मेरी कितनी इज्जत करते हैं, मुझेसे कितने डरते हैं। शेर तैयार हो गया।

आगे-आगे खरगोश चला, और उसके पीछे-पीछे इतना बड़ा शेर। जंगल के जानवर पहले खरगोश को देखते, पर जैसे ही उनकी नजर शेर पर पड़ती, डरकर भाग जाते। कुछ यह देखकर सहम गये कि छोटे से खरगोश के पीछे इतना बड़ा शेर इस कदर सहम कर क्यों चल रहा है। जरूर खरगोश में कोई विशेष ताकत है। पर शेर को लगा कि सभी जानवर सिर्फ इस खरगोश के ही डर से भाग रहे हैं। तो शेर ने कहा, क्षमा करना, मुझे मालूम नहीं था। तो उस दिन खरगोश की जान बच गई।

शेर अपने आपको नहीं जानता था कि वह कौन है? उसकी ताकत कितनी है? खरगोश ने जो भी उसको सिखा दिया, उसी को सच मान लिया। कभी यह सोचा ही नहीं कि ये जानवर खरगोश को देखकर नहीं, मुझे देख कर डर रहे हैं।

कहानी का सार यह है कि तुम्हारे आगे भी अज्ञानता रूपी खरगोश भाग रहा है, और तुम समझ रहे हो कि तुम्हारे आस-पास तुम्हारे जीवन में जो कुछ घटित हो रहा है, वह उसी के प्रताप से हो रहा है। खरगोश है धन कमाने की इच्छा, नाम पाने की इच्छा। उसके हिसाब से हम जीवन के सुख-दुख का हिसाब करने लगे। अपनी ताकत का इम्तिहान देने के लिए हम उस खरगोश के पीछे-पीछे चलने लगे। उसके हिसाब से घटनाओं की व्याख्या करने लगे। हम भूल गये कि इस जीवन का उद्देश्य क्या है? कहा है:

नर तन भव वारिध कहुं बेरो।

सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो॥

यानी मनुष्य का यह शरीर (नर तन) इस



भव सागर को पार करने का बेड़ा (नौका) है और इस सांस का, इस हवा का आना-जाना भी मेरी कृपा है—ये कह रहे हैं भगवान। ज्ञान होने से यह बात समझ में आ जाती है कि यह जो शरीर मेरे पास है, इसमें जो सांस चल रही है, इसकी जो सामर्थ्य है—वह प्रभु की ही कृपा है। ज्ञान न हो मनुष्य उसे अपनी ताकत समझ बैठता है।

ज्ञान हमारा ध्यान बाहर से अंदर की तरफ कर देता है, ताकि हम समझ सकें कि हम कौन हैं? यदि हम मनुष्य हैं, तो दूसरा कौन है? यदि वह भी मनुष्य है, तो हमारे और उसके बीच भेद कैसा? ●



महर्षि गौतम ने एक दिन अपने पुत्र चिरकारी को उपदेश देते हुए बताया, मन में किसी की सेवा सहायता का विचार आए, तो उसे तुरंत पूरा कर लेना चाहिए, अन्यथा विलंब करने पर मन बदल सकता है। ठीक इसी तरह, अगर प्रतिशोध या हिंसा का विचार आए, तो

जीवन में सुख-समृद्धि का मंत्र

सोच-विचार के लिए उन्हें कम-से-कम बारह घंटे तक रोके रखना चाहिए। ऐसा करने से जीवन में सुख-समृद्धि और शांति आती है।

महर्षि गौतम एक बार अपनी पत्नी से किसी बात पर बहुत नाराज हो उठे। उन्होंने चिरकारी को तलवार देते हुए आदेश दिया, अपनी दुष्टा माता की हत्या कर दो और आदेश देकर वह वन की ओर चले गए। चिरकारी को अपने पिता के वाक्य याद आ गए कि हिंसा के किसी मामले में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। उन्होंने तलवार एक ओर रख दी और भगवान का भजन करने लगे। महर्षि गौतम का क्रोध शांत

हुआ, तो उन्हें आभास हुआ कि उन्होंने पत्नी की हत्या का आदेश देकर गलती की है। वह भागे-भागे आश्रम में पहुंचे। चिरकारी से पूछा, क्या माता की हत्या कर दी है? चिरकारी ने उत्तर दिया, आपने ही तो कहा कि बुरे काम करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। इसलिए हत्या नहीं की, अब किए देता हूँ।

महर्षि ने तलवार लेकर नदी में फेंक दी। उनमें संतोष था कि वर्षों पहले दिए गए उनके उपदेश ने चिरकारी को मातृ-हत्या के पाप से बचा लिया।

—विपिन जैन, लुधियाना



आचार्य अशोक सहजानंद

सुख-समृद्धि के लिए पद्मावती साधना

महालक्ष्मी का ही दूसरा नाम पद्मावती है। वैष्णव सम्प्रदाय में श्री सूक्त और लक्ष्मी सूक्त अत्यंत प्रसिद्ध सूक्त है। इनमें श्री विष्णु पत्नी लक्ष्मी के विविध रूपों तथा नामों का रहस्यपूर्ण वर्णन है। पद्मावती के अनेक नामों का उल्लेख लक्ष्मी सहस्रनाम में है जो भगवती पद्मावती के नाम रूपों की अनंतता का परिचायक है।

जिस प्रकार शिव और शक्ति की पूजा उपासना का तंत्रागमों में स्पष्ट उल्लेख है उसी प्रकार धरणेन्द्र और पद्मावती की युगल उपासना जैन धर्म में प्रचलित है, किन्तु इसमें एक विशेषता यह है कि इन दोनों, यक्ष धरणेन्द्र और यक्षिणी पद्मावती की उपासना 23वें तीर्थंकर श्री पार्वनाथ के अधिष्ठायक के रूप में की जाती है। श्री पार्वनाथ के यक्ष-यक्षिणी स्वरूप सहित बीजमंत्र युक्त मंत्रों के अनेक रूप जैन तंत्र ग्रंथों में उल्लिखित हैं। पद्मावती देवी को शासन रक्षिका और नागराज धरणेन्द्र की पत्नी के रूप में सर्वपूज्य बतलाया गया है। महाप्रभावी पद्मावती स्तोत्र इस दिशा में हमारा सर्वश्रेष्ठ मार्ग दर्शन करता है।

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्वनाथ का जन्म ईसा पूर्व 877 में वाराणसी में राजा अग्रसेन के यहां हुआ। तीस वर्ष की आयु में उन्होंने भ्रमण दीक्षा ली और 100 वर्ष की आयु में बिहार प्रांत के सम्मैद शिखर पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया।

एक बार पार्वकुमार अपने राजमहल में बैठे झरोखे से नगर की चहल-पहल देख रहे थे। उन्होंने देखा नगर के बाहर पंचाग्नि तप में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कमठ नाम का एक तपस्वी धूनी जलाकर तप कर रहा था। जनता दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी थी। राजकुमार भी हाथी पर बैठकर वहां पहुंचे। उन्होंने अपने विशिष्ट अवधि



ज्ञान से देखा कि जलने वाली एक लकड़ी में बैठा नाग-नागिन का जोड़ा भी स्वाहा हो जाएगा। उन्होंने अपने महावत से जलती लकड़ी बाहर निकलवा कर नाग-नागिन को बचाया। पार्वकुमार ने उन्हें महामंत्र णमोकार सुनाया, जिसके प्रभाव से मरने के बाद उन्होंने पति-पत्नी के रूप में धरणेन्द्र पद्मावती नामक देव-देवी का जन्म लिया।

तपस्वी कमठ भी मरकर मेघमाली नामक देव हुआ। एक बार पार्वनाथ जंगल में ध्यानास्थ थे। उस समय मेघमाली देव उधर आ निकला। उसे पूर्व जन्म का प्रसंग याद आया। उसने ऐसी मूसलाधार वर्षा की जिससे पार्वनाथ के गले तक पानी पहुंच गया। तब पद्मावती और धरणेन्द्र के आसन हिल उठे। दोनों तुरंत वहां

पहुंचे। पद्मावती ने भगवान पार्वनाथ को अपने सिर पर उठा लिया और धरणेन्द्र ने सर्प का रूप धारण कर अपने फण के छत्र से प्रभु के सिर को ढक लिया। इस पर मेघमाली देव ने लज्जित होकर अपने अपराध की क्षमा मांगी और चला गया। तब से धरणेन्द्र और पद्मावती प्रभु की सेवा में तत्पर रहने लगे और प्रभु के यक्ष-यक्षिणी के रूप में प्रसिद्ध हुए। इस रूप में वे भगवान पार्वनाथ के उपासकों की मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं और उनके दुखों, कष्टों व उपसर्गों का निवारण करते हैं। आवू के दिलवाड़ा मंदिर में पद्मावती की चमत्कारी प्रतिमा है। हुम्बच तो पद्मावती देवी का एक महाचमत्कारी पीठ है। हुम्बच शिमोगा (कर्नाटक) से 57 किलोमीटर दूर शिमोगा तीर्थाली सड़क पर स्थित है। दिल्ली के लाल किले के सामने लाल मंदिर में भी पद्मावती की प्राचीन चमत्कारिक प्रतिमा है।

भगवती पद्मावती महालक्ष्मी का दिव्यतम स्वरूप हैं जिनकी आराधना से निश्चित रूप से अटूट संपदा प्राप्त होती है। भगवती पद्मावती अपने आराधकों को ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। उनकी उपासना से व्यापार में वृद्धि होती है और घर में सुख-शांति तथा सभी प्रकार से लाभ की स्थिति बनती है।

भगवती पद्मावती के सिद्ध मंत्रः

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्वकार्यकरिणी मम विकट संकट संहारिणी मम महा मनोरथ पूरणी मम सर्व चिन्ता चूरणी ॐ पद्मावती नमः स्वाहा।

ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मीदायिनी वांछा भूत-प्रेत निग्रहणी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा, ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः।

-बी-5/263, यमुना विहार
दिल्ली-110053

सिकन्दर महान् जब फारस के राजा दारा को जीतकर नगर में प्रवेश कर रहा था तो हजारों-हजारों लोग दोनों ओर पंक्तिबद्ध स्वागत में खड़े थे। वे सब एकटक सिकन्दर की ओर देख रहे थे कि उसकी एक दृष्टि पड़ जाए और हम निहार हो जाएं। सिकन्दर ने देखा यह दृश्य और बहुत प्रसन्न हुआ यह देखकर कि लोगों में मेरे प्रति कितनी भक्ति है, कितनी श्रद्धा है और कितना आकर्षण है कि एकटक मुझे निहार रहे हैं। लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए वह आगे बढ़ा। थोड़ी दूर गया और देखा कि सामने से फकीरों की एक टोली आ रही है। सिकन्दर उधर से गुजरा तो देखा कि उन फकीरों ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया, अभिवादन तो दूर। सिकन्दर को बड़ा क्रोध आया

शुद्ध शुद्धी परिवार | जून 2013

दासी का दास

कि ये कितने बेहूदे हैं। तत्काल आदेश दिया कि इन्हें बंदी बनाकर लाओ। सिपाही गए और उन्हें पकड़कर लाये सिकन्दर के सामने। फिर भी वे निर्विकार खड़े हैं न अभिवादन, न नमस्कार, कुछ नहीं। सिकन्दर ने कुपित दृष्टि से देखा और कहा-‘तुम नहीं जानते कि विश्व-विजेता सिकन्दर तुम्हारे सामने से जा रहा है, फिर तुम सम्मान नहीं करते, अभिवादन नहीं करते।’ बड़े आवेश में सिकन्दर ने कहा, ‘तुम्हें पता नहीं चला?’ उन्होंने कहा, ‘हमें क्या जरूरत है पता रखने की?’ ‘तुम्हें पता नहीं कि मैं कौन

हूँ?’ ‘हमें क्या पता तुम कौन हो! आदमी हो तुम, इतना ही पता है।’ ‘मैं महान सिकन्दर हूँ-सिकन्दर महान्। तुम्हें करना चाहिए था हमें सम्मान के साथ अभिवादन।’ वे बोले, ‘क्यों करें हम अभिवादन? हमें तुमसे क्या लेना-देना?’ ‘मैं विश्व-विजयी हूँ।’ ‘क्यों करते हो विश्व-विजय? इसीलिए न कि तुम्हारे मन में एक प्यास है, तृष्णा है और हमने उस तृष्णा को मिटा दिया। जो तृष्णा तुम्हारे सिर पर सवार है, वह तृष्णा हमारे पैरों की दासी है और तुम हमारी उस दासी के दास हो, फिर हम क्यों नमस्कार करें तुम्हें?’

बात सिकन्दर के मन में इतनी चुभ गयी कि सारा गर्व चूर हो गया। उसने तत्काल उन्हें मुक्त कर दिया।

-कामिनी भदौरिया, गाजियाबाद



श्री श्री रविशंकर

धन के प्रकार

पहले स्थान पर साधारणतय: जिसे हम धन का नाम देते हैं, वह है भौतिक धन। कुछ लोग अमीर घरानों में जन्म लेते हैं, कुछ कम अमीर घरों में। किसी राजा-महाराजा के घर में पैदा होने से किसी को अपार धन की प्राप्ति हो जाती है और किसी को सारी उम्र धन पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। ऐसा क्यों होता है? कुछ लोगों को विरासत में इतना धन मिल जाता है और दूसरों को नहीं। जिनको नहीं मिलता, वे लोग अक्सर अपने माता-पिता को इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। वे पिछली पीढ़ी से इसीलिए नाराज हो जाते हैं कि उन्होंने उनके लिए कुछ भी नहीं छोड़ा। भौतिक वस्तुएं, धन दौलत और सुख-सुविधा इस प्रकार के धन को हम पहली प्रकार का धन कहेंगे।

दूसरी प्रकार का धन है स्वास्थ्य धन। कुछ लोगों के पास धन की कमी होती है, परन्तु उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा होता है। उनके पास इतना धन होता है कि वे खा-पी सकते हैं और घर आए मेहमान को भी खिला सकते हैं। जैसे भारत के गांव के किसान-वे अच्छा खाते हैं और अच्छा सोते हैं। किन्हीं के पास धन-दौलत तो बहुत होता है, परन्तु स्वास्थ्य



खराब होने के कारण वे अच्छा खा-पी नहीं सकते या उनके पास खाने का समय ही नहीं होता या डायबिटीज, हृदयरोग या दूसरी बीमारियों के कारण उन्हें स्वादिष्ट खाना भी नसीब नहीं होता या फिर अच्छा, बड़ा सुंदर घर, बंगला हो, बहुत बढ़िया आरामदायक महंगा बिस्तर, पलंग हो, किन्तु नींद न आने की बीमारी भी साथ हो तो फिर ऐसे धन का क्या उपयोग?

तीसरे प्रकार का धन है जीवन में सफलता का होना, हर कार्य में विजयी होना। कुछ लोग चाहे बहुत धनवान परिवार में पैदा हुए हों, किन्तु वह कोई भी कार्य करें, उन्हें सफलता नहीं मिलती, चाहे वह कितना ही आसान काम हो। मान लो, किसी ऐसे व्यक्ति को यदि कार से कही भेजें, तो कार खराब हो जाएगी या ड्राइवर

नहीं आया या दुकानें बंद हो जायेंगी या वह वस्तु नहीं मिलेगी या कोई और कारण बन जाएगा, लेकिन जो काम करना था, वह नहीं हो जाएगा, चाहे वह कितना ही मामूली काम था। ऐसे लोग हमेशा किसी कार्य को आरंभ करने से पहले ही यह नहीं हो जाएगा सोचना शुरू कर देते हैं और बैठे-बैठे सोचते ही रहते हैं तथा इस प्रकार की सोच के कारण उनमें शुरू में ही नकारात्मक शिथिलता आ जाती है। वह जीवन को ऐसे ही गंवा देते हैं।

साहस रूपी धन चौथे प्रकार का धन है। साहस की कमी इस धन की कमी है। यदि धन-दौलत तो बहुत हो, परन्तु साहस न हो, जीवन में कुछ भी कर सकने का साहस तो फिर समझो, जीवन बेकार गया। ऐसे जीवन में कोई आनंद नहीं।

जीवन को एक खेल की भांति लो। आगे बढ़ो और पूरे उत्साह और साहस से भरकर जीवन को अंगीकार करो। किसी भी खेल के पहले ही यदि तुम सोचना शुरू कर दो, मैं जीत पाऊंगा कि नहीं, तो तुम उससे बचना चाहोगे। पहले से ही संदेह और नकार की भाषा में मत सोचो। गलतियां करने से मत झिझको, नहीं तो जीवन में साहस रूपी धन को समझ न पाओगे। कुछ लोगों के पास धन तो नहीं होता, परन्तु साहस और उत्साह बहुत होता है। उनके पास साहस के धन की शक्ति होती है और उनका जीवन बहुत भरा-पूरा होता है। ●

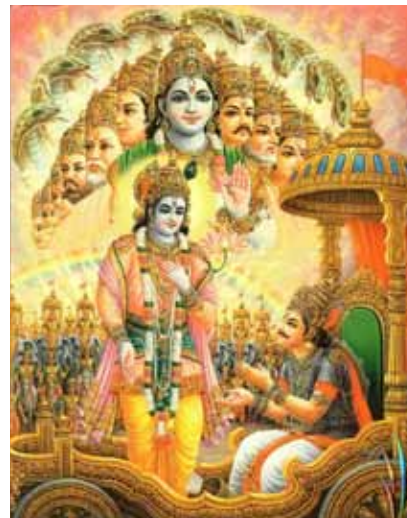


विनोद किला

भगवान श्रीकृष्ण का सहयोग प्राप्त होते रहने के कारण अर्जुन को अहंकार हो गया कि वास्तव में श्रीकृष्ण का भक्त वही है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के इस अहंकार को जान लिया और वे उसके साथ टहलने के लिए गये। रास्ते में उन्हें एक ब्राह्मण दिखाई दिया, जिसकी कमर में तलवार लटकी थी और वह हाथ से सूखी घास तोड़-तोड़कर खा रहा था। उसका यह कृत्य देख अर्जुन को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उसने ब्राह्मण से प्रश्न किया—“आप तो अहिंसक दिखाई देते हैं, शायद जीव हिंसा के डर से सूखी घास खा रहे हैं। मगर मेरी समझ में यह नहीं आया कि आप यह तलवार क्यों धारण किये हुए हैं?”

ब्राह्मण बोला—“यह तलवार मैंने चार व्यक्तियों को दण्ड देने के लिए रखी है। अर्जुन ने साश्चर्य पूछा—“वे चार व्यक्ति कौन हैं।”

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—“एक तो दुष्ट नारद, जो मेरे प्रभु का कोई ख्याल न कर उन्हें सदैव



भजन-कीर्तन से जगाये रखता है। दूसरी है धृष्ट द्रौपदी, जिसने मेरे प्रभु को जब पुकारा था, जब

सच्चा भक्त कौन ?

वे भोजन का ग्रास ले रहे थे, दुर्वासा ऋषि के श्राप से उसकी मुक्ति कराने हेतु उन्हें भोजन छोड़कर जाना पड़ा, यही नहीं, उसने प्रभु को जूटा भोजन भी खिलाया। तीसरा है हृदयहीन प्रह्लाद, जिसने मेरे प्रभु को गरम तेल की कड़ाही में प्रविष्ट कराया, हाथी के पैरों तले कुचलवाया और खंभे में से प्रकट होने के लिए विवश किया।”

“और चौथा कौन है?”—अर्जुन ने कुतूहलवश पूछा।

“चौथा है बदमाश अर्जुन” उस ब्राह्मण ने आगे कहा—“उसकी धृष्टता तो देखो कि स्वयं प्रभु को उसने अपने सेवक के रूप में सारथी बनाया।”

प्रभु के प्रति ब्राह्मण की भक्ति और प्रेम देखकर अर्जुन का सारा अहंकार दूर हो गया। वह कृष्ण से बोला—“मैं अभी तक स्वयं को ही परम भक्त समझता था, किन्तु अब मालूम हुआ कि यही ब्राह्मण आपका सच्चा भक्त है।”

—वसंत कुंज, दिल्ली



जगजीत सिंह

कहते हैं कि बाबा नानक ने एक बार मरदाना से सवाल किया कि तुम्हें कितने दम (कितनी सांस) का भरोसा है। जवाब में मरदाना ने सौ दम का भरोसा होने की बात कही। यही सवाल नानकजी ने अपने दूसरे साथी बाला से पूछा तो उसने कहा कि सचे पातशाह, मुझे तो दस दम का ही भरोसा है।

अब सवाल करने की बारी मरदाना की थी। उसने पूछा कि बाबा! भला आपको कितने दम का भरोसा है। बाबा नानक मुस्कराए और बोले, मुझे तो सिर्फ एक दम (सांस) का भरोसा है, केवल वही दम जो मैं इस समय ले रहा हूँ। जो दम चला गया वह दोबारा लौट कर नहीं आ सकता, इसलिए वह मेरा नहीं हो सकता। अगला दम आएगा भी कि नहीं, इस बात का कोई भरोसा नहीं।

**‘हम आदमी हां इक दमी,
मुहलति मुहतु न जाणा!’**

हम मनुष्यों की तो बस एक ही सांस है। लेकिन यह जो मोहलत हमें मिली है, जो समय हमें मिला है, हम उसका महत्व नहीं समझ पाते। उसका मूल्य नहीं जान पाते। बात बेशक एक दम की है, लेकिन जिंदगी की बहुत बड़ा फलसफा छिपा पड़ा है बाबा नानक के जवाब में।

इंसान की पूरी जिंदगी ही दम, दम की बुनियाद पर खड़ी है। यह शरीर जिसे कबीर माटी का पुतला कहते हैं, दम के सहारे कायम है। वह दम जो अदृश्य है, लेकिन दृश्य और स्थूलकाय शरीर को जिलाए रखता है। दम चलता है तो शरीर भी चलता है। दम निकला तो सुंदर शरीर भी निर्जीव, निष्प्राण और ढेर हो



जाता है। लाख की देह खाक की हो जाती है। माटी माटी में मिल जाती है।

जीवन में सारे संबंध ही दम के हैं। दम निकला तो रिशतों की डोर भी टूट जाती है। बिना दम की देह को कौन अपने घर रखता है? जीवन-मरण की संगिनी कही जाने वाली अर्द्धांगिनी भी ‘प्रेत-प्रेत’ कहकर उससे दूर भागती है। जैसा कि गुरु तेगबहादुरजी फरमाते हैं-

‘घर की नार बहुत हित जा सियों, सदा रहत संग लागी। जब ही हंस तजी इह काइआ, प्रेत प्रेत कर भागी।’

सो, जाहिर है, महत्व पुतले का नहीं, पुतले

के अंदर चल रहे दम का है। शरीर के पांच तत्वों में दम यानी पवन ही प्रधान है। बाकी चार तत्व तो उसके सहायक हैं। इसीलिए गुरुवाणी में पवन को गुरु का आध्यात्मिक दर्जा दिया गया- ‘पवन गुरु पाणी पिता माता धरत महत...।’ अचेत पड़ा व्यक्ति जिंदा है या मृत इसका फैसला भी उसके दम यानी सांस को देखकर ही किया जाता है। सांस है तो जीवन है, सांस नहीं तो जीवन नहीं। लेकिन बहते पानी की तरह व्यर्थ जाते दमों को संभालने, उनका सदुपयोग करने की ओर ध्यान कम ही जाता है। इसीलिए आध्यात्मिक पुरुष कहते हैं कि हर दम के साथ उस परमात्मा का ध्यान और कोई नेक काम करो ताकि लिया गया प्रत्येक दम सफल और उसकी दरगाह में कबूल हो- दम दम सदा संभाल दा, दम न बिरथा जाए।

लेकिन अक्सर दम व्यर्थ की बातों में खर्च हो जाते हैं। ये बेनतीजा बहस मुबाहिसे, ये अर्थहीन चर्चाएं, यह परनिंदा, यह आत्मश्लाघा, अलभ्य या अप्राप्य को पाने की होड़ और दौड़-हर क्रिया कीमती दम ले रही है। सो, दम व्यर्थ चले जाते हैं।

शेख सादी तो यहां तक कहते हैं कि बुद्धिमान के लिए एक सांस सारे जहान से अच्छा है। उनका कथन है- ‘जब कल गुजर चुका है तो आने वाला दिन भी तेरे पास नहीं रहेगा, तू इसी एक सांस का हिसाब कर ले, जो बाकी है। शरीर में जो सांस है, वही कदर करने लायक है, इन्हें अच्छा समझ। जो समय मिला है, उसकी संभाल कर, क्योंकि संसार एक सांस ही है। उसके लिए यह संभव न हो सका कि वह संसार के बदले एक सांस और जीता रहता। जब समय ने चाल चली तो एक पल की मोहलत भी नहीं मिलती। ●

अदम्य जिजीविषा और अथक परिश्रम



सुरेश पंडित

नवें दशक तक पहुंचने पर जब मुड़कर देखता हूँ तो हैरानी होती है कि इतनी दूर चला कैसे आया? जिसका बचपन सूखा और संग्रहणी-सरीखे रोगों से जूझते बीता हो जो तीन बार हादसों का शिकार हो मौत के बिल्कुल नजदीक पहुंचकर लौट आया हो, वह आज यह कहे कि दांतों के अलावा उसका सब कुछ ठीक-ठाक है तो मेरी तरह आप सब का भी हैरान होना स्वाभाविक है। इसका श्रेय मैं अपनी

उस अदम्य जिजीविषा को देना चाहता हूँ जो मुझे हर संकट को एक चुनौती के रूप में स्वीकारने के लिए तत्पर करती रही है। कठोर परिश्रम, निरन्तर व्यस्तता और नियमित दिनचर्या ने मुझे प्रायः अपने इच्छित लक्ष्यों को पाने में सहायता की है। पिछले तीस सालों से सुबह चार बजे बिस्तर छोड़ देता हूँ। शौच और व्यायाम के बाद एक घंटा घूमना मेरे लिए अनिवार्य है। भ्रमण के तुरंत बाद स्नान, सर्दियों में दो महीने गर्म, बाकी दिनों में ठंठे पानी से। नहाने के बाद घर का पानी भरता हूँ। एक गिलास दूध की चाय बनाकर पीता हूँ और फिर अखबार की सुर्खियों पर नजर डाल, लेखन कार्य में दस बजे तक लगा रहता हूँ।

इसके बाद नाश्ता अक्सर फलों का या कार्नफ्लेक्स मिले दूध का। भयानक सर्दी हो या

गर्मी ठीक 11 बजे दो कि.मी. पैदल चलकर बाजार पहुंचता हूँ। बैंक, पोस्ट ऑफिस के अथवा अन्य काम निबटाते हुए साग-सब्जी लेकर वापस रिक्शे से घर लौटता हूँ। आकर खीरा, ककड़ी, मूली, गाजर, शलजम, टमाटर आदि जो भी मौसम में मिले 250 ग्राम सलाद के बतौर लेता हूँ और एक-डेढ़ घंटे बाद सादा खाना खाकर एक घंटे आराम करता हूँ फिर उठकर पढ़ना, लोगों से मिलना, एक घंटे टी.वी. देखना और ठीक दस बजे सो जाना, बस यही दैनिक कार्यक्रम रहता है। आमतौर पर शाकाहारी हूँ। दो बार से अधिक चाय नहीं पीता। पेप्सी, कोक पसंद नहीं। छाछ पी सकता हूँ। खीर और हलवा आज भी चाव से खा लेता हूँ।

-383, लाजपत नगर, स्कीम नं. 2
अलवर- 301001 (राजस्थान)

आभूषणों से स्वास्थ्य रक्षा भी



उमेश पांडे

अनादिकाल में स्त्री-पुरुष के द्वारा शृंगार करने हेतु विभिन्न आभूषणों का उपयोग किया जाता रहा है। पुरुषों की तुलना में स्त्रियां अधिक आभूषण पहनती हैं। प्राचीन ग्रंथों में आये अनेक वर्णन इस बात की पुष्टि करते हैं कि शृंगार के लिए आभूषणों का प्रयोग एक पुरानी परम्परा है। दरअसल विभिन्न धातु मणि-माणिक्यों से निर्मित आभूषणों को महज शृंगार के लिए ही धारण नहीं किया जाता है बल्कि यह एक शाश्वत सत्य है और आयुर्वेद की दृष्टि में यह एक प्रामाणिक तथ्य भी कि आभूषण सौन्दर्य वृद्धि के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी देनेवाले होते हैं। मणि-माणिक्यों अर्थात् रत्नों के शरीर पर होने वाले प्रभाव सर्वविदित हैं।

आभूषण धारण करने से धारक को एक विशेष प्रकार की मानसिक प्रसन्नता मिलती है। मानसिक रूप से प्रसन्न व्यक्ति मस्तिष्क पीड़ा, रक्त, हृदय-रोगादि से मुक्त रहता है। उसकी स्मरण-शक्ति बढ़ती है।



ये आभूषण हमारे शरीर में पहुँचाते रहते हैं। इस शक्ति का हमारे स्वास्थ्य पर अदृश्य अनुकूल प्रभाव पड़ता है। आयुर्वेद मानता है कि स्वर्ण अर्थात् सोना तेज, उष्णता और उत्साह उत्पन्न करनेवाला होता है जबकि रजत अर्थात् चांदी शांति और शीतलता का संचार करने में सक्षम है। इन्हीं धातुओं के आभूषण धारण करने पर उनसे संबंधित बातों के समुचित प्रभाव आसानी से अनुभव किये जा सकते हैं। नाक की नथनी या कांटा और कान के कर्णफूल आकाशीय शक्ति का आकर्षण कर चेहरे पर कांति और लावण्य का निरूपण करने में सक्षम है। हार हृदय पर आकाशीय शक्ति की किरणों का संचार करता है और इस तरह उसे मजबूत तथा अधिक क्रियाशील बनाता है। हार के धारण करने में शरीर में उत्साह, काम और स्फूर्ति का अत्यधिक संचार होता है।

चांदी के बने आभूषण शीतलता के प्रदायक होने के कारण काम शक्ति घटाते हैं। विधवाओं को रजत की चूड़ियां पहनने की आज्ञा इसलिए हमारे धर्म-शास्त्रों में दी गई है। इसके विपरीत हाथों में सोने के कंगन या चूड़ियां कामवृद्धि करते हैं। रजत, स्वर्ण अथवा अष्टधातु बनी अंगूठी धारण करने से हृदय रोगों पर नियंत्रण होता है। इस्लाम तंत्र में वर्णित है कि चांदी की अंगूठी को सात बार 'सूर-ए-यासीन' पढ़कर आग में तपाकर तथा जल में बुझाकर दाहिने हाथ की सबसे छोटी अंगुली में पहनने वाले का अर्श रोग नियंत्रित हो जाता है। दरअसल रजत शीतलता का कारक है। 'सूर-ए-यासीन' का तो अपना महत्व है ही।

हाथ की मध्यमा में तांबे अथवा लोहे की अंगूठी पथरी रोग का नियंत्रण करती है। लोहे और तांबे की विद्युत चालकता में स्वर्ण, रजत आदि की चालकता को देखते हुए अन्तर है, इसलिए उनके फलों में भी अन्तर है। धातु का कमर में, कंदौरा, करधनी तथा पैरों में पायल, घुंघरू आदि के धारण करने से उनके द्वारा शोषित विद्युत गर्भांशय पर अनुकूल प्रभाव डालती है। उपयुक्त धातु से निर्मित ये आभूषण गर्भांशय ही नहीं वरन् स्त्री के गर्भस्थ शिशु पर भी अनुकूल प्रभाव डालते हैं। लोहे में उन्माद से बचाने की अद्भूत शक्ति होती है। इसीलिए कई कोमल मानसिकता और कमजोर मानसिकता वाले भूत-प्रेतादि भय से मुक्ति के लिए लोहे की अंगूठी अथवा कड़ा धारण किये रहते हैं। लोहा, चुम्बक का जन्मदाता है और चुम्बकीय उपचार आज के वैज्ञानिकों से छुपा नहीं है।



ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के कुप्रभाव को नष्ट करने हेतु अथवा कम करने हेतु या व्याधि विशेष में पर्याप्त आराम हो इसलिए अलग-अलग रत्नों को धारण करने का विधान है। आज विज्ञान भी रत्नों में छिपी गुप्त शक्ति की मान्यता देता है। जहां तक रत्नों को आभूषणों में धारण करने का प्रश्न है, निश्चय ही प्रयोगकर्ता इनसे काफी लाभान्वित होता है किन्तु बिना रत्न के अर्थात् केवल धातुओं से निर्मित आभूषण भी शरीर के लिए कम लाभदायक नहीं होते हैं। वैज्ञानिक रूप से इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि धातुओं से निर्मित आभूषण हमारे शरीर के लिए अत्यंत गुणकारी हैं।

आभूषण धारण करने से धारक को एक विशेष प्रकार की मानसिक प्रसन्नता मिलती है। इसका सीधा संबंध स्वास्थ्य से है। मानसिक रूप से प्रसन्न व्यक्ति मस्तिष्क पीड़ा, रक्त, हृदय-रोगादि से मुक्त रहता है। उसकी स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि आकाश में वायु के साथ-साथ एक प्रकार की विद्युत शक्ति (या विद्युत आवेश) सदैव विद्यमान रहती है। धातुओं में विद्युत आवेश को आकर्षित करने का विशेष गुण रहता है। धातुएं विद्युत की सुचालक भी होती हैं। इस प्रकार वायुमंडल की विद्युत शक्ति को शनैः शनैः धातुओं से निर्मित

-319, म.ग.मार्ग, मल्हारगंज
इंदौर-2 (म.प्र.)



आचार्य शिवेन्द्र नागर

मान लीजिए कि कोई लड़का आठवीं में पढ़ता है उसके मां-बाप को शक है कि इस बार वह फेल हो जाएगा। तो जैसे ही मां-बाप को ऐसा महसूस होता है कि इस बार वह फेल हो जाएगा, तो तुरंत उसका टीवी देखना, रेडियो सुनना, कहीं आना-जाना बंद। पढ़ाई शुरू, ट्यूशन शुरू। सारा का सारा घर उसके पीछे लग जाता है कि तू पढ़ ले, पढ़ ले। नहीं पढ़ा तो फेल हो जाएगा। फेल हो गया तो तेरा एक साल बर्बाद हो जाएगा। तेरा एक साल जो बर्बाद होगा तो तेरी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण साल खराब हो जाएगा। और आपके सारे के सारे मित्र, दोस्त, सगे, संबंधी, आपके इस विचार से सहमत होते हैं और बच्चे को एक स्वर में कहने लगते हैं पढ़-पढ़।

उस बच्चे पर पढ़ाई के लिए क्यों इतना जोर देते हो आप? नहीं पढ़ेगा तो उसका होगा क्या? एक साल ही तो बर्बाद होगा। लेकिन नहीं। हम सब लोग पूरी कोशिश करते हैं कि किसी तरह से उसका एक साल बर्बाद न हो। लेकिन ताज्जुब है कि हमें जन्म बर्बाद होने का कोई भय नहीं रहता, एक साल बर्बाद होने का बहुत भय होता है। यह ध्यान रखिए कि फेल होकर तो वह बच्चा अपनी कक्षा में अकेला ही सही, दोबारा वापस आ जाएगा। लेकिन संसार में फेल होकर तो दोबारा नहीं आएगा। हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि हम दोबारा जन्म लेंगे। और हम सब सोचते हैं कि जब दोबारा जन्म लेंगे, तो कोई

अनंत संसार में चाहिए मुरारी की कृपा



चिंता नहीं, क्योंकि सारी दुनिया फेल (जीवन में) होकर ही वापिस आ रही है।

इसलिए मोक्ष की कामना करने वाले प्रार्थना करते हैं, पुनः पुनः जन्म लेना, पुनः पुनः मरना, और पुनः पुनः माता के गर्भ में सोना- इस गहरे और अनंत संसार से मुरारी की कृपा मेरी रक्षा करे। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जिस आदमी के जीवन में ज्ञान आ जाता है, वह दोबारा इस संसार में जन्म नहीं लेता। वह संसार में दोबारा नहीं आता। आप देखेंगे कि आम जिंदगी में भी यदि थोड़ा-सा ज्ञान हो जाए तो उस समस्या में हम दोबारा नहीं फंसते। संसार में भी आप देखियेगा। जब हम कोई नई चीज शुरू करते हैं, तो थोड़ा कष्ट होता है। लेकिन

जब उस चीज का ज्ञान हो जाए, तो फिर हम स्थिर हो जाते हैं। इसी तरह से जब हमें अध्यात्म का ज्ञान हो जाए तो फिर संसार में दोबारा नहीं आना पड़ता।

1947 से पहले भारत ने आजादी की लड़ाई लड़ी। क्रांतिकारियों के अथक प्रयास से आज हम आजादी की हवा में जी रहे हैं। हमें बाहरी स्वतंत्रता तो मिल गई है, परन्तु क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं? क्या हम आजाद हैं, अपनी कामनाओं से, अपनी इच्छाओं से, अपने मोह से? सच तो यह है कि आज भी हम गुलाम हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के पहले की पृष्ठभूमि में अगर नजर डालें, तो आप देखेंगे कि शुरूआत में यह नहीं था कि हर भारत की आजादी का झंडा उठाए तथा मातृभूमि के लिए सब कुछ त्यागने के लिए निकल पड़ा हो। इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो पायेंगे कि शुरूआत में जिन लोगों ने आजादी की चिंगारी जलाई, वे अधिकतर विदेशों में अध्ययन कर या रह कर आये थे। वहां जब स्वतंत्रता का अनुभव किया तथा वापस आकर विरोधाभास देखा तो लगा कि हम स्वतंत्र नहीं हैं। उसके बाद उन्होंने पूरे देश में आजादी के संघर्ष का बिगुल बजाया।

अब हमने बाहरी स्वतंत्रता का सुख चख लिया है। अब हम किसी भी हाल में गुलामी की जंजीरों में नहीं बंधना चाहेंगे। इसी तरह संत जन उस अखंड आनंद का सुख जान चुके होते हैं। इसलिए वे वापस संसारी नहीं बनना चाहते। पर हम भी उस असली आजादी का स्वाद चखें, इसके लिए थोड़ा प्रयास करना होगा।

सोचिएगा इस बात पर। ●



विनोद कुमार बंसल

सर्वप्रथम मनुष्य को यह समझ लेना होगा कि 'समृद्ध' होना व 'धनिक' होना ये दोनों बातें बिल्कुल अलग-अलग हैं। यदि हम जरा विचार करें तो पहले तो धन को पैदा करने में कष्ट, फिर पैदा किये हुए धन की रखवाली में दुख, उसके नष्ट होने में दुख, खर्च होने में दुख, चोरी का भय, धन अधिक होने पर तृष्ण II व मोह, कम होने पर हृदय में जलन और अंत में धन के त्याग में भी दुख ही हाथ लगता है तो फिर धनिक होने पर ही समृद्ध हो, सुखी हो, ऐसा तो बिल्कुल नहीं लगता। शास्त्रों में व संतों की वाणी में जहां निम्न नौ गुण विद्यमान होंगे वहां सुख, शांति व समृद्धि अपने आप

अवतरित होगी-

श्रमशीलता- समय और श्रम को किसी भी उपयुक्त प्रयोजन में निरन्तर लगाये रहना।

साहस- अपने कर्म का दृढ़ता पूर्वक पालन करना, सभी दुष्प्रवृत्तियों के साथ साहस के साथ संघर्षरत रहना और आत्मोद्धार के लिए सतत संघर्षरत रहना।

सावधानी- सावधान रहते हुए प्रयासरत रहना कि अपने अन्दर अनाचार का प्रवेश ना होने पाए।

समझदारी- परिणामों पर गंभीरता पूर्वक विचार करके कार्य करना।

सुव्यवस्था- प्रत्येक वस्तु को सुव्यवस्थित रखना। समय का निर्धारण करते हुए सुव्यवस्थित दिनचर्या आदि का अनुशासन पूर्वक पालन करना।

समृद्धि के नौ सूत्र

ईमानदारी- आर्थिक और व्यवहारिक क्षेत्र में सत्यता का व्यवहार, छल से बचाव, अनैतिक आचरण से दृढ़ता पूर्वक बचना।

शिष्टता- शालीनता, सज्जनता, सदाचार का सर्वथा पालन करना। अपनी नम्रता एवं दूसरों की प्रतिष्ठा का सदा ख्याल रखना।

उदार सहकारिता- मिल-जुलकर कार्य करना, पारस्परिक आदान-प्रदान, स्वार्थ का त्याग कर परहित की भावना से कार्य करना।

मितव्ययिता- सादा जीवन, उच्च विचार व साधनों को सीमित रखना।

उपर्युक्त नौ 'क्रिया प्रधान' और 'भाव प्रधान' गुणों को व्यवहार में लाने से निश्चित रूप से जीवन में सुख व समृद्धि का समावेश होता है।

-129, सिविल लाईन (उत्तरी)

मुजफ्फरनगर-251001 (उ.प्र.)

मानव मूल्यों की रक्षा का संकल्प



डॉ. वंदना कुण्डलिया

आकाश, पाताल, वायु बिजली, चांद, तारे, सागर, भूमि, पर्वत आदि प्रकृति के सभी क्षेत्र मनुष्य के दास बनकर उसकी सेवा में तत्पर हैं। विज्ञान के कारण मनुष्य छलांग मारकर मंगल ग्रह पर पहुंच गया है, ऊंचे से ऊंचा पर्वत लांघ चुका है, गहरे से गहरा समुद्र माप चुका है। अंधकार की सत्ता लुप्तप्रायः सी हो गयी है एवं समय व दूरी का व्यवधान समाप्त हो गया है। विज्ञान के कारण ही आज लोक कथाओं का 'चंदा मामा' आज मात्र एक बेजान उपग्रह बनकर रह गया है।

आज मानव और प्रकृति के बीच रिश्ते नापाक हुए हैं, मानव-मानव में घृणा और द्वेष पनपा है। जहां एक ओर विज्ञान ने विश्व को उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचा दिया है वहीं दूसरी ओर उसको विनाश के कगार पर भी लाकर खड़ा कर दिया है। जहां जीवन में समरसता का संचार हुआ है वहां कटुता का स्तर भी बढ़ा है। आज विज्ञान ने विश्व शांति पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। इसने मानव को एक से एक अधिक घातक अस्त्र प्रदान किए हैं, जिनका प्रयोग करके वह अपने निर्बल हमशकलों को कुचल रहा है, उनको आतंकित कर रहा है। आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता एवं साम्राज्य विस्तार की नीति के कारण आज एक राष्ट्र दूसरे को हड़पना चाहता है। युद्ध की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। परमाणु अस्त्रों के प्रसार ने विश्व शांति में खतरा उत्पन्न कर दिया है इससे आतंकित होकर प्रत्येक राष्ट्र अपनी रक्षा के लिए अस्त्र निर्माण में संलग्न है। उद्‌जन बम का आविष्कार तो एक नयी चिंता लेकर आया है।

यह सच है कि इस धरती पर अवतरित होने वाले जीवधारियों में मानव ही सबसे बुद्धिमान प्राणी है। अपनी बुद्धि का प्रयोग करके मानव ने प्रकृति के रहस्यों को जानना चाहा और प्रकृति के साथ उसने ही पहले अमानवीय हरकत की। मनुष्य ने अपनी हैवानियत के निशान हिरोशिमा और नागासाकी पर छोड़ रखे हैं। आज भी वहां की धरती की संतति जन्म से लूली-लंगड़ी, अंधी और बहरी पैदा होती है। इससे अधिक सभ्यता का अपमान और क्या हो सकता है? विज्ञान ने हमें परमाणु शक्ति दी पर साथ ही हमारे विवेक का भी नाश कर दिया और हमने अपना मानव धर्म ही भूला दिया। मानवता छोड़ दानवता पर उतर आए और हैवानियत की आग में मानवता को जलाकर रख दिया। जापान के हृदय विदारक बम काण्ड को देखते हुए आइन्सटीन ने कहा था- "मानव परमाणु शक्ति के योग्य नहीं है।"



वस्तुतः ये हरकतें अमानवी हैं, सभ्यता के नाम पर कलंक है, विज्ञान के अभिशाप हैं।

विज्ञान ने आर्थिक असमानता एवं बेरोजगारी के द्वारा भी विश्व में अशांति को जन्म दिया है। विज्ञान और तकनीकी विकास से औद्योगिक मशीनीकरण हुआ है जिससे जन-साधारण का पैसा पूंजीपतियों के पास चला गया है। इस प्रकार धन के केन्द्रीयकरण ने समाज के एक वर्ग को अमीर एवं एक को गरीब बना दिया है। विज्ञान द्वारा प्रदत्त विलासिता के उपकरणों ने मानव को अधिकाधिक भोग विलास में लिप्त रहने हेतु प्रेरित किया है जिससे मानव हृदय पत्थर हो गया है, आत्मा मर गयी है। विज्ञानजन्य भौतिकता का प्रसार विश्व अशांति का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है। तथाकथित विज्ञान के विकास ने तो मानव समाज को ही परिवर्तित कर दिया है। पुरानी समाज व्यवस्था और आज की समाज व्यवस्था में जमीन-आसमान का अंतर है। बाहरी दृष्टि से तो समाज निरंतर प्रगतिशील प्रतीत हो रहा है किन्तु जिन गुणों के विकास करने में तथा सभ्यता और संस्कृति बनाने में सदियों का समय लगा, वे इस युग में बड़ी शीघ्रता से समाप्त होते जा रहे हैं। मनुष्य की मनुष्यता खोती जा रही है।

वैज्ञानिक प्रगति जो मानव की सर्वोत्तम उपलब्धियों में से एक है, आज बहुत हद तक सत्ता के लिए उन्नत दौड़ एवं वाणिज्यीकरण के साथ मिल गयी है जो स्वभावतः आत्मघाती है। यह आधुनिक युग की एक गंभीर दुर्घटना है, जिसने हम सभी के लिए एक विश्वव्यापी समस्या पैदा कर दी है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस समस्या के स्वरूप को स्पष्टता से समझा जाए और समाधान की दिशा में कदम उठाए जाएं। विश्व शांति हेतु विज्ञान के सदुपयोग की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब इसका प्रयोग विकासात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में किया जाए, जिससे मानव समाज का

कल्याण हो। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि विश्व अशांति के लिए विज्ञान दोषी नहीं है, वरन् विज्ञान का दुरुपयोग दोषी है। जैसे वही अग्नि जो खाना पकाकर भूख से बिलबिलाते हुए व्यक्ति की क्षुधा-निवृत्ति करके उसे सुख प्रदान करती है, उसका सर्वस्व भस्म करके उसे शोक-सागर में निमग्न कर देती है। इसमें अग्नि का क्या दोष? दोष तो उसके दुरुपयोग का है। अर्थात् गुण और दोष तो वस्तु के प्रयोग पर निर्भर है। यदि विज्ञान का प्रयोग मानव हित में किया जाए तो विज्ञान कल्याणकारी है और यदि इसे संहारक अस्त्रों के निर्माण में प्रयुक्त किया जाए तो यह विश्व शांति के लिए खतरा है।

यह कहा जा सकता है कि विज्ञान के दुरुपयोग के परिणामस्वरूप विश्व-अशांति की समस्या का उद्भव हुआ। विश्व शांति की स्थापना हेतु यह नितांत आवश्यक है कि हिंसा, प्रतिद्वन्द्विता, प्रतिशोध, वैमनस्य आदि की कुभावनाओं का परित्याग किया जाए, जिससे मनुष्य अपने कृकृत्यों द्वारा अशांति न फैलाए। अतः यह ध्यान रहे कि विज्ञान का लक्ष्य सृजन है, विनाश नहीं। प्रकृति जैविक आवश्यकताओं के निर्वाह का उपादान है, भोग्या नहीं। इसलिए महान वैज्ञानिकों का विश्वास रहा है कि नैतिकता का पुट संधान में आवश्यक है, उसी से मूल्यों की रक्षा होती है। वस्तुतः 'विज्ञान' के मूल में मानव कल्याण निहित होना चाहिए। मानव मूल्यों की रक्षा का संकल्प होना चाहिए, तभी विज्ञान की सार्थकता होगी। अन्यथा मानव अपनी गरिमा खो देगा और अपने ही आविष्कारों, अनुसंधानों से अपना दुःखद अंत देखने को भी न बच सकेगा।

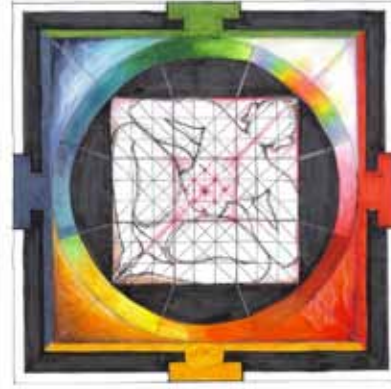
—सहायक आचार्य,
अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनू-341306 (राजस्थान)

सुरवी जीवन के वास्तु टिप्स

- घर के मुख्यद्वार के पीछे स्वस्तिक लगायें। गणेशजी का ध्यान कर नित्य धूप दिखायें।
- घर में तुलसी का पौधा अवश्य लगायें। नियमित रूप से सुबह-शाम वहां दीपक जलायें।
- रसोईघर और अतिथिकक्ष परस्पर जुड़े हुए नहीं होने चाहिए। यदि ऐसा होगा तो पति-पत्नी में आपसी सूझबूझ का अभाव रहेगा।
- दक्षिणामुखी मकान है, तो गृहस्वामी शुद्ध चांदी का कड़ा अपने दायें हाथ में पहने। यह अवश्य ध्यान रहे कि कड़ा बिना जोड़ का हो।
- बाथरूम मकान के नैर्ऋत्य (पश्चिम-दक्षिण) कोण में एवं दिशा के मध्य अथवा नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में होना उत्तम है।
- शौचालय में सीट इस प्रकार हो कि उस पर बैठते समय आपका मुख दक्षिण या उत्तर की ओर होना चाहिए।
- भूमि खोदते समय यदि मिट्टी का रंग पीला हो या स्थान विशेष के अनुकूल न हो तो 12 फीट का गड्ढा खोदकर उसमें वांछित रंग की मिट्टी भरें।
- यदि कर्जा बढ़ रहा हो तो ईशान कोण की ओर भूमि का ढलान करें। यदि पहले से ही ढलान हो तो नैर्ऋत्य कोण को थोड़ा और ऊंचा कर दें, कर्ज उतर जायेगा।
- यदि आपका भवन दक्षिणामुखी हो तो इसे दोषकारक माना जाता है, अतः आप मकान के मुख्यद्वार पर चांदी की पट्टी लगा दें, आपको लाभ होगा।
- यदि आपका ईशान कोण दूषित है तो परिवार में अनेक समस्याएं आती रहती हैं। आप एक मटका बरसात के पानी से भरकर उसे मिट्टी के बर्तन से ढककर ईशान कोण में दबा दें, लाभ होगा।
- किसी कन्या का विवाह न हो रहा हो तो वायव्य कोण की दिशा वाले कमरे में सुलायें व



पं. महेश नंद शर्मा



- अलग कमरा न हो तो कमरे में वायव्य दिशा में उसका पलंग लगायें।
- यदि आपके घर में मेहमान काफी दिनों से टिके हुए हों तो उनका शयन वायव्य दिशा में कर दें।
- नववधू हमेशा सोते समय ताम्बे के बर्तन में शुद्ध जल भरकर ईशान कोण में रखे तो सास-बहू को अधिक प्यार करने लगेगी।
- अपने पलंग में या बेडरूम में कांच न लगवायें। यदि लगा हो तो सोते समय उस पर कपड़ा ढककर रखें।
- पलंग दीवार से सटाकर न रखें बल्कि इस प्रकार से रखें कि दोनों ओर से उतर सकें।
- पलंग पर सोते समय सिर दक्षिण दिशा में

- रखें, प्रवेश द्वार के सामने पैर न करके सोयें।
 - पलंग के ऊपर बीच में पंखा नहीं होना चाहिए। यदि पलंग के बीचोंबीच पंखा हो तो थोड़ा-सा सरककर सोयें।
 - पलंग के नीचे कबाड़ न रखें।
 - घर का मुख्यद्वार इस प्रकार निर्मित करायें कि उस पर किसी की छाया न पड़े। यदि घर के मुख्यद्वार पर पेड़ों की घनी छाया हो तो घर के बच्चों की दृष्टि कमजोर होती है।
 - ईशान कोण में स्थान खुला होना चाहिए। ढका होने से निवासियों की प्रगति नहीं होती।
 - शयनकक्ष का द्वार एक पल्ले का ही लगवायें। इससे पति-पत्नी के विचारों में एकरूपता रहेगी।
 - पूर्व की सिराहना वृद्धजनों के लिए उपयुक्त होता है, जो आध्यात्मिक चिंतन में रुचि जाग्रत करता है।
 - रसोई मुख्यद्वार के ठीक सामने नहीं होनी चाहिए।
 - घर एक से अधिक मंजिल का हो तो गृहस्वामी का कक्ष ऊपर की मंजिल में होना चाहिए। इससे पुत्र नियंत्रण में रहते हैं। घर में उसका दबदबा रहता है।
 - शयनकक्ष में पूजाघर नहीं होना चाहिए। यदि पूजा घर के लिए घर में कोई अन्य स्थान न हो तो ईशान कोण की तरफ बनाना चाहिए। रात को सोते समय पूजाघर के बाहर पर्दा अवश्य लगायें।
 - रसोईघर में पूजास्थल कभी नहीं बनाना चाहिए। रसोईघर में पूजास्थल बनाने से सभी प्रकार के अर्थात् भक्ष्य व अभक्ष्य पदार्थों की गंध भगवान को आयेगी।
 - शयनकक्ष में प्रेरक व स्मरणीय चित्र लगाने चाहिए। हिंसक पशुओं व युद्ध के चित्र लगाने से मानसिक परेशानी व तनाव में वृद्धि होगी।
- चैम्बर ऑफ एस्ट्रोलाॅजी एण्ड आयुर्वेद, हनुमान गेट, लाडनू (राजस्थान)

मंत्र संगीत से होती है आत्मिक शुद्धि

जिस प्रकार संगीत में सात सुर होते हैं और उनकी शुद्धि से अनोखा रस आनंद मिलता है उसी प्रकार हमारे शरीर में सात चक्र होते हैं और इनकी शुद्धि के बिना आध्यात्मिक उत्थान योग ऊर्जा अनुभव हो नहीं सकता। इन सात चक्रों में अनेक रहस्य छिपे हुए हैं। जैसे-जैसे साधक मंत्र संगीत द्वारा चक्रों की शुद्धि करता जाता है, वैसे-वैसे समस्त रहस्य खुलते जाते हैं और अनेक प्रकार की अद्भुत अनुभूतियां व ज्ञान की प्राप्ति होती जाती है। इन चक्रों में हमारे पूर्व जन्मों के और इस जन्म के कर्म संस्कार विकार रूप में इकट्ठे होते रहते हैं। पहला चक्र है मूलाधार, इसमें विकार अधिक बढ़ जाने पर जोड़ी, हड्डियों तथा मांसपेशियों



में दर्द व संबंधित रोग होते हैं क्योंकि मूलाधार चक्र संपूर्ण शरीर के मस्कुलो स्केलेटन सिस्टम

को कंट्रोल करता है। मंत्र संगीत से जैसे-जैसे मूलाधार चक्र शुद्ध होता जाता है, सकारात्मक योग ऊर्जा प्रभाव से ये रोग दर्द पीड़ाएं स्वतः दूर होते जाते हैं। मजेदार बात यह है कि हर चक्र में अलग-अलग तादाद में पंखुड़ियों वाले कमल के फूल होते हैं और हर एक पंखुड़ी में अलग देवियां स्थापित होती हैं। मूलाधार चक्र के शुद्ध होने से इसमें विद्यमान चार पंखुड़ी वाला कमल खिल जाता है इसमें चार देवी शक्तियां वरदा देवी, शैल पुत्री देवी, षंडुवती देवी और सरस्वती देवी की मंत्रों द्वारा जागृत करने पर असीम कृपा प्राप्त होती है।

— ज्ञानचंद जैन
मयूर विहार, दिल्ली



प्रो. अश्विनी केशरवानी

बंजर होती जमीन

गाँव अब शहर में तब्दील होते जा रहे हैं। आज यहां बड़ी बड़ी इमारतें, मोटरगाड़ी देखे जा सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने गांव में अमराई लगाना, कुंआ खुदवाना और तालाब खुदवाना पुण्य कार्य समझा और उसे करवाया। रसीले और पक्के आम का स्वाद भी हमने चखा। आज नई पीढ़ी के बच्चे बोतल में बंद मैंगो जूस, फ्रूटी और आमरस का जेली आदि को सर्वोत्तम भले मान ले लेकिन पलाई आम को चूसने और आम का अमसरा खाने का मजा कुछ और ही था। मुझे मेरे घर में हमारे पूर्वजों के द्वारा कुंआ और खुदवाने संबंधी कागजात मिले हैं जिसके एवज में डिप्टी कमिश्नर रायपुर के द्वारा प्रशस्ति पत्र दिये गये हैं। अर्थात् उस काल में कुंआ और तालाब खुदवाना अत्यंत पुण्य कार्य था। प्रायः सभी गांवों में अनेक तालाब, तालाब के किनारे पेड़ और शिव मंदिर अवश्य होते थे। इसी प्रकार धर्मार्थ कुएं खुदवाये जाते थे। तालाब 'वाटर हार्वेस्टिंग' का बहुत अच्छा माध्यम था।

गांव के बाहर प्रायः सभी छोटे-बड़े किसानों का 'घुरवा' होता था जिसमें गाय और भैंस का गोबर डाला जाता था। भविष्य में यही उत्तम खाद बन जाता था और बरसात के पहले उसे खमतों में डाला जाता था जिससे खमतों की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती थी और पैदावार अच्छी होती थी। तब दुबराज चावल की खुशबू पूरे घर में फैल जाती थी। आज गांवों में ऐसा कुछ नहीं होता क्यों कि आज हल की जगह ट्रैक्टर, गोबर खाद की जगह यूरिया खाद ले लिया है। पानी नहीं बरसा तो नहर से लिया जाता है जब नहर से पानी नहीं मिला तो ट्यूब बेल खोदकर पानी खींचकर सिंचाई की जाती है। फसल में कीड़े हो जाते हैं तो कीटनाशक दवाइयां डाली जाती है। भले ही अब दुबराज चावल में खुशबू नहीं है लेकिन सरकार के द्वारा कम समय में अधिक पैदावार वाले धान के बीज उपलब्ध करा दिया जाता है।

किसानों की चिंता है कि उनके बच्चे खेतों में जाना नहीं चाहते। वे तो पान ठेला, होटल और अन्य दुकान खोलकर जीने के आदी होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी के खेती-किसानी के प्रति अरुचि से खेत बंजर होते जा रहे हैं, यह चिंता की बात है। घर में खाने को कुछ हो या न हो लेकिन एक मोटरसाइकिल अवश्य होना चाहिये। इसके लिए बैंक और फाइनेंसिंग कंपनियों लोन देने को तैयार बैठे हैं। लोन के कर्ज में घर भले ही डूब जाये, इससे किसी को कुछ लेना देना नहीं होता। लोगों का मानना है कि कर्ज में हम जन्म लेते हैं, कर्ज में जीते हैं और कर्ज लिए मर जाते हैं। प्रदेश में औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लगने से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में विकास का ग्राफ अवश्य बढ़ा है। लेकिन विकास के साथ



साथ अनेक प्रकार की बुराइयां भी आती हैं जिसे प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों से निकला धुंआ जहां पेड़ों के चक्र्रीय जीवन को प्रभावित कर रहा है, वहीं उसके धुएं से खेत की उर्वरा शक्ति खत्म होती जा रही है और खेत बंजर होते जा रहे हैं। अधिकांश नदियों में बांध बनाये जा चुके हैं जिससे नदियां सूख गयी है। उसमें जो थोड़ा बहुत जल है उसमें औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रासायन युक्त गंदा पानी प्रवाहित हो रहा है।

आज फसल चक्र की बात की जाती है फसल चक्र तो नहीं बदला लेकिन जलवायु परिवर्तन अवश्य हो गया है। एक ही नगर में कहीं बरसात होती है तो कहीं नहीं होती। जल का चक्र के प्रभावित होने से ऐसा होता है। जलवायु परिवर्तन विकसित और विकासशील देशों के बीच वाद-विवाद का विषय जरूर बना है लेकिन सच्चाई यह है कि हवा, पानी, भोजन, स्वास्थ्य, खेती, आवास आदि सभी के उपर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ने वाला है। समुद्री जल स्तर के बढ़ने से प्रभावित होते तटीय क्षेत्र के लोग हों या असामान्य मानसून अथवा जल संकट से त्रस्त किसान, विनाशकारी समुद्री तूफान का कहर झेलते तटवासी हों अथवा सूखे से त्रस्त और असामान्य मौसम से जनित अजीबो-गरीब बीमारियां झेलते लोग या फिर विनाशकारी बाढ़ में अपना सब कुछ गवां बैठे और दूसरे क्षेत्रों में पलायन करते तमाम लो जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे हैं।

औद्योगिक क्रांति की भट्टी में हमने अपना जंगल झोंक दिया है। पेड़ काट डाले और सड़कें बना डालीं। कुल्हाड़ी-आरी से जंगल काटने में देर होती थी, तो पावर से चलने वाली आरियां गढ़ डालीं। सन् 1950 से 2000 के बीच 50 वर्षों में दुनिया के लगभग आधे जंगल काट डाले, आज भी बेरहमी से काटे जा रहे हैं। जल संग्रहण के लिए तालाब बनाये जाते थे

जिससे खेतों में सिंचाई भी होती थी। लेकिन आज तालाब या तो पाटकर उसमें बड़ी-बड़ी इमारतें बनायी जा रही है या उसमें केवल मछली पालन होता है। मछली पालन के लिए कई प्रकार के रसायनों का उपयोग किया जाता है जिसका तालाबों का पानी अनुपयोगी हो जाता है। इसी प्रकार औद्योगिक धुओं से वायुमंडल तो प्रदूषित होता ही है, जमीन भी बंजर होती जा रही है। इससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगा है और दुष्परिणाम हम भुगत रहे हैं। आखिर जंगल क्यों जरूरी है? पेड़ हमें ऐसा क्या देते हैं, जो उन्हें बचाना जरूरी है? पेड़ हमें फल, फूल, जड़ी-बूटी, भोजन, ईंधन, ईमारती लकड़ी, गोंद, कागज, रेशम, रबर और तमाम दुनिया के अद्भूत रसायन देते हैं। इसलिए हमने उसका दोहन (शोषण) तो किया, पर यह भूल गये कि वृक्षों के नहीं होने से यह धरती आज वीरान बनती जा रही है।

वनों के इस उपकार का रुपयों में ही हिसाब लगायें तो एक पेड़ 16 लाख रुपये का फायदा देता है। घने जंगलों से भाप बनकर उड़ा पानी वर्षा बनकर वापस आता है और धरती को हरा भरा बनाता है। पेड़ पौधों की जड़ें मिट्टी को बांधे रहती है। पेड़ों की कटाई से धरती की हरियाली खत्म हो जाती है। धरती की उपजाऊ मिट्टी को तेज बौछारों का पानी बहा ले जाती है। पेड़ों की ढाल के बिना पानी की तेज धाराएं पहाड़ों से उतर कर मैदानों को डुबाती चली जाती है। हर साल बाढ़ का पानी अपने साथ 600 करोड़ टन मिट्टी बहा ले जाता है। मिट्टी के इस भयावह कटाव को रोकने का एक ही उपाय है-वृक्षारोपण। मिट्टी, पानी और बयार, ये तीन उपकार हैं वनों के हम पर। इसलिए हमारे देश में प्राचीन काल से पेड़ों की पूजा होती आयी है।

—राघव, डागा कालोनी,
चाम्पा (छ.ग.)



उमेश वर्मा

माँ

सैव्यम पराजितः। अर्थात् जो हारे हुए और निराश लोगों को संबल प्रदान करता है। वीर प्रसूता राजस्थान की धरा यूँ तो अपने आंचल में अनेक गाथाओं को समेटे हुए है, लेकिन आस्था के प्रमुख केन्द्र खाटू की बात अपने आप में निराली है।

शेखावटी के सीकर जिले में स्थित है परमधाम खाटू। यहाँ विराजित है भगवान श्रीकृष्ण के कलयुगी अवतार खाटू श्यामजी। श्याम बाबा की महिमा का बखान करने वाले भक्त राजस्थान या भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के कोने-कोने में मौजूद हैं।

खाटू का श्याम मंदिर बहुत ही प्राचीन है, लेकिन वर्तमान मंदिर की आधारशिला सन् 1720 में रखी गई थी। इतिहासकार पंडित झाबरमल शर्मा के मुताबिक सन् 1679 में औरंगजेब की सेना ने इस मंदिर को नष्ट कर दिया था। मंदिर की रक्षा के लिए उस समय अनेक राजपूतों ने अपना प्राणोत्सर्ग किया था। खाटू में भीम पौत्र और घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक की पूजा श्याम के रूप में की जाती है। बर्बरीक को भारतीय धार्मिक साहित्य में सुहृदय, सिद्ध सैन, सिद्धेश्वर्य, सूर्यावर्चा, चाण्डल, श्याम-प्रभु, भीम पौत्र आदि नामों से जाना जाता है। इसके अलावा तीन बाणधारी, शीश के दानी, नीले के अवतार आदि पर्याय नाम भी उनके जीवन प्रसंग से जुड़े हैं।

महाभारत के युद्ध में बर्बरीक ने अपनी उपस्थिति से सभी को विस्मय में डाल दिया था। प्रत्येक पक्ष यह सोचने लगा था कि बर्बरीक युद्ध में किसका साथ देगा। भीम-पौत्र के समक्ष जब अर्जुन तथा भगवान श्रीकृष्ण उसकी वीरता का चमत्कार देखने के लिए उपस्थित हुए थे तब बर्बरीक ने अपनी वीरता का छोटा-सा नमूना मात्र ही दिखाया था कि उससे स्वयं सुदर्शन चक्रधारी चिंतित हो गये थे। भगवान श्रीकृष्ण

खाटू श्याम हारे का सहारा



यह बात जानते थे कि बर्बरीक प्रतिज्ञाबद्धवश हारने वाला का साथ देगा। इसलिए श्रीकृष्ण यह नहीं चाहते थे कि बर्बरीक परिस्थितिजन्य कौरवों का साथ दे। अगर वह ऐसा करेगा तब तो पाण्डवों के लिए विजय दुर्भर हो जायेगी, इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी चमत्कारिक बातों से प्रभावित कर उसका शीश रणभूमि में दान में ले लिया। बर्बरीक द्वारा अपने पितामह पाण्डवों की विजय हेतु स्वेच्छा के साथ गवोन्मत अवस्था में शीश दान करने के पश्चात जब प्रभु श्रीकृष्ण ने बर्बरीक को कलियुग में स्वयं के नाम से पूजित होने का वर एवं भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करने की सक्षमता प्रदान की। तब बर्बरीक श्रीकृष्ण की इस सहृदयता से प्रसन्न हुआ। उसने कटे हुए सिर से महाभारत का युद्ध देखने की इच्छा भगवान श्रीकृष्ण के आगे

प्रकट की जिसको भगवान श्रीकृष्ण ने सहजता से पूर्ण किया।

खाटू की स्थापना राजा खट्टवांग ने की थी। खट्टवांग ने ही बभ्रुवाहन (बर्बरीक) के देवरे में सिर की प्राण प्रतिष्ठा करवाई थी। इतिहासविद् एवं पत्रकारिता के पुरोधा पंडित झाबरमल शर्मा भी उक्त अवधारणा के समर्थक रहे हैं।

खाटू की स्थापना के विषय में अन्य मत भी प्रचलित है। कई विद्वान इसे महाभारत के पहले का मानते हैं तो कई इसे ईसा पूर्व का लेकिन कुल मिलाकर विद्वानों की एकमत राय है कि बभ्रुवाहन के देवरे में सिर की प्रतिमा की स्थापना महाभारत के पश्चात हुई।

हर साल फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष में यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें देश-विदेश से भक्तगण पहुंचते हैं। हजारों लोग यहां पदयात्रा कर पहुंचते हैं, वहीं कई लोग दंडवत करते हुए खाटू नरेश के दरबार में हाजिरी देते हैं। यहां के एक दुकानदार रामचंद्र चेजारा के मुताबिक नवमी से द्वादशी तक लगने वाले मेले में लाखों श्रद्धालु आते हैं। प्रत्येक एकादशी और रविवार को भी यहां भक्तों की लंबी कतारे लगी होती हैं।

श्याम भक्तों के लिए खाटू धाम में श्याम बाग और श्याम कुंड प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। श्याम बाग में प्राकृतिक वातावरण की अनुभूति होती है। यहां परम भक्त आलूंसिंह की समाधि भी बनाई गई है। श्याम कुंड के बारे में मान्यता है कि यहां स्नान करने से श्रद्धालुओं के पाप धुल जाते हैं। पुरुषों और महिलाओं के स्नान के लिए यहां पृथक-पृथक कुंड बनाये गये हैं।

-601, विदिशा अपार्टमेंट
आई. पी. एक्स्पॉजेशन
पटपड़गंज, दिल्ली-110092





बेला र्ग

नंदू भैया

श्याम रंग में रंगी विरल विभूति

“कीर्तन की है रात बाबा
आज थानै आनो पड़सी”

भजन पूरे श्याम जगत में गुंजता है। इस भजन के रचयिता एवं गायककार है नंदकिशोर शर्मा जिन्हें नंदू भैया के नाम से पहचाना जाता है। श्याम बाबा की भक्ति में डूबे नंदू भैया ने एक अलौकिक और अदृश्य प्रेरणा से अब तक करीब पन्द्रह सौ भजन लिखे हैं। पैंसठ वर्ष की अवस्था में वे वर्ष भर में 150-200 कीर्तन करते हैं और श्याम भक्ति में लोगों को बहा ले जाते हैं। उनका मानना है कि मेरा लिखना और मेरा गाना दोनों ही श्याम की दी हुई शक्ति पर ही निर्भर है।

नंदू भैया का जन्म राजस्थान के नवलगढ़ जिला झुंझुनु में हुआ। जब वे छह महीने के थे तो उनके माता-पिता बिहार के जिला दरभंगा में जाकर बस गये। उनका सारा पालन-पोषण और शिक्षण बिहार में ही हुआ। श्याम बाबा उनके कुलदेवता हैं। उनके भीतर श्याम की ज्योत और भक्ति उस समय जगी जब उनके पिताजी को 1972 में हार्ट अटैक आया। एकाएक इस खबर ने उनको विचलित कर दिया और वे अपने पिता की शीघ्र स्वास्थ्य की कामना को लेकर श्याम बाबा के सामने प्रस्ताव रख दिया कि अगर मेरे पिता स्वस्थ होकर लौटेंगे तभी मैं आपकी सत्ता स्वीकार करूंगा। उनके पिताजी ठीक हुए और उसके बाद दस वर्ष तक उन्होंने निरोगी जीवन जीया। यही वह घटना थी जिसने नंदकिशोर शर्मा को नंदू भैया बना दिया। भीतर से जगी एक प्रेरणा ने उनको श्याम का दीवाना बना दिया। प्रारंभ में घर-परिवार में ही श्याम भक्ति होने लगी। लेकिन 1984 के बाद उन्होंने भजन लिखने और भजन कीर्तन करने प्रारंभ किए।



नंदू भैया कहते हैं कि मैं तब तक कीर्तन करूंगा जब तक मेरे श्याम मुझे ऊर्जा देंगे। लेकिन उन्होंने भजन कीर्तन के साथ-साथ अपने जीवन का एक और ध्येय बना लिया है कि जहां जाऊंगा वहां का पैसा अब गौशालाओं को दिया जायेगा।



निकट संपर्क में आता है वह यही समझता है कि नंदू भैया मुझे ही अधिक जानते और मानते हैं। यह एक अनोखी विचित्रता उनके व्यक्तित्व में देखने को मिली जो हजारों-हजारों लोगों को उनका चहेता बनाये हुए है। कुछ अलौकिक और विलक्षणताएं भी उनके व्यक्तित्व में देखने को मिली। जैसे कुछ लोगों की मानसिक शंकाओं का या जिज्ञासाओं का समाधान बिना पूछे ही वे कर देते हैं। ऐसी ही अनेक अगणित चमत्कारपूर्ण विशेषताओं से आपका व्यक्तित्व परिपूर्ण है। आपका जीवन आध्यात्मिक प्रेमियों के लिए अमृतमय ज्ञांकी के समान है, जिसमें हर तरफ श्याम ही श्याम बसे हैं। उनसे हुई बातचीत से ऐसा लगा कि श्याम स्वयं उन्हें प्रेरणा देने उपस्थित होते हैं। ऐसी ही एक प्रेरणा उन्हें 1995 में मिली और वे श्याम बाबा के प्रचार के लिए तैयार हो गए। श्याम गुणगान यात्रा के रूप में उन्होंने 38,000 किलोमीटर की यात्रा की। 589 स्थानों पर उन्होंने कीर्तन किए। दक्षिण को छोड़कर भारत के 16 प्रांतों में उनकी इस यात्रा ने श्याम बाबा का परचम फहराया। इसके बाद बाबा की ध्वजा लेकर वर्ष 2005 एवं 2007 में वे कैलाश मानसरोवर होकर आए। इस वर्ष वे तीसरी बार वहां जा रहे हैं। वर्ष 2007 में सिंगापुर, बैंकाक में उन्होंने श्याम भक्ति की लहर जगाई। 2012 में यूरोप गये एवं अब 2014 में आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड जाने की योजना बना रहे हैं।

उनकी श्याम भक्ति ने इतना रंग बरसाया कि लोग दूर-दूर से उनको भजन के लिए बुलाने लगे। तभी से वे जगह-जगह कीर्तन करने लगे। हालांकि उनकी पृष्ठभूमि व्यापारिक रही है। इसलिए उन्होंने अहमदाबाद में अपना एक छोटा-सा व्यवसाय शुरू किया है जो अब उनके दो पुत्र संभाल रहे हैं। वे अपने आदर्श रैदास और कबीरदासजी को मानते हैं। इसलिए भजनों के लिए पैसा लेना उन्हें बिल्कुल मंजूर नहीं था।

हाल ही में सरस्वतीकुंज जहां मैं रहता हूं उदय इंडिया के द्वारा आयोज्य 'श्याम भक्ति संध्या' में नंदू भैया के निकट रहने का और उनके जीवन के अंतरंग प्रसंगों/घटना को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। नंदू भैया का व्यक्तित्व विशुद्ध निर्मल और ज्योतिर्मय है, जिनका दूर से दर्शन ही शांति प्रदान करता है। वे मानव विकास की उच्चतम अवस्था के प्रतीक पुरुष हैं। दर्शनमात्र से आपकी स्वाभाविक कोमलता, सरलता, क्षमा, दया, दिव्यता छलकती दृष्टिगोचर होती है। उनके बारे में कुछ भी कहना उनकी अपरिमित शक्तियों को सीमित दृष्टि से देखना है। वास्तव में जो वाणी से परे का विषय है उसे शब्दों में लाने का प्रयत्न अनाधिकार चेष्टा ही है। आपके लिखे एवं गाये भजन आज करोड़ों लोगों की जुबान पर हैं। उनके एक-एक शब्द में ऐसी विद्युत शक्ति है जो श्रोता के हृदय पटल पर अधिकार जमा लेती है। जो भी आपके

नंदू भैया कहते हैं कि मैं तब तक कीर्तन करूंगा जब तक मेरे श्याम मुझे ऊर्जा देंगे। लेकिन उन्होंने भजन कीर्तन के साथ-साथ अपने जीवन का एक और ध्येय बना लिया है कि जहां जाऊंगा वहां का पैसा अब गौशालाओं को दिया जायेगा। उन्होंने बड़े गर्व के साथ कहा कि जब तक मेरी सांस में सांस है मैंने गौशालाओं को अपना जीवन समर्पित कर दिया है। आज जिस तरह की आपाधापी और अनैतिक स्थितियां मुखर हो रही हैं, यह पवित्र भारत भूमि अवैदिकता के पंक में धंसी जा रही है, जब अनाचार और कदाचार के काले-काले राक्षस चारों ओर से घेरे हुए हुए हैं जब एक छोर से दूसरे छोर तक सारा देश भ्रष्टाचार और दुराचार के चंगुल में फंसा हुआ है तब गौ, गंगा, गौरी और गीता पर सोचने और उन्हें प्रतिष्ठित करने का समय है। ●



डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में बिना कुण्डली के जाने भाग्य में वाहन का योग है या नहीं और कैसा रहेगा। इंसान को जीवन में भौतिक साधनों की समय-समय पर आवश्यकता पड़ती रहती है। जिसमें आने-जाने के वास्ते वाहन का योग एक महत्वपूर्ण साधन वैदिक काल से चला आ रहा है। इसलिए प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के पास इसी नियत से जाकर प्रश्न करें कि मुझे या परिवार के अमुक व्यक्ति को वाहन का योग है या नहीं कैसा रहेगा। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम, जन्म कुण्डली, तिथि, वार, घंडी, पंचांग की जरूरत नहीं होती है। जिस व्यक्ति के नाम से वाहन क्रय करना हो उसके नाम की आवश्यकता होती है। इस वास्ते प्रश्नकर्ता के द्वारा पासा जिसे अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं। एक शुद्ध पवित्र स्थान पर डलवाए जाते हैं। यह सारी कार्यप्रणाली विद्वान रमलाचार्य के सममुख होती है। यदि प्रश्नकर्ता विद्वान के समक्ष न हो तो 'प्रश्न-फार्म' के माध्यम से भी उक्त कार्य को सम्पादित किया जा सकता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार (जाचये) के 6वें व 12वें घर में शुभ शकल तथा किसी भी घर में से तकरार लग्न स्थान यानी कि भाग्य स्थान में हो तो वाहन सुख दो

रमल से जानें वाहन योग

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम, जन्म कुण्डली, तिथि, वार, घंडी, पंचांग की जरूरत नहीं होती है। जिस व्यक्ति के नाम से वाहन क्रय करना हो उसके नाम की आवश्यकता होती है।



पहिए का व चार पहिए वाली गाड़ी का होता है। साथ ही नजर-ए-तरवीर व दृष्टि घर की शुभ होना अति आवश्यक है। यदि इस स्थिति में यह न हो तो आगामी समय निराशा की स्थिति होती है।

यदि शुभ शकल के साथ-साथ शुभ दाखिल हो तो वाहन सुख-शान्तिकारी, बढ़ोतरी योग्य व ख्यातिमय होती है। यदि महान अशुभ हो तो वाहन और वाहन चालक की स्थिति मृतक अथवा मृतक तुल्य होती है। इसलिए प्रश्नकर्ता को किसी प्रकार से लाभ नहीं होता है। यदि तकरार 12वें घर के साथ-साथ प्रस्तार के अन्य शुभ घरों में हो तो वाहन सवारी वाला न होकर माल वाहक होता है। अमुक वाहन से धन लाभ

अर्जन व शान्ति भी होती है। यदि शकल शुभ साबित हो तो वाहन स्वयं का और सवारी देने वाला दोनों प्रकार से होता है। यदि प्रस्तार के छठे घर में महान अशुभ शकल और महान अशुभ दृष्टि हो तो वाहन चोरी जाता है। उसी स्थिति में वाहन बरामदी का योग नहीं होती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार के 12वें घर में जिस ग्रह की शकल (आकृति) होती है। उसी रंग का वाहन शुभकारी, आर्थिक सम्पन्नतामय और ख्यातिमय बराबर होता है। वे वाहन लम्बे वक्त तक रहने वाले और कार्य व घर सम्पदा की वृद्धि करने में सहायक होते हैं।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के द्वारा बने हुए प्रस्तार प्रश्नकर्ता के भाग्य स्थान में जिस ग्रह की शकल होती है। उसी वार (दिन) को वाहन प्राप्ति का शुभ योग बनता है। यदि शुभ ग्रह की शकल होगी तो शुभकारी व अशुभ ग्रह की शकल होगी तो अशुभकारी दिन होता है। यदि अशुभकारी की स्थिति हो तो रमल सिद्धयंत्र या विश्वकर्मा यन्त्र को रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के शुभ मुहूर्त में वाहन में निर्धारित स्थान पर लगाकर परेशानी (गिरावट) को दूर किया जा सकता है।

-3, महल खास, किला भरतपुर (राजस्थान)



प्रकाश जैन

कहते हैं कि व्यक्ति को किस्मत से ज्यादा नहीं मिलता लेकिन कई बार अनेक बाधाओं के कारण किस्मत में लिखी धन-समृद्धि भी प्राप्त नहीं होती। वास्तु को मानने वाले अगर इसके मुताबिक काम करें तो उन्हें वो मिल सकता है जो अब तक नहीं मिला है।

पूर्व दिशा: यहां घर की संपत्ति और तिजोरी रखना बहुत शुभ होता है और उसमें बढ़ोतरी होती रहती है।

पश्चिम दिशा: यहां धन-संपत्ति और आभूषण रखे जाएं तो साधारण ही शुभता का लाभ मिलता है। परन्तु घर का मुखिया अपने स्त्री-पुरुष मित्रों का सहयोग होने के बाद भी बड़ी कठिनाई के साथ धन कमा पाता है।

उत्तर दिशा: घर की इस दिशा में कैश व आभूषण जिस अलमारी में रखते हैं, वह अलमारी भवन की उत्तर दिशा के कमरे में दक्षिण की दीवार में लगाकर रखना चाहिए। इस प्रकार रखने से अलमारी उत्तर दिशा की ओर

सही वास्तु दिलाएगा धन समृद्धि



खुलेगी, उसमें रखे गए पैसे और आभूषण में हमेशा वृद्धि होती रहेगी।

दक्षिण दिशा: इस दिशा में धन, सोना चांदी और आभूषण रखने से नुकसान तो नहीं होता परन्तु बढ़ोतरी भी विशेष नहीं होती है।

ईशान कोण: यहां पैसा, धन और आभूषण रखे जाएं तो यह दर्शाता है कि घर का मुखिया बुद्धिमान है और यदि यह उत्तर ईशान में रखे हों तो घर की एक कन्या संतान और यदि पूर्व ईशान में रखे हों तो एक पुत्र संतान बहुत बुद्धिमान और प्रसिद्ध होता है।

आग्नेय कोण: यहां धन रखने से धन घटता

है, क्योंकि घर के मुखिया की आमदनी घर के खर्च से कम होने के कारण कर्ज की स्थिति बनी रहती है।

नैऋत्य कोण: यहां धन, महंगा सामान और आभूषण रखे जाएं तो वह टिकते जरूर हैं, किन्तु एक बात अवश्य रहती है कि यह धन और सामान गलत ढंग से कमाया हुआ होता है। वायव्य कोण: यहां धन रखा हो तो खर्च जितनी आमदनी जुटा पाना मुश्किल होता है। ऐसे व्यक्ति का बजट हमेशा गड़बड़ाया रहता है और कर्जदारों से सताया जाता है।

सीढ़ियों के नीचे तिजोरी रखना शुभ नहीं होता है। सीढ़ियों या टॉयलेट के सामने भी तिजोरी नहीं रखना चाहिए। तिजोरी वाले कमरे में कबाड़ या मकड़ी के जाले होने से नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है।

घर की तिजोरी के पल्ले पर बैठी हुई लक्ष्मीजी की तस्वीर जिसमें दो हाथी सूंड उठाये नजर आते हैं, लगाना बड़ा शुभ होता है। तिजोरी वाले कमरे का रंग क्रीम या ऑफ व्हाइट रखना चाहिए।

-प्रीत विहार, दिल्ली



आरती जैन-खुशबू जैन

दृढ़ संकल्पी के लिए कहीं कोई कमी नहीं

जो लोग धन-प्राप्ति में दृढ़ संकल्पी होते हैं, उन्हें अपनी रुचि और वृत्ति का काम न भी मिले, तो जो काम मिलता है, उसी में पूरी शक्ति लगाकर सफलता प्राप्त करके दिखाते हैं। उनका तीव्र संकल्प उन्हें जो काम भविष्य में करना है, उसकी अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए विवश कर देता है। हमने ऐसे कई लोगों को देखा है, जिन्होंने अपने काम-काज की शुरुआत भेलपूरी या चाट बेचने से करके ही अपने व्यवसाय में लाखों रुपये कमाये और प्रतिष्ठा प्राप्त की।

बम्बई के सेट्टी नामक भेल या चाट बेचनेवाली एक सज्जन कुछ वर्षों पूर्व चौपाटी पर छोटी-सी दूकान लगाकर आने-दो आने की भेलपूरी बेचते थे। पर आज उन्होंने बड़ी शानदार दूकान ले ली है और अब वे भेलपूरी बेचने के लिए मोटर में आते हैं। उन्होंने लाखों की कमाई एक-दो आने की चाट बेचने का काम करके ही की।

इसी तरह श्री बेडेकर नामक सज्जन ने बम्बई में मिर्च, मसाला, अचार, मुरब्बे, चटनी, पापड़ आदि खाने की चीजें बेचने जैसे छुल्लक व्यापार को हाथ में लेकर ही उसे इतना अधिक बढ़ाया कि आज बम्बई में कई दूकाने हैं और जगह-जगह एजेंट हैं, जो लाखों रुपये का माल बेचते हैं।

कमानी उद्योग-समूह के संस्थापक श्रीरामजी हंसराज कमानी प्रारंभ में कोलकाता की सड़कों पर बर्तनों की फेरी लगाया करते थे। धीरे-धीरे अपनी लगन, सूझ-बूझ और मेहनत से वे देश के प्रमुख उद्योगपतियों की श्रेणी में आ गये।

इसलिए काम छोटा हो या बड़ा, यदि पूरी शक्ति लगाकर बुद्धिपूर्वक किया जाय, तो उसी से धन कमाया जा सकता है। लेकिन उसके लिए परिश्रम लगन, सूझ-बूझ तथा धीरज की जरूरत होती है।

जिन लोगों को अपना विकास करना होता है, वे यह नहीं देखते कि उन्हें कौन-सा काम मिला है। उन्हें जो काम मिला, उसे ही अच्छा बनाकर आगे बढ़ते हैं। सुप्रसिद्ध अमरीकी उद्योगपति कार्नेगी की ही बात लें। उन्होंने बहुत छोटे और हल्के समझे जानेवाले कामों में अपना जीवन प्रारंभ किया था। लेकिन जो काम मिला, उसे अच्छी तरह से करते हुए उन्होंने इतनी प्रगति की कि देखनेवाले दंग रह गए।

किसी से कोई विद्या सीखनी हो, तो उसके लिए विनम्र एवं विनयशील होना पहली शर्त है। सफलता प्राप्त करने के लिए जीवन के



व्यापक अनुभव लेने पड़ते हैं। किन्तु अपने से अधिक जानकार, वयोवृद्ध और अनुभवी व्यक्ति के मार्गदर्शन में हम कम समय और शक्ति में बहुत-सी बातें सहज ही सीख सकते हैं, जबकि प्रत्यक्ष जानकारी लेने में कई-कई वर्ष लग सकते हैं। जो लोग व्यवसाय शुरू करने से पहले इस बात का ध्यान रखते हैं, वे दूसरों के अनुभवों का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं—यह अपने आप में स्वयं एक कमाई है।

नौकरी कर दूसरों के साधनों से अनुभव पाने का दूसरा कोई उत्तम मार्ग नहीं है। अनुभव पाने के लिए बहुत कुछ बिगाड़ना पड़ता है, कई प्रयोग करने होते हैं। पर नौकरी में तो बिना कुछ खर्च किये मार्गदर्शन मिल जाता है, प्रयोग करने को मिलते हैं और कई बार काम बिगाड़कर मनुष्य सीखता भी है। इसलिए नौकरी अनुभव-प्राप्ति के लिए उत्तम पाठशाला है।

जो लोग इस प्रकार मन लगाकर परिश्रमपूर्वक काम सीखते हैं और अपनी पूरी शक्ति लगाकर अच्छा काम करते हैं, वे कुशल कार्यकर्ता बन

जाते हैं। नौकरी छोड़कर जब वे अपना खुद का काम करते हैं, तो उन्हें निश्चित ही सफलता मिलती है और वे जीवन में यशस्वी होते हैं। ऐसे व्यक्ति के पास लक्ष्मी अपने आप आती है।

धन-प्राप्ति की कला आ जाने पर या धन कमाने की कला में सफल होने पर भी यदि आप में उसका ठीक उपयोग करने की सूझ न हो, तो आप सुखी नहीं हो सकते। मैंने ऐसे कई व्यक्तियों को देखा है, जो खूब कमाते हैं, पर खर्च पर जिनका नियंत्रण न रहने से वे केवल दुःखी ही नहीं बनते, बल्कि अपने संकटों को खुद न्योता दे देते हैं। इसलिए धन कमाने के साथ उसका योग्य उपयोग करने की कला भी आवश्यक है। सुप्रसिद्ध चिंतक रस्किन ने कहा है, “धन कमाने की अपेक्षा उसके योग्य उपयोग के लिए अधिक बुद्धिमानी की जरूरत होती है।”

मितव्ययिता आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सेवा के क्षेत्र में भी बड़ा महत्व है। हमने गांधीजी, जमनालालजी, जाजूजी तथा ऐसे अनेक महापुरुषों के जीवन में देखा है कि वे किसी छोटी-सी चीज के दुरुपयोग को भी संपूर्ण राष्ट्र की हानि मानते थे। गांधीजी डाक से आये लिफाफों को संभालकर उनका फिर से उपयोग करते थे। खैर, वे तो संत थे, पर जमनालालजी तो धनवान थे। उनका भी यों तो बहुत खर्च होता था, पर वे फिजूल का एक पैसा भी खर्च करना बर्बाद नहीं करते थे। यदि कोई व्यक्ति थाली में जूठन छोड़ता, तो वे कहते, “तुमने यह जूठन छोड़कर कितने लोगों के परिश्रम व्यर्थ किये, इसकी कल्पना करो। किसान ने यह अनाज पैदा किया, व्यापारी ने उसे लाकर खाने लायक बनाया, रसोइये ने बनाया—इन सबकी मेहनत और उसमें लगे समान की बरबादी तुमने की।” इस प्रकार चीज को नष्ट करने में मूर्खता और अविवेक तो है ही, लेकिन दुष्टता भी है। जब लोगों को पेट भर खाने को न मिलता है, तब इस प्रकार जूठन छोड़कर या अपव्यय करके दूसरे भूखे आदमियों को पेट भरने से वंचित किया जाना दुष्टता ही तो है।

दिन-प्रतिदिन ज्ञान और विज्ञान की प्रगति हो रही है। उसे हासिल करके हम अपने जीवन को समृद्ध और विकसित कर सकते हैं। आत्मविकास के लिए किया हुआ खर्च हम वास्तव में पूंजी के रूप में ही लगाते हैं। यही व्यवहार-कुशलता है। हमने देखा है कि जिन व्यक्तियों ने धन का इस प्रकार उपयोग किया, उन्होंने धन ही नहीं कमाया, बल्कि ऐसे सफल हुए कि उनके द्वारा अपने कुटुम्ब, समाज और राष्ट्र का भी कल्याण हुआ।

—‘सातों सुख’ पुस्तक से



* डॉ. तारा सिंह

स्वार्थ में अंधे हे मानव!
 धरती के शृंगार
 मुझ वृक्ष को नष्ट मत करो
 मैं धूप सहता, वर्षा में निडर
 प्रकृति संतुलन खड़ा हूँ बनाये
 मेरा आहार कार्बन लौटाता ऑक्सीजन
 फल-फूल औषधि इमारती लकड़ी
 ईंधन देता हूँ तुझे मेरी टहनियां
 पक्षियों का बसेरा
 जड़े देती हैं भूमि को सहारा
 मुझे क्यों काटते
 शीतलता मेरा धर्म परोपकार है कर्म
 तुम्हारे आघातों को विनम्रता से भूलता
 मेरी पीड़ा समझो
 मरुस्थलों की शुष्क तपती रेत
 जल को तरसते लोग
 बढ़ता तापमान और भावी संकट को देखो
 नदियों का जल प्रपातों की कल-कल
 मेरे विनाश से कहीं
 एक दिन विलीन न हो जाये
 आदिकाल से मैं प्राणीमात्र का साथी
 बचाती जनजीवन मेरी हरियाली
 मिलकर मुझे रोपो मेरे संरक्षण में
 विश्व का हित मेरा क्षय
 तेरे अस्तित्व को भय
 हे मानव जागो! जागो! जागो!

—हरिनगर, मेरठ-250002 (उ.प्र.)

शापेक्ष!

* कन्हैयालाल सेठिया

सूरज के ढलने की वेला
 धूप चढ़ी शिखरों पर!

नहीं पतन उत्थान स्वयं कुछ
 यह सापेक्षित दर्शन,
 कथ कर भी जो रहे अकथ वह
 शब्दातीत चिरंतन,
 गूँज गगन में गई हुई जब
 मुरली मौन अधर पर!

जो समाप्ति है वहीं व्याप्ति है
 परम गूढ़ यह चिंतन,
 कर सकता अनुभूत द्रव्य से
 जो तटस्थ वह चेतन,
 मेघ बरस कर बिखरा, बूंदे
 नाच रही लहरों पर!

गति की ही परिणतियां ये
 भिन्न-अभिन्न परस्पर,
 द्रुढ़ मुक्त हो जीव स्वतः ही
 बन जाता है ईश्वर,
 क्षण जो जाते बीत वही फिर
 बन जाते स्वयंवर!

यही तो दरबार है

* वीरेन्द्र सिंह 'वीर'

मुम्बई के पाव और लोकल
 चेन्नई के धाम और चावल
 हमें बहुत भाते हैं।
 यू.पी. के पी.एम. और त्योंहार के झगड़े
 पंजाब के नद (नदी) और भंगड़े
 हमें बहुत सुहाते हैं।
 गुजरात का गरबा और फाफड़ा
 बंगाल का रसगुल्ला और हावड़ा
 मन को सदा हर्षाता है।
 संपत्ति का व्यापार यह तो रोग पुराना
 वो भी राजा थे इस राज्य के
 अपने सरदार को हम जहां पहुंचाते हैं।
 अस्मत् हो तो हो लाचार
 यही तो है वो दरबार
 सुता-द्रुपद जहां लुटी थी
 लूटो-लूटो कलियुग में तुम क्यों शरमाते हो
 —म.नं. 82, हैवी वाटर कॉलोनी
 निजामपुरा, जकात नाका, छाणी
 वडोदरा-390024 (गुजरात)

दिशा-बोध

* डॉ. अर्चना रानी वालिया

इस पाठ को गांठ बांध लो,
 पहले-
 स्वयं चुप रहो,
 दूसरों को ध्यान से सुनो।
 चिंतन करो और गुनो।
 दूसरे-
 दूसरों को पढ़ो! पढ़ो!! पढ़ो!!!
 उनकी शैली, शिल्प और कथ्य
 का विश्लेषण करो- तब आगे बढ़ो।
 तीसरे-
 अपना विषय चुनो।
 संबंधित विचारों को धुनो।
 कागज पर, विचार रूपी शब्दों का-
 ताना-बाना बुनो।
 कविता की गेयता और गति,
 अकविता की अगेयता और गति,
 सतर्कता पूर्वक पकड़ो।
 तर्क और वितर्क के मैदान में
 स्वयं से झगड़ो।
 स्वयं का लिखा, स्वयं ही पढ़ो।
 स्वयं की आलोचना, स्वयं ही गढ़ो।
 तब इस मंथन के बाद
 बनकर, संवरकर, निकलकर
 जो कुछ सामने होगा।
 वही 'काव्यामृत' होगा।

—286, स्नेहकुंज कॉलोनी,

जौनपुर दक्षिण, कोटद्वार (उत्तराखण्ड)

नोट देव से विनय

* सीमा सक्सेना

नोट देव! तुम कागज के टुकड़े हो पर,
 हो कितने शक्तिशाली।
 तुम्हारा ही आधिपत्य है दुनिया पर,
 हो कितने प्रभावशाली।
 सारी दुनिया की दृष्टि तुम पर,
 हो कितने गौरवशाली।।
 गरीबी की आशा, अमीरी की परिभाषा,
 सपनों की मंजिल, भागा-दौड़ी की भाषा।
 समस्त कर्मों के संचालक, तुम हो एकाधिकारी शासक।
 सर्व दुःख-दारिद्र्य विनाशक,
 साक्षत् लक्ष्मी के तुम हो उपासक।।
 हे नोट! तुम्हारी सर्व श्रेष्ठता सर्वमान्य है।
 सौभाग्यशाली का तुमसे ही महकता संसार है।
 किन्तु क्या इस प्रकार ही जीवन का उद्धार है?
 हे जगत के उपकारक! क्या मेरी विनय स्वीकार है?
 नोट देव! तुम सुपात्र के शृंगार बनो।
 कुपात्र को छोड़कर सुपात्र को सम्पन्न करो।
 धर्म के रक्षक बनो, अधर्मियों का बल हरो।
 जीवन के उजियारे हो, निष्पाप ज्योतिर्मय रहो।।
 परिश्रमी का बल बनो, योग्यता का वरण करो।
 दुनिया के शिखर पर आसीन अपनी
 सार्थकता सिद्ध करो।।



घोटालों का ही जोर है

* नीलिमा स्वतंत्र शर्मा

हर तरफ एक शोर है, घोटालों का ही जोर है
हर कोई देखता है राजनेताओं को
पर यह हमारी अपनी ही कमजोर जड़ों का तोड़ है।
बचपन में हम देखा करते थे, दादी कितने घोटाले करती थी।
मां के लिए आई हुई साड़ी, बुआ को दिया करती थी
एक किलो दूध में, एक लोटा पानी का
तीस रुपये की सब्जी में, सारी मिर्ची मुफ्त होती थी
क्या वह घोटाला नहीं था हमारे खाने में?
कॉलेज में जाकर बंक कक्षाएं करना
एक्सट्रा क्लास के बहाने मूवी देखने चलना
नयी किताबें लेनी हैं मां, पर गिफ्ट दोस्त को करना
क्या यह घोटाला नहीं था हमारे व्यवहारों में?
क्या यह घोटाला नहीं था। हमारे बाल मन संस्कारों में?
आज का काम कल करेंगे या उस पर कुछ चाय पानी रख दो
आज बीमार हैं मेरी मां कह दफ्तर में छुट्टी कर लो
दफ्तर का आधा सम्मान घर में पार्सल कर लेना
क्या यह घोटाला नहीं हैं हमारे रोजगारों में।
बीबी घर पर रोती हैं दूसरी बाहों में होती हैं
पति दिन भर काम करे, बेगम घर पर सिर्फ आराम करे
बच्चे बिगड़े पैसे पाकर, बूढ़ चाहे भूखे मरे
रिश्ते नाते सारे छोड़े। तेरे-मेरा अब कोई नहीं
क्या यह घोटाला नहीं अपने-अपने रिश्तेदारों का।
हर जगह घोटाले हैं, हम अपना दामन देख न पाते हैं
दूसरों पर अंगुलिया उठाते हैं
इन घोटालों की बुनियाद कहां से पड़ी?
यह जान नहीं पाते हैं, यह घोटाले हुए हैं जो आज
हमारी सामाजिक दुनिया में
उसके जिम्मेदार क्यों हमेशा दूसरों को ठहराते हैं
क्या यह घोटाला नहीं
अपनी जिम्मेदारियों से बचकर जाने का...?

-77, टीचर्स कॉलोनी, गोविंदगढ़, देहरादून-248001

बचपन

* भावना शेखर

चांद छूने की तमना
परछाईं पकड़ने की खाहिश
बादल का घाघरा पहन
गोल-गोल घूमने की चाहत
लहरों की पायल पहन
शरारतों की गगरी सिर पर उठाना
जानकर यहां-वहां यादें छलकाना
वक्त को छकाना
बीते कल की पीठ पर
चुपके से धौल जमाना
सांझ के नीले किवाड़ की
ओट में छिप जाना
चांदनी की पट्टी आंखों पे बांधे
तारों को पकड़ना, चोर बनाना
हजारों खयाल आईना हैं
मेरे बचपन का
मेरे छुटपन का।

-सी-43, जगत अमरावती अपार्टमेंट
बेली रोड, पटना-800001

बचपन के इक बाबूजी थे

* दिलीप भाटिया

सीधे सरल अनुशासन प्रिय थे मेरे बाबूजी।
मुझे वैज्ञानिक बनाया, पोस्टमास्टर थे मेरे बाबूजी।
समय प्रबंधन का पाठ पढ़ा गए मुझे मेरे बाबूजी।
गलती पर समझाते, डांटते, मारते थे मुझे मेरे बाबूजी।
स्वाभिमानी धार्मिक ज्ञान के सागर थे मेरे बाबूजी।
मेरी शिक्षा के प्रति चिंतित समर्पित थे मेरे बाबूजी।
रामनवमी पर जन्मे मर्यादा पुरुष थे मेरे बाबूजी।
स्नेह प्यार ममता भरे दिल के राजा थे मेरे बाबूजी।
घर समाज सबसे मान सम्मान आदर पाते थे मेरे बाबूजी।
मेरे जीवन की पाठशाला के प्रथम गुरु थे मेरे बाबूजी।
पापा बनने पर मुझे लगा कितने अच्छे थे मेरे बाबूजी।
जीवन यात्रा में पल-पल याद आते मुझे मेरे बाबूजी।
छलकती आंखों से मैंने मुखग्नि दी जब चले गए मेरे बाबूजी।
शिक्षा संस्कार चरित्र की सम्पत्ति दे गए मुझे मेरे बाबूजी।
हर घर में पापा डैडी हैं पर नहीं हैं जैसे थे मेरे बाबूजी।
प्रार्थना है अगले जन्म में पुनः मिलें मुझे मेरे बाबूजी।

-रावतभाटा 323307 (राजस्थान)

कंट्रोल नहीं होता

* अशोक 'अंजुम'

दरोगाजी!
अपनी खाकी वर्दी का रौब
जनता को दिखाते हो शर्म नहीं आती!
निर्दोषों का खून चूसते हो
एक-एक केस पर हजारों कमाते हो!
क्या निर्दोष, असहायों का लहू बहाने पर
तुम्हारा दिल नहीं रोता?
पर क्या करें, कंट्रोल नहीं होता!

मंत्रीजी!

एक तरफ तो जनता को
रोटी-दाल के लाले,
दूसरी तरफ आपके द्वारा
करोड़ों-अरबों के घोटाले!
हे चपड़कनाती!
गिरगिट के ऑरिजनल नाती!
बार-बार झूठे आश्वासनों से
जनता को बहलाने में
तुम्हारी जुबान नहीं कांपती,
जनता का दर्द
तुम्हारी आंख नहीं भिगोता?
नेताजी धुनधुनाये-
भिगोता है, भिगोता है
पर क्या करें, कंट्रोल नहीं होता!

गजल

* डॉ. सम्राट सुधा

दर्द, आंसू, बेबसी कह दी किसी से क्या हुआ।
हमने कह दी, उसने सुन ली, इससे आगे क्या हुआ।
तोड़कर कितने ही गुल फिर मूरति पर धर दिये।
ये ना सोचा उन गुलों का इससे आगे क्या हुआ।
हमने परिन्दों को कफ़स में बांधकर तो रख दिया
ये ना सोचा परवाज़ों का इससे आगे क्या हुआ।
ऐ खुदा तूने ये दुनिया यूं तो ढाली खूब है
पर पलटकर ये ना देखा इससे आगे क्या हुआ।

मौत तक का फासला ही तय किया, जिन्दा रहे
जिंदगी कह गयी बस इससे आगे क्या हुआ।

हादसों ने 'सुधा' को और ताक़त बख़्शा दी।
सोचिए उन हादसों का इससे आगे क्या हुआ।

-94, पूर्वावली, गणेशपुर,
रूड़की-247667 (उत्तराखण्ड)





सुखी परिवार फाउंडेशन एवं गुजरात सरकार द्वारा संचालित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, कवांट

(एक अभिनव आदिवासी शिक्षा एवं जन कल्याण का विशिष्ट उपक्रम)



‘धर्मपुत्र-धर्मपिता’ योजना

आदिवासी एवं पिछड़े छात्रों को इंतजार है आपके सौजन्य का
गरीब, असमर्थ एवं अभावग्रस्त छात्रों को ‘धर्मपुत्र’ के रूप में गोद लें।

- ◆ एक ‘धर्मपुत्र’ की मासिक सौजन्यता राशि : रु. १,०००/-
- ◆ एक ‘धर्मपुत्र’ की वार्षिक सदस्यता राशि : रु. १२,०००/- एकमुश्त दी जा सकती है।
- ◆ समस्त अनुदान आयकर अधिनियम की धारा ८०जी के अंतर्गत आयकर से मुक्त होगा।
- ◆ अनुदान राशि का चेक/ड्राफ्ट सुखी परिवार फाउंडेशन के नाम देय होगा।

आपका सहयोग : समाज की प्रगति



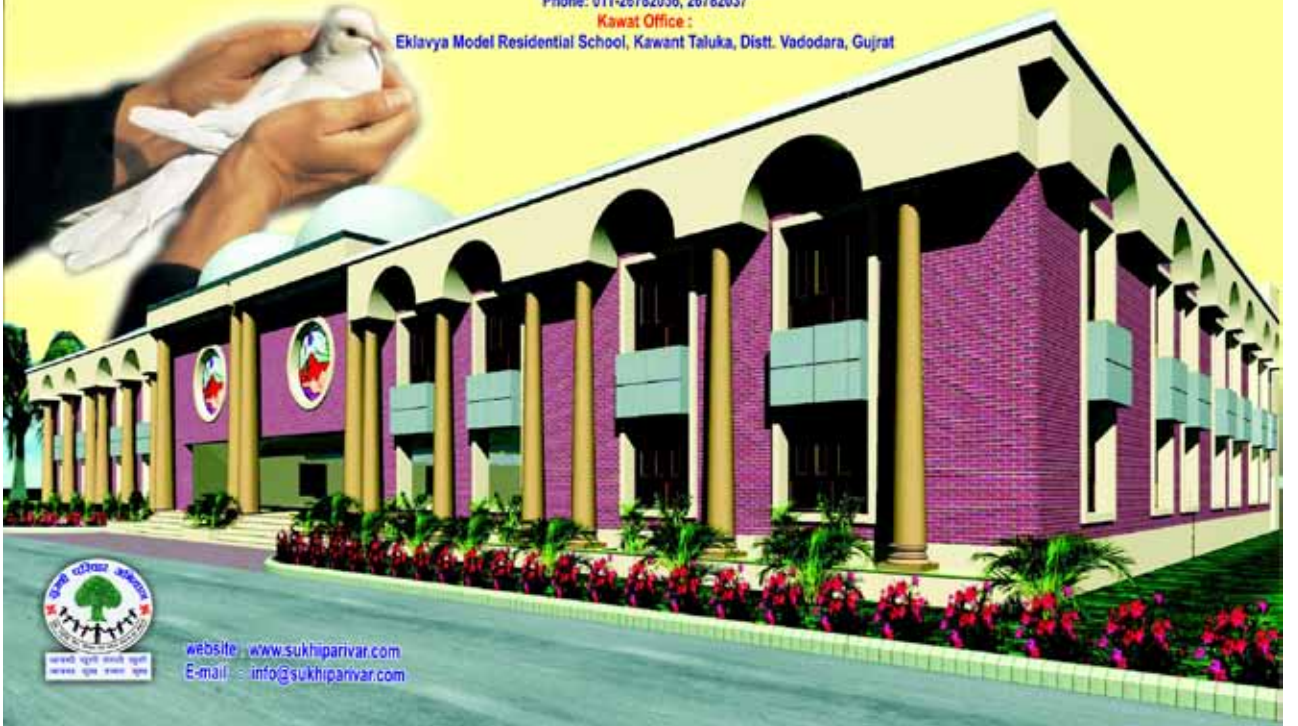
SUKHI PARIVAR FOUNDATION

Head Office :

T. S. W. Center, A-41/A, Road No.-1, Mahipalpur Chowk, New Delhi-110 037
Phone: 011-26782036, 26782037

Kawat Office :

Eklavya Model Residential School, Kawant Taluka, Distt. Vadodara, Gujrat



website : www.sukhiparivar.com
E-mail : info@sukhiparivar.com



शशिभूषण शलभ

मधुमेह रोग में शर्करा पर नियंत्रण रखती हैं जामुन

मधुमेह रोग आजीवन चलने वाला रोग है। मधुमेह रोग का नाम ही स्त्री-पुरुषों को भयभीत कर देता है। औषधियों से भले ही मधुमेह रोग को नष्ट नहीं किया जा सकता लेकिन जामुन खाकर मधुमेह रोग में शर्करा पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अग्न्याशय ग्रंथि अर्थात पैंक्रियाज की विकृति से जब अग्न्याशय रस अर्थात इंसुलिन की कमी हो जाती है तो शर्करा की पाचन क्रिया संपन्न नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में शर्करा मूत्र के साथ शरीर से निष्कासित होने लगती है। शर्करा के निष्कासन से शारीरिक निर्बलता बढ़ने लगती है।

शारीरिक निर्बलता के साथ भोजन में लापरवाही होने से मधुमेह रोग उग्र होता है और नेत्र रोगों की उत्पत्ति होती है। उच्च रक्तचाप, हृदय रोग व गुर्दे की विकृति होती है। मधुमेह रोग के चलते दूसरे भयंकर रोगों को रोकने के लिए मधुमेह रोग पर जामुन के सेवन से नियंत्रण रखा जा सकता है।

जामुन की उत्पत्ति वर्षा ऋतु में होती है। जामुन जंगली और गुलाब जामुन दो अन्य किस्म की होती है। जंगली जामुन आम जामुन की तरह लगती है लेकिन स्वाद में कुछ तीखी होती है। गुलाब जामुन के वृक्ष दक्षिण भारत और पश्चिम बंगाल में होते हैं।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, हैदराबाद संस्थान में जामुन पर अनेक परीक्षण कराये गये हैं। इन परीक्षणों से पता चला है कि 100 ग्राम जामुन के गुदे में 84 ग्राम जल होता है। 100 ग्राम जामुन में 15 मिली ग्राम कैल्शियम, 15 मिली ग्राम फॉस्फोरस होता है। जामुन में गुणकारी फाइबर (रेश) होता है। 100 ग्राम जामुन के गुदे में 14 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.7 ग्राम प्रोटीन और 0.3 वसा ग्राम होती है। इसके अलावा जामुन में कैरोलीन, थायामिन, रिबोफ्लेविन और नियासिन तत्व भी होती हैं।

इन सब तत्वों के कारण 100 ग्राम जामुन से 62 किलो कैलोरी ऊर्जा मिलती है। जामुन से गुणकारी और स्वादिष्ट शीतल पेय (शर्बत), जैली, जैम बनाये जाते हैं। जामुन से गुणकारी सिरका बनाया जाता है। जामुन के सर में टैनिन और एंथोसायनिन रसायन भी होते हैं।

आयुर्वेद चिकित्सा में जामुन की गुठली को कई रोगों में उपयोग किया जाता है। जामुन की गुठलियों से बनाया चूर्ण मधुमेह रोग का प्रकोप कम करता है। गुठली के चूर्ण अतिसार (दस्त) और प्रवाहिका रोग (पेचिश) को नष्ट करता है। गुठली का अल्कोहलिक सार मधुमेह रोग से पीड़ित स्त्री-पुरुषों के रक्त में एकत्र शर्करा को नष्ट करता है।

जामुन का फल स्वाद में मधुर व कषाय



आयुर्वेद चिकित्सा में जामुन की गुठली को कई रोगों में उपयोग किया जाता है। जामुन की गुठलियों से बनाया चूर्ण मधुमेह रोग का प्रकोप कम करता है। गुठली के चूर्ण अतिसार (दस्त) और प्रवाहिका रोग (पेचिश) को नष्ट करता है। गुठली का अल्कोहलिक सार मधुमेह रोग से पीड़ित स्त्री-पुरुषों के रक्त में एकत्र शर्करा को नष्ट करता है।

होता है। जामुन के सेवन से पित्त की जलन, कण्ठ की शुष्कता, शरीर का सूखना, पेट में कीड़े, श्वास रोग, अतिसार (डायरिया), खांसी, पेट का दर्द, कफ विकृति आदि रोग विकारों को नष्ट करता है।

जामुन के सेवन से पाचन क्रिया तीव्र होती है। अधिक मात्रा में जामुन खाने से वायु विकार उत्पन्न होते हैं। जामुन को सेंधा नमक के साथ खाना चाहिए। जामुन के ताजे पत्तों का रस मल को रोकता है। अतिसार पर नियंत्रण करता है। जामुन घरेलू चिकित्सा में भी कारगर होती है-

- जामुन के ताजे कोमल पत्तों को जल में उबालकर छानकर इस जल से कुल्ले करने से मसूढ़ों से रक्त निकलने की विकृति नष्ट होती है।
- अर्श रोग (बवासीर) में रक्तस्राव होने पर जामुन को सेंधा नमक के साथ खाने से बहुत लाभ होता है। खाली पेट जामुन खाने से कब्ज नष्ट होता है।
- जामुन के सूखे पत्तों की मिट्टी के पात्र में रखकर आग पर खूब गरम करके जलाकर राख बनाएं। इस राख से मंजन करने से दांत स्वच्छ होते हैं। मसूढ़ों की सूजन नष्ट होती है और रक्त निकलने की विकृति नष्ट होती है।
- जामुन की गुठली को पत्थर पर जल के छींटे मारकर घिसकर, चेहरे पर लेप करने से मुंहासे और फुंसियां नष्ट होती है। चेहरे का सौंदर्य

निखरता है।

- जामुन के ताजे कोमल पत्तों का रस 10 ग्राम में मधु के साथ मिलाकर, दिन में दो-तीन बार सेवन करने से अतिसार (दस्त) की विकृति नष्ट होती है।
- जामुन की गुठलियों का चूर्ण, प्रतिदिन दही के साथ दिन में दो बार सेवन करने से गुर्दों की पथरी नष्ट होने लगती है।
- जामुन के ताजे पत्तों का रस 5 ग्राम मात्रा में करेले के 10 ग्राम रस के साथ प्रतिदिन सेवन करने से मधुमेह रोग का प्रकोप कम होता चला जाता है।
- जामुन के वृक्ष की छाल को कूट कर जल में देर तक उबालकर, क्वाथ (काढ़ा) बनाकर, छानकर प्रतिदिन सेवन करने से कुछ सप्ताह में प्रदर रोग (ल्यूकोरिया) नष्ट होता है।
- जामुन की गुठली को तेज हल्का-सा गरम करके बूंद-बूंद कान में डालने से कान का दर्द नष्ट होता है।
- बच्चों के बिस्तर पर मूत्र करने की विकृति को नष्ट करने के लिए जामुन की गुठली का चूर्ण जल के साथ सेवन कराने से विकृति से छुटकारा मिलता है।

-भारतीय चिकित्सा भवन चंद्रप्रिया अपार्टमेंट

ए-3/14, एम.आई.जी. फ्लैट्स रोहिणी, सैक्टर-8, दिल्ली-85



मंजुला जैन

धन प्राप्ति हेतु लक्ष्मी साधनाएं

प्रारब्ध में होगा तो धन मिलता है, अन्यथा, अत्यंत परिश्रम करने पर भी मनुष्य निर्धन ही रहता है, ऐसा सामान्य लोगों का कथन है। अत्यंत विद्या-संपन्न व्यक्ति भी कई बार 1000-2000 रुपयों में नौकरी करते दिखाई देते हैं और अनपढ़-अंगूठा छाप लाखों करोड़ों रुपयों के कारोबार करते देखे जा सकते हैं। प्रारब्ध की बात छोड़ दें तो भी परमेश्वर द्वारा कुछ वस्तुओं में धन प्राप्ति के गुण-धर्म निर्मित किये गये हैं, यह बात निर्विवाद है। जिस प्रकार यज्ञादिक कर्मों द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति होती है या देश पर आये महान संकट दूर होते हैं। उसी प्रकार कुछ खास साधनाएं और उपासनाएं की जाएं, तो मनुष्य को धन की प्राप्ति अवश्य होती है। इनको करने से अनर्थ या अहित होने की संभावना लेशमात्र भी नहीं है।

पहला प्रयोग यदि व्यापार में निरन्तर घाटा हो रहा हो तो किसी भी बुधवार से यह प्रयोग आरंभ करें। इसको नियमित रूप से पांच बुधवार तक करना अनिवार्य है।

पांचवें बुधवार तक आपको इस प्रयोग का प्रभाव दिखलाई देने लगेगा। पहले बुधवार के दिन पीली कौड़ियां या जैसी भी कौड़ियां मिले, खरीदकर ले आये। एक जोड़ा लौंग, उन कौड़ियों को पारदेश्वरी लक्ष्मी या पारदेश्वर गणपति के सामने जलाकर उसकी राख बना लें यह राख बुधवार को ही एक पान के पत्ते पर रखकर उसमें एक छेद वाला तांबे का पैसा डाल दें। यदि छेद वाला तांबे का पैसा न मिले तो तांबे की चादर को सिक्के के आकार में गोल काटकर उसमें छेद कर लें। इस पान के पत्ते को सारी सामग्री सहित कहीं बहते हुए पानी, कुएं अथवा तालाब में छोड़ दें। जिस बुधवार को यह प्रयोग करें उस दिन प्रयोग समाप्त होने पर निराहार

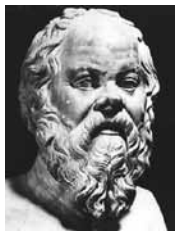


रहें। किसी भूखे व्यक्ति को यथाशक्ति या अन्न दान दक्षिणा देने के बाद ही भोजन करें। अंतिम अर्थात् पांचवें बुधवार को अपने इष्ट देवता को फल, मिठाई आदि से प्रसन्न करें। उनका प्रसाद पहले स्वयं ले फिर घर बाहर के अन्य लोगों को स्वयं बांट दें।

दूसरा प्रयोग रुपये-पैसे, धन-संपत्ति आदि के कार्यों के लिए आपको कभी घर से बाहर जाना होता है। अनेक अवसरों पर घर के बाहर आपके धन लाभ की आशा भी होती होगी, परन्तु अंतिम क्षणों में आपकी आशा के विपरीत फल आपको मिलते होंगे। जहां कहीं भी ऐसी शंका की स्थिति बनने की संभावना हो तो यह प्रयोग करके देखें। श्री महालक्ष्मी आप पर निश्चय ही प्रसन्न होंगी। घर से प्रस्थान के पूर्व किसी भी संख्या में बराबर-बराबर पैसों की पांच पुड़िया बनाएं। यह संख्या आपके सामर्थ्य के अनुसार पांच पैसे हो सकती है और सौ रुपये भी अथवा इससे अधिक। प्रत्येक पुड़िया

में थोड़ी रोली, चावल तथा एक साबूत सुपारी भी बांध कर पारदेश्वर गणपति के सामने कहीं सुरक्षित स्थान पर रख दें। वहां एक दीपक जला दें तथा मन में अपनी कार्य सिद्धि हेतु प्रार्थना करें इसके बाद घर की कोई सौभाग्यवती स्त्री या कन्या जो नहाई हुई हो आपको दही का टीका लगाकर विदा करे। इस प्रयोग से निश्चय ही आपका कार्य सिद्ध होगा। घर लौटने पर किसी भी दिन, रखे हुए पैसों से पांच देवताओं (सदा भवानी दाहिने सन्मुख रखे गणेश। पांच देव रक्षा करें ब्रह्मा, विष्णु, महेश।) के नाम का प्रसाद चढ़ा दें। सुपारी, रोली तथा चावल सब एक साथ पान में रखकर कहीं नदी, तालाब अथवा कुएं में छोड़ दें।

तीसरा प्रयोग जिस किसी पूर्णिमा को सोमवार हो उस दिन करें। कहीं से नागकेशर के फूल प्राप्त करें। पारदेश्वर शिवलिंग पर पांच बिल्वपत्रों के साथ फूल भी चढ़ा दीजिए। इससे पूर्व शिवलिंग को कच्चे दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, गंगाजल आदि से धोकर पवित्र करें। यह क्रिया अर्थात् पांच बिल्वपत्र तथा नागकेशर के फूल (संख्या प्रत्येक बार एक ही रखनी है) अगले पूर्णिमा तक निरंतर चढ़ाते रहें। इस पूजा में एक दिन का भी नागा नहीं होना चाहिए। अन्यथा आपकी पूजा खण्डित हो जाएगी। आपको यह फिर किसी पूर्णिमा के दिन पढ़ने वाले सोमवार को प्रारंभ करने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस एक माह के लगभग, जैसी भी श्रद्धा-भाव से पूजा अर्चना बन पड़े करें। प्रसाद ग्रहण करने के उपरांत ही कुछ खाएं। अंतिम दिन चढ़ाये गये फूल तथा बिल्व पत्रों में से एक अपने साथ श्रद्धाभाव से घर ले आये। इन्हें घर, दुकान, फैक्ट्री अथवा कहीं भी पैसे रखने के स्थान में रख दें। धन-संपदा, अर्जित करने में नागकेशर के पुष्प चमत्कारी प्रभाव दिखलाते हैं ●



सुकरात की अंतिम नसीहत

प्रसिद्ध संत सुकरात को विष का प्याला देकर मार डालने का निर्णय किया जा चुका था। जीवन का अंत किये जाने का फैसला सुनकर भी उसके मुख पर चिंता की लकीर नहीं आने पाई। वे निश्चिंत होकर अपना धर्म संदेश पूर्ववत् शिष्यों में बांटने में लगे रहे।

जीव का अंत होने से एक दिन पूर्व की रात के समय संत सुकरात अपने दूर-दूर से अंतिम

दर्शन करने आये शिष्यों से घिरे बैठे थे। इस रात उनके चेहरे पर अनूठा दिव्य तेज था। आत्मा की अमरता का उपदेश देने वाली वाणी और अधिक प्रभावशाली हो गई थी। उन्होंने शिष्यों से कहा-“सत्य पर सदैव अटल रहना चाहिए। मृत्यु का खौफ केवल अज्ञानियों को सताता है।”

शिष्य ने पूछा-“मृत्यु के बाद आपकी अंत्येष्टि किस प्रकार की जाए।” यह सुनकर सुकरात का चेहरा तमतमा गया। बोले-“आत्मा रहित मिट्टी बने शरीर को ठिकाने लगाने के

विषय में क्यों सोचना?” कुछ क्षण मौन रहकर उन्होंने कहा-“बहुत खूब मारेंगे वे और गाड़ोगे तुम। वे अक्लमंदी से मारेंगे और तुम समझदारी से मेरे आत्महीन शरीर को गाड़ोगे। लगता है अब तक मैंने जो समझाया वह व्यर्थ हो गया। मूर्खों आत्मा अमर है, शरीर नश्वर है। इन्हें कौन मार सकता है। कौन गाड़ सकता है। तमाम शिष्य सुकरात के मुख से आत्मा व शरीर की व्याख्या सुनकर उनके समक्ष नतमस्तक हो उठे।

-ऋतु बंसल, कृष्णानगर, दिल्ली



भक्ति विचार विष्णु महाराज

समय कितना विचित्र होता जा रहा है। लोग छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ा करने लगे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि ऐसा समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण हो रहा है। प्रतिस्पर्धा अच्छी चीज है, परन्तु वह प्रतिस्पर्धा नहीं जो किसी की जान ले ले।

प्रतिस्पर्धा तो भक्तों में होती है। उसे एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कहा जा सकता है। भक्त का उद्देश्य भगवान की सेवा करना और उन्हें प्रसन्न करना होता है। सेवा करने की भावना से धीरे-धीरे भक्त का चित्त ऐसा निर्मल हो जाता है कि ओरों को उत्साह देना उसका स्वभाव बन जाता है। उसके स्वभाव में ईर्ष्या तो दूर-दूर तक नहीं दिखती। शायद यही कारण है कि हमारे बड़े हम से कहते थे कि बेटा जो कुछ करो, भगवान का नाम लेकर करो। उसका भजन भी करो। वे जानते थे कि इससे हमारा चित्त निर्मल हो जाएगा और तब कम-से-कम किसी से अनावश्यक झगड़ा नहीं करेंगे। तब हमारे अंदर दूसरों का सम्मान देने की भावना आएगी। तब हम किसी की तरक्की से जलेंगे नहीं।

विभीषण ने भगवान राम को बताया कि रावण की नाभि में बाण मारने से उसकी मृत्यु होगी। पर भगवान तो अंतर्यामी होते हैं। तो क्या वह नहीं जानते थे कि रावण की नाभि में बाण से मारने से उसका अंत होगा? वे जानते थे, किन्तु भक्तवत्सल भगवान, भक्त का मान बढ़ाने के लिए अपने मान का तिरस्कार कर देते हैं। किन्तु भगवान के भक्त, उनसे भी बढ़कर होते हैं। वे अपने सह भक्त का मान बढ़ाने की भरपूर

प्रतिस्पर्धा वह जो प्रेम बढ़ाए



चेष्टा करते रहते हैं। भजन का मार्ग है ही ऐसा। इसमें व्यक्ति अपना-पराया कुछ नहीं देखता। साधु की नजर में सभी प्राणी उसके प्रभु की संतान हैं, अतः सभी उसके अपने हैं।

देखो, न तभी तो रावण को मारने की युक्ति भगवान राम को विभीषण ने दी। और यह भी देखिए कि राम-भक्त हनुमान ने रावण वध का श्रेय राम-भक्त विभीषण को लेने दिया, जबकि रावण के वध के मूल में हैं श्री हनुमान। इसकी एक कथा है। रावण, कुंभकर्ण व विभीषण ने ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए कठिन तपस्या की थी। जब ब्रह्माजी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए तो सबने अपना-अपना वरदान मांगा। रावण ने कहा कि आप मुझे अमरता का वरदान दीजिए। ब्रह्माजी ने कहा कि अमरता देना मेरे वश में नहीं है। और तब ब्रह्माजी ने रावण को एक बाण देते हुए कहा कि मैं इतना कर सकता हूँ कि जब तक यह बाण तुम्हारी नाभि में नहीं लगेगा तब तक तुम्हारा अंत नहीं होगा। रावण ने वह बाण लिया और अपने राजमहल के अंदर तथा अपने राजसिंहासन के ठीक सामने वाले खंभे के अंदर चिनवा दिया।

जब युद्ध हुआ, तो भगवान राम जब भी

अपने बाण से रावण के सिर को धड़ से अलग कर देते, रावण का मस्तक जमीन पर गिरने के बाद फौरन बाद पुनः अपने पूर्व स्थान से जुड़ जाता। बहुत बार जब ऐसा हुआ तो विभीषण ने रावण के ना मरने का कारण बताया। यह सब सुनकर हनुमानजी ने भगवान राम से कहा कि आप निश्चित रहें और यह बताएं कि रावण का वध करने वाला बाण कहां पर है। विभीषण ने कहा कि इसका भेद तो रावण स्वयं अथवा मंदोदरी जानती हैं।

तब भगवान से आज्ञा लेकर, हनुमानजी ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और महान ज्योतिषाचार्य के रूप में लंका के प्रसिद्ध स्थानों पर भ्रमण करने लगे। कुछ दिनों बाद मंदोदरी के कानों में यह समाचार पहुंचा कि कोई ब्राह्मण कई अद्भुत बातें बता रहा है।

मंदोदरी ने उस ब्राह्मण को बुलवाया। ब्राह्मण ने अपनी वाक्पटुता से मंदोदरी से उस बाण के स्थान की जानकारी हासिल कर ली। बाण का पता लगते ही हनुमानजी असली स्वरूप में आ गए और वह खंभा तोड़कर उसमें से बाण निकाल लिया और प्रभु राम को लाकर दिया। उसी से रावण का वध हुआ। ●

स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए किचन की ऊर्जा

किचन को घर की आत्मा कहा जाता है क्योंकि यहीं भोजन बनता है जिससे घर में रहने वाले लोगों को आहार मिलता है। घर में किचन सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। अगर यह स्थान राहु के प्रभाव में आ जाए तो घर में रहने वाले लोग कभी खुश नहीं रहते। घर में रहने वाले लोग अक्सर बीमार होते रहते हैं। घर का मुखिया मानसिक तनाव में घिरा रहता है। वास्तु विज्ञान में कुछ ऐसी स्थितियों का जिक्र किया गया है जिससे किचन में राहु का प्रवेश हो जाता है।

वास्तु विज्ञान के अनुसार राहु टूटे हुए दरवाजे, उखरे हुए प्लास्टर, दीवारों की दरारों, टूटी हुई वस्तुओं, फीकी पेंटिंग वाली दीवारों में, अधरे कोनों में रहता है। अगर किचन में बड़ा छज्जा निकला हुआ है और रोशनी कम है तो



वहां भी राहु बैठा होता है। जहां राहु होता है वहां नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

किचन बहुत लम्बा और बड़ा हो लेकिन इसमें धुआं निकलने के लिए चिमनी की व्यवस्था नहीं हो तो धुआं घर में रह जाता है।

इसलिए किचन बहुत लंबा नहीं होना चाहिए और किचन का धुआं निकलने का पूरा प्रबंध होना चाहिए।

किचन का रंग फीका होने पर भी राहु किचन में अपना पांव जमाने लगता है। किचन की दीवारों का रंग फीका होने लगे तो तुरंत कलर करा लेनी चाहिए।

किचन में रोशनी का अच्छा प्रबंध करें ताकि कोई भी कोना अंधेरा नहीं रहे। दीवारों में दरारें आने पर उसकी मरम्मत में देर न करें। किचन को हमेशा साफ रखें। रात में सोने से पहले किचन की साफ सफाई कर लें। झूठे बर्तन वॉश बेसिन में रात को नहीं छोड़ें। सुबह और शाम में भोजन बनाने से पहले किचन में धूप दीप दिखाएं।

-भारती कांठेड़, दिल्ली

घर में चली आएगी समृद्धि



मुरली कांठेड़

● घर में समृद्धि लाने हेतु घर के उत्तर पश्चिम के कोण (वायव्य कोण) में सुंदर से मिट्टी के बर्तन में कुछ सोने-चांदी के सिक्के, लाल कपड़े में बांध कर रखें। फिर बर्तन को गेहूं या चावल से भर दें। ऐसा करने से घर में धन का अभाव नहीं रहेगा।

● घर में स्थायी सुख-समृद्धि हेतु पीपल के वृक्ष की छाया में खड़े रहकर लोहे के बर्तन में जल, चीनी, घी तथा दूध मिलाकर पीपल के वृक्ष की जड़ में डालने से घर में लंबे समय तक सुख-समृद्धि रहती है और लक्ष्मी का वास होता है।

● घर में बार-बार धन हानि हो रही हों तो वीरवार को घर के मुख्य द्वार पर गुलाल छिड़क कर गुलाल पर शुद्ध घी का दोमुखी (दो मुख वाला) दीपक जलाना चाहिए। दीपक जलाते समय मन ही मन यह कामना करनी चाहिए की भविष्य में घर में धन हानि का सामना न करना पड़े। जब दीपक शांत हो जाए तो उसे बहते हुए पानी में बहा देना चाहिए।

● काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर सात बार उसार कर घर के उत्तर दिशा में फेंक दें, धन हानि बंद होगी।

● घर की आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए घर में सोने का चौरस सिक्का रखें। कुत्ते को दूध दें।

● अपने कमरे में मोर का पंख रखें।

● अगर आप सुख-समृद्धि चाहते हैं तो आपको पके हुए मिट्टी के घड़े को लाल रंग से रंगकर, उसके मुख पर मोली बांधकर तथा उसमें जटायुक नारियल बहते हुए जल में प्रवाहित कर देना चाहिए।

● व्यक्ति जब उन्नति की ओर अग्रसर होता है, तो उसकी उन्नति से ईर्ष्याग्रस्त होकर कुछ उसके अपने ही शत्रु बन जाते हैं और उसे सहयोग देने के स्थान पर वे ही उसकी उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करने लग जाते हैं, ऐसे शत्रुओं से निपटना अत्यधिक कठिन होता है। ऐसी ही परिस्थितियों से निपटने के लिए प्रातःकाल सात बार हनुमान बाण का पाठ करें तथा हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाएं और पांच लौंग पूजा स्थान में देशी कर्पूर के साथ जलाएं। फिर भस्म से तिलक करके बाहर जाएं। यह प्रयोग आपके जीवन में समस्त शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा, वहीं इस यंत्र के माध्यम से आप अपनी मनोकामनाओं की भी पूर्ति करने में सक्षम होंगे।



घर में स्थायी सुख-समृद्धि हेतु पीपल के वृक्ष की छाया में खड़े रहकर लोहे के बर्तन में जल, चीनी, घी तथा दूध मिलाकर पीपल के वृक्ष की जड़ में डालने से घर में लंबे समय तक सुख-समृद्धि रहती है और लक्ष्मी का वास होता है।

● अकस्मात धन लाभ के लिए शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार को सफेद कपड़े के झंडे को पीपल के वृक्ष पर लगाना चाहिए। यदि व्यवसाय में आकस्मिक व्यवधान एवं पतन की संभावना प्रबल हो रही हो, तो यह प्रयोग बहुत लाभदायक है।

● अगर आप अमावस्या के दिन पीला त्रिकोण आकृति की पताका विष्णु मंदिर में ऊंचाई वाले स्थान पर इस प्रकार लगाएं कि वह लहराता हुआ रहे, तो आपका भाग्य शीघ्र ही चमक उठेगा। झंडा लगातार वहां लगा रहना चाहिए। यह अनिवार्य शर्त है।

● देवी लक्ष्मी के चित्र के समक्ष नौ बत्तियों का घी का दीपक जलाएं। उसी दिन धन लाभ होगा।

● एक नारियल पर कामिया सिन्दूर, मोली, अक्षत, अर्पित कर पूजन करें। फिर हनुमानजी के मंदिर में चढ़ा जाएं। धन लाभ होगा।

● पीपल के वृक्ष की जड़ में तेल का दीपक जला दें। फिर वापस घर आ जाएं एवं पीछे मुड़कर न देखें। धन लाभ होगा।

● प्रातःकाल पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं तथा अपनी सफलता की मनोकामना करें और घर से बाहर शुद्ध केसर से स्वस्तिक बनाकर उस पर पीले पुष्प और अक्षत चढ़ाएं। घर से बाहर निकलते समय दाहिना पांव पहले बाहर निकालें।

● एक हंडिया में सवा किलो हरी साबुत मूंग की दाल, दूसरी में सवा किलो डलिया वाला नमकर भर दें। यह दोनों घर में कहीं रख दें।

यह क्रिया बुधवार को करें। घर में धन आना शुरू हो जाएगा।

● प्रत्येक मंगलवार को 11 पीपल के पत्ते लें। उनको गंगाजल से अच्छी तरह धोकर लाल चंदन से हरे पत्ते पर सात बार राम लिखें। इसके बाद हनुमानजी के मंदिर में चढ़ा जाएं तथा वहां प्रसाद बांटे और इस मंत्र का जाप जितना कर सकते हो करें। 'जय जय जय हनुमान गोसाईं, कृपा करो गुरुदेव की नाई' सात बार मंगलवार लगातार जप करें। प्रयोग गोपनीय रखें। अवश्य लाभ होगा।

● अगर नौकरी में तरक्की चाहते हैं, तो सात तरह का अनाज चिड़ियों को डालें।

● किसी शुभ कार्य के लिए जाने से पहले रविवार को पान का पत्ता साथ रखकर जाएं। सोमवार को धनिये के पत्ते खाकर जाएं। गुरुवार को सरसों के कुछ दाने मुख में डालकर जाएं। शुक्रवार को दही खाकर जाएं। शनिवार को अदरक और घी खाकर जाना चाहिए।

● किसी भी शनिवार की शाम को माह की दाल के दाने लें। उस पर थोड़ी-सी दही और सिंदूर लगाकर पीपल के वृक्ष के नीचे रख दें और बिना मुड़कर देखे वापिस आ जाएं। सात शनिवार लगातार करने से आर्थिक समृद्धि तथा खुशहाली बनी रहेगी।

● गृह बाधा की शांति के लिए पश्चिमाभिमुख होकर 'ऊं नमः शिवाय' मंत्र का इक्कीस बार या इक्कीस माला श्रद्धापूर्वक जप करें।



ओशो

जीवन एक प्रतिस्पर्धा है



साधारणतः तुम जो अपने लिए चाहते हो, वह दूसरों के लिए नहीं चाहते, क्योंकि फिर तो अपने लिए चाहने का कोई अर्थ ही न रहा। तुम एक महल बनाना चाहते हो, तो पाओगे कि असल में तुम चाहते हो कि दूसरा कोई ऐसा महल न बना ले। अगर सभी के पास वैसे ही महल हों, तो फिर तुम्हें मजा ही नहीं आएगा। फिर तो उस उपलब्धि का अर्थ ही क्या रहा! तुम एक सुंदर स्त्री या पुरुष चाहते हो कि ऐसा सुंदर साथी किसी और को न मिले अन्यथा कांटु चुभेगा। बस वह तुम्हें मिले और वैसी सुंदर स्त्री किसी दूसरे के पास न हो। सुंदर स्त्री में भी तुम अपने अहंकार को भी भरना चाहते हो। अपने महल में भी अहंकार को ही भरना चाहते हो। तुम जो अपने लिए चाहते हो, वह तुम दूसरे के लिए कभी नहीं चाहते। तुम दूसरे के लिए उससे विपरीत चाहते हो। अपने लिए सुख, दूसरे के लिए दुख। क्योंकि जीवन प्रतिस्पर्धा है, प्रतियोगिता है, पागलपन है, छीन-झपट है, गलाघांट संघर्ष है।

लेकिन हमारा सुख दूसरे के दुख में है। सारी प्रसन्नता किसी की उदासी पर खड़ी है। सारा धन दूसरे की निर्धनता में है। लाख तुम दूसरे के दुख में सहानुभूति प्रगट करो, जब भी दूसरा दुखी होता है, कहीं गहरे में तुम सुखी होते हो। और तुम्हारी सहानुभूति में भी तुम्हारे सुख की भनक होती है।

तुमने कभी पकड़ा अपने को सहानुभूति प्रगट करते हुए? किसी का दिवाला निकल

गया, तुम सहानुभूति प्रकट करने जाते हो। कहते हो, बड़ा बुरा हुआ! लेकिन कभी अपना चोहरा आईने में देखा, जब तुम कहते हो बड़ा बुरा हुआ- तो कैसी रसधार बहती है! जब किसी को लाटरी मिल गई हो, तब तुम कहने गए कि बहुत अच्छा हुआ।

जब कोई सुखी होता है तब तुम अपना सुख प्रगट करने नहीं जाते, तब तो ईर्ष्या पकड़ लेती है। तब तुम कहते हो- धोखेबाज है, बेईमान है। तब परमात्मा से कहते हो, यह क्या हो रहा है तेरे जगत में? पापी और व्यभिचारी जीत रहे हैं और पुण्यात्मा हार रहे हैं। पुण्यात्मा यानी तुम! पापी यानी वे सब जो जीत रहे हैं! जब भी कोई जीत जाता है तब तुम अपने को सांत्वना देते हो कि जरूर किसी गलत ढंग से जीत गया होगा, कोई बेईमानी की होगी, रिश्तत दी होगी, कोई रिश्तेदारी खोज ली होगी।

तुमने कभी देखे ये दोहरे मापदंड?

महावीर इस पहले सूत्र में ही तुम्हें मौत का पहला पाठ देते हैं। चाह की जड़ ही काट दी। कहा, जो तुम अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों के लिए भी मत चाहो। लोगों ने अपने लिए तो

स्वर्ग की कल्पनाएं की हैं और दूसरों के लिए नर्क का इंतजाम किया है। नहीं, अगर तुम अपने लिए नर्क नहीं चाहते तो दूसरों के लिए भी मत चाहो।

यह महावीर का आधार सूत्र है। यह बड़ा सीधा और सरल दिखता है ऊपर से, लेकिन इसका जाल बहुत गहरा है और सूत्र बड़ी गहराई में तुम्हारे अचेतन को रूपांतरित करने वाला है। अगर तुम एक भी सूत्र का पालन कर लो तो तुम्हें पूरा धर्म उपलब्ध हो जाएगा। अपने लिए वही चाहो जो तुम दूसरे के लिए भी चाहते हो। और जो तुम अपने लिए नहीं चाहते वह दूसरे के लिए भी मत चाहो। इसके बाद अचानक तुम पाओगे कि तुम्हारे जीवन की आपाधापी खो गई। अचानक तुम पाओगे कि प्रतिस्पर्धा मिट गई। महात्वाकांक्षा को जगह न रही। यही जिन शासन है।

महावीर ने कहा है, जो तुम अपने लिए चाहते हो, वही दूसरों के लिए भी चाहो। और जो तुम अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों के लिए भी मत चाहो। यही जिन शासन है।

(साभार: ओशो इंटरनेशनल फाउंडेशन)



प्रसन्न रहें, स्वस्थ रहें

स्वास्थ्य प्राप्ति एवं स्वास्थ्य रक्षा के लिए संतुलित भोजन, विशुद्ध जल, शुद्ध वायु, उचित निद्रा, उचित व्यायाम तथा संयमित जीवन व्यतीत करना नितांत आवश्यक है। शरीर में किस धातु की अधिक न्यूनता है या किस धातु की कमी हुई है, उसके अनुसार ही हमें भोजन में खाद्य पदार्थों को चुनना होता है। यदि हम शुद्ध सात्विक भोजन, भोजन के गुण-दोषों को जानकर भोजन करेंगे तो शरीर स्वस्थ रहेगा। खान-पान का चरित्र पर प्रभाव पड़ता है। संतुलित भोजन द्वारा निरोग रहने के अतिरिक्त अनेकानेक रोगों का उपचार भी किया जा सकता है। स्वास्थ्य का संबंध उचित भोजन पर निर्भर करता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह पर बीमारी के लिए डॉक्टर के पास जाता

है, जहां स्वास्थ्य लाभ की कामना होती है वहीं औषधियों के दुष्प्रभाव, चिकित्सा में खर्च होने वाली कठोर श्रम और पसीने की कमाई का अति व्यय हो जाता है। ऐसी स्थिति में यदि घरेलू चिकित्सा मिल जाए और घर में बैठे ही औषधि प्राप्ति के लिए प्रयत्न किये बिना ही स्वयं अपनी चिकित्सा कर सकें, इससे बढ़कर हितकारी चिकित्सा साधन और कोई हो नहीं सकता। दैनिक जीवन में काम आने वाले प्रत्येक पदार्थ अन्न, फल, शाक-सब्जी आदि की उपयोगिता एवं जानकारी हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है जिसके द्वारा हम प्रसन्न एवं स्वस्थ रह सकते हैं। भविष्य में कभी बीमार ही न हो इस प्रकार का निर्णय हम स्वयं कर सकते हैं।

-राहुल फूलफार, मुंबई



जितने कोही

आप वही दे सकते हैं जो आपके पास है

महाभारत का युद्ध शुरू होने वाला था। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा, मुझे एक बार युद्ध के मैदान के बीच में ले चलो। मैं सबको देखना चाहता हूँ। सामने कौरवों की विशाल सेना खड़ी थी, जिससे अर्जुन के सभी अपने थे- गुरु, भ्राता, मामा, दादा सभी।

अर्जुन का मन डावांडोल होने लगा। उसने अपना धनुष नीचे रख दिया और उसने हताश-निराश भाव से श्रीकृष्ण से बोला, मैं युद्ध न कर सकूंगा। अचानक ऐसा क्या हुआ कि महान धनुषधर वीर योद्धा अजेय अर्जुन के हाथ कांपने लगे। क्या उसे पहले से नहीं मालूम था कि उसे इन तमाम योद्धाओं, नातेदारों के साथ युद्ध करना होगा? ऐसी कुछ भी अनहोनी नहीं घटी थी कि आज अचानक उसके सामने यह दृश्य आ गया हो। कहां गई उसकी सारी शक्ति, ऊर्जा, बल? असल में उसका मन कमजोर हो गया था। मन के कमजोर होते ही शरीर की सारी ऊर्जा जाती रही।

मन की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। तब श्रीकृष्ण ने उसे गीता का उपदेश दिया। श्रीकृष्ण ने उसे कोई नए हथियार, बड़े-बड़े विध्वंसकारी धनुष-बाण आदि नहीं दिए, बल्कि उसके मन को ऊर्जावान बनाने के लिए, मन को पुनः जागृत करने के लिए योग, तप, विद्या, ज्ञान की जानकारी दी।

श्रीकृष्ण ने कहा, प्रसन्न रहने मात्र से बुद्धि स्थिर हो जाती है। मन का विचलन रुक जाता है। एकाग्रता बढ़ती है। इसलिए अर्जुन, चिंता छोड़ो और जीवन में उत्साह को धारण करो। मन की उद्विग्नता को शांत करने के लिए अपने अंदर



उत्साह का संचार करो और अर्जुन ने युद्ध किया।

एक दिन मैं सुबह पार्क गया तो देखा एक बुजुर्ग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे- एक लगाओ तेईस पाओ, एक लगाओ तेईस पाओ। लोगों ने समझा कोई पागल है। भला ऐसा कौन-सा व्यापार हो सकता है जिसमें एक लगाने से तेईस मिल जाए। एक लगा के तीन देने वाले ही ठग बाबा निकलते हैं, यहां तो एक के बदले तेईस कमाने की बात हो रही है। किसी ने उनके अर्थ को समझना न चाहा। लेकिन उन बूढ़े बाबा का कहना बिल्कुल सही था। यदि हम घर से बाहर निकलें और खुली हवा में एक घंटा अपने तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए लगाएं तो बाकी के 23 घंटे स्वस्थ, प्रसन्न व

ऊर्जावान रहेंगे। यानी एक घंटा लगाएं और 23 घंटे के लिए स्वस्थ तन और मन पाएं। तमाम संत-महात्मा कहते हैं, निस्वार्थ हो जाएं। मैं कहता हूँ थोड़ा-सा स्वार्थी हो जाइए। प्रतिदिन एक घंटा सिर्फ अपने लिए जीएं। एक घंटा अपने लिए लगाकर आप बाकी 23 घंटे अपने परिवार, समाज, देश के लिए ज्यादा अच्छा कार्य कर सकेंगे। लेकिन केवल तन की सुंदरता नहीं, मन का ऊर्जावान होना भी जरूरी है। उसके लिए प्रकृति के नजदीक जाना होगा। वरना मौका आने पर अर्जुन की भांति धनुष छोड़कर बैठ जायेंगे। और जरूरी नहीं की सभी को श्रीकृष्ण मिल जाएं।

हम अपने शरीर के लिए बहुत कुछ करते हैं। हरी सब्जियां, फल, जूस, विटामिन से भरपूर वस्तुएं खाते हैं। मन शरीर को ऊर्जा देने का प्रमुख केन्द्र हैं और मन की खुराक है हंसी। मन की ऊर्जा है निर्मल, सुंदर हास्य। मनुष्य ने जो भी असंभव लगने वाले कार्य किये हैं, वे सभी शरीर की नहीं, मन की शक्ति से ही संभव हुए हैं। जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है? स्वस्थ तन और ऊर्जावान मन। केवल तन का स्वस्थ होना काफी नहीं। तन के साथ-साथ मन का स्वस्थ व ऊर्जावान होना भी जरूरी है।

आप ऊर्जावान होंगे, तभी समाज को ऊर्जा दे पायेंगे। क्योंकि जिसके पास जो होगा, वही वह समाज को देगा। रोता हुआ व्यक्ति दुख, बीमार व्यक्ति बीमारी और हंसता-खिलखिलाता हुआ व्यक्ति हंसी बांटेगा। आप वही दे सकते हैं जो आपके पास है, इसलिए पहले अर्जित करें और फिर अपने समाज को लौटा दें। ●

नाकामी में ही ठिपा होता है सफलता का रहस्य



स्वामी शिवानंद

स्वामी शिवानंद सरस्वती का जन्म 8 सितम्बर 1887 को तमिलनाडु के पट्टामई में हुआ। उन्होंने मेडिकल की पढ़ाई की और करीब 10 साल तक मेडिसिन की प्रैक्टिस भी की। इसके बाद वह अध्यात्म की ओर मुड़ गए और संन्यास ले लिया। इसके आगे की जिंदगी उन्होंने ऋषिकेश में बिताई। योग,

शुद्ध शुद्धी परिवार | जून 2013

वेदांत और अध्यात्म की उन्हें बहुत अच्छी समझ थी। और इन विषयों पर उन्होंने 200 से ज्यादा किताबें लिखीं। 14 जुलाई 1963 को उन्होंने देह त्याग दी।

- बीती गलतियों के बारे में मत सोचो, वरना दिमाग में नकारात्मक बातें और अवसाद ही भरा रहेगा। गलतियों को दोहराने से बचें।
- किसी के द्वारा दिए गए जख्म को बच्चों की तरह फौरन भूल जाएं। इसे दिल में कभी न रखें। इससे नफरत बढ़ती है।
- दिमाग में एक चाहत के पूरा होने पर दूसरी चाहत आ जाती है। दोनों चाहतों के बीच का वक्त ही वह वक्त होता है, जब मन पूरी तरह शांत होता है।
- नम्र या विनीत होना कमजोरी या कायरता की नहीं, महानता की निशानी है।
- हर नाकामी में कोई अच्छी बात छुपी होती

है, जो आपको अभी नहीं दिखेगी। धीरज रखें। वक्त अपने आप आपको अच्छाई दिखा देगा।

- अगर आप सही बर्ताव के नियम नहीं जानते हैं तो आपका चरित्र निर्माण नहीं हो सकता।
- हर काम में अपना दिमाग, दिल और आत्मा डालो। यही सफलता की कुंजी है।
- जिंदगी छोटी और क्षणिक है। खुद को पहचानो। मन की शुद्धता ही भगवान को पाने का रास्ता है।
- आज तुम्हारा अपना है। कल शायद न आए।
- लालसा का कोई अंत नहीं। संतुष्टि ही खुश रहने का बेहतर तरीका है।
- कुछ मत मांगो, सारी इच्छाओं का त्याग करो और खुश रहो।
- जिंदगी का मतलब सिर्फ संघर्ष है। जीत या हार ऊपरवाले के हाथ है इसलिए चलो संघर्ष का जश्न मनाएं।



सुधा गर्ग

समृद्धिदायक हैं गणेश

वास्तु में दिशाओं के साथ-साथ आंतरिक साज-सज्जा में प्रयुक्त वस्तुएं भी महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि हर वस्तु अलग प्रकार की तरंगों का उत्सर्जन करती है। जिसकी प्रभाव वहां रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के शरीर और मन पर पड़ता है। वास्तु में मुख्य द्वार पर प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं हैं- गणेश, लक्ष्मी, कुबेर, कुलदेवता, कमल, बैल, बछड़े के साथ गाय, हंस, सारस, नृत्य करती महिलाएं, तोता व मोर आदि। घर के मुख्य दरवाजे के चौखट के ऊपर ओडम् तथा दोनों तरफ स्वास्तिक अत्यंत शुभ माना जाता है। पूजा के कमरे में गाय के साथ कृष्ण की मूर्ति रखनी चाहिए, जबकि राधा के साथ कृष्ण की बांसुरी बजाती मूर्ति (रास वाली मूर्ति) ड्राइंग रूम में रखना श्रेयस्कर माना जाता है। पूजा के घर में रखी जाने वाली मूर्तियों की ऊंचाई गृहस्वामी के एक बिस्ते (बालिशत) से कम होनी चाहिए। यह नियम गणेश की मूर्तियों पर लागू नहीं होता। वास्तु शिल्प शास्त्र के अनुसार घर के अंदर गणेश की दो से अधिक मूर्तियां नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा एक मूर्ति घर के मुख्य दरवाजे के ऊपर लगाई जा सकती है।



घर के मुख्य दरवाजे पर यदि गणेश की मूर्ति का उपयोग होता है तो उसके पीछे (पीठ की ओर) गणेश की तस्वीर अवश्य लगाएं, क्योंकि गणेश की पीठ की ओर दरिद्रता का वास होता है। घर के बाहर जब गणेश की मूर्ति लगाएं तो उनकी सूंड वामवर्त में होनी चाहिए, जबकि घर के अंदर दक्षिणावर्त। गणेश की वामवर्त सूंड वाली मुद्रा घर के अंदर नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश नहीं होने देती, जबकि दक्षिणावर्त सूंड

वाली मुद्रा घर के अंदर सकारात्मक ऊर्जा को कई गुणा बढ़ा देती है।

नकारात्मक सोच वाली तस्वीरें जैसे रोता हुआ बच्चा, युद्ध दृश्य, भूकंप के दृश्य, दुर्घटना के दृश्य, टूटी हुई मूर्तियां आदि घर के अंदर नहीं लगानी चाहिए। महाभारत के युद्ध का दृश्य मंदिरों में उपयोग हेतु ही ठीक है। इसी प्रकार नटराज की मूर्तियां, जिसे हम अधिकांश घरों में देखते हैं, उसे भी घर के अंदर लगाने की सलाह नहीं दी जाती। क्योंकि यह शिव की प्रलयकारी मुद्रा है। घर के अंदर पूजा में मूर्तियों को रखने के लिए लकड़ी के प्लेटफार्म का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि लकड़ी सुचालक नहीं होती है और घर में विभिन्न कार्यकलापों के चलते पूरे घर को हम शुद्ध नहीं रख पाते।

शुभ काम के समय रंगोली बनाने का चलन आम है। इसे काफी शुभ माना जाता है। इसके अलावा श्री यंत्र का प्रयोग घर के पूजा कक्ष में या दुकान में करना चाहिए। धन रखने वाले स्थान कैश बैंक्स पर कुबेर यंत्र रखा जाना चाहिए। मनी-प्लॉट उत्तर दिशा में रखा जा सकता है। फव्वारे, मछली घर आदि का प्रयोग उत्तर-पूर्व दिशा में तथा पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा में पहाड़ों या घने जंगलों की तस्वीरें लगाई जा सकती हैं।

-भीलवाड़ा, राजस्थान



www.shingora.net

SHINGORA

SUMMER
STOLES &
SCARVES



Available at all leading stores & multi brand outlets nationwide.

For Dealer queries, contact:
08968982222; 0161-2404728



प्रो. महेन्द्र रायजादा

भारतवर्ष में समय-समय पर अनेक संत हुए हैं। विशेषकर भक्तिकाल में रविदास (रैदास) जैसे संत हुए हैं। इन्होंने व्यक्तिगत इच्छाओं को त्यागकर ईश्वरभक्ति में अपना मन रमाया तथा बिना किसी जात-पात के समाज को अपने ज्ञान से लाभान्वित किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीर के बाद रैदास को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

संत रैदास का जन्म काशी (बनारस) में हुआ था। रैदास काशी में ही अधिकांशतः रहे। इनका जन्म समाज के निम्न जाति मानी जानेवाली चमार जाति में हुआ था। रैदास जूता-चप्पल बनाकर अपनी गृहस्थी चलाते थे। रामानंद के बारह शिष्यों में रैदास की प्रमुख रूप से गणना की जाती है। बचपन से ही रैदास साधु प्रकृति के थे और ये संतों की बड़ी सेवा करते थे। रैदास के पिता रघु इनसे बहुधा नाराज रहते थे। कहते हैं क्रुध होकर रघु ने इन्हें घर से निष्कासित कर दिया था, फिर भी वे संत सेवा में निरत रहे। रैदास फक्कड़ स्वभाव के थे। संसार के विषयों के प्रति इनकी तनिक भी रूचि नहीं थी। अपनी रचनाओं से इन्होंने समाज की बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई है।

निर्गुण संत कवि रविदास



नाभादास ने अपने भक्तमाल में रैदास की चर्चा की है। कबीर ने संतन में रविदास कहकर इनकी चर्चा की है। रैदास की भक्ति से प्रभावित होकर इनके भक्तों की सूची लंबी है। मीरा इनसे प्रभावित थी तथा रैदास को अपना गुरु बताया है। रैदास को अपना गुरु मानने वाले रैदास पंथी कहलाते हैं। लगभग 200 पद रैदास के मिलते हैं। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।' इनकी लिखी पक्तियां हैं। इनके पदों की भाषा बोलचाल की

है। गुरु भक्तिमय स्मरण तथा सत्संग का महत्व आदि में इनके पदों में प्रमुखता से मिलते हैं। रैदास भक्तिकाल के एक महत्वपूर्ण निर्गुण संत कवि हैं।

रविदास रचित चालीस पद 'गुरुग्रंथ साहब' में संकलित है। इनके लिखे गये अधिकांश पद फुटकल हैं। रविदास वाणी तथा संत वाणी में संकलित है।

—5-ख-20, जवाहर नगर, जयपुर-4



उमा पाठक

कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी विकास लाई है। सच है! भारत ने विश्व के नक्शे पर अपनी पहचान बना ली है। गांवों तक कम्प्यूटर और मोबाइल पहुंच गए हैं। नई शिक्षा से युक्त युवा पीढ़ी आगे बढ़ रही है। स्त्रियों को भी उनकी पहचान मिल रही है, पर कुछ है, जो खो गया है। वह है, हमारे बच्चों का भोलापन।

खलील जिब्रान का कहना था कि 'तुम्हारे बच्चे तुम्हारे नहीं हैं। तुम भले ही उन्हें अपना प्यार दो, पर अपनी सोच नहीं, उनकी अपनी सोच है। जीवन पीछे नहीं जाता, न ही बीते कल के साथ ठहरता है।' पर क्या आज के माता-पिता ऐसा मानते हैं?

एक समय था जब परिवारों में कई बच्चे होते थे। उनके विकास में मनोवैज्ञानिकों का नहीं, घर के बड़े-बूढ़ों का योगदान रहता था। कई बार पिता अपने बच्चों के नाम या क्लास तक से अनजान होते थे। पर बच्चे कभी उपेक्षित नहीं महसूस करते थे। बच्चे कितना भी खाएं, हड्डियों का ढांचा दिखते थे। बच्चों

रखी गया बचपन



को अनुशासनपूर्ण जीवन जीना पड़ता था, पर वे किसी तरह के बारे में व्यक्तिगत जानकारी रखते थे। सजा के तौर पर मुर्गा बनाकर बिठा दिया जाता था। नंबर खराब आए तो एकाध बेंत खाना पड़ जाता था, पर नंबरों के कारण जीने-मरने की नौबत नहीं आती थी। माता-पिता बच्चे को सजा दिए जाने पर झगड़ने नहीं आते थे, और न ही अपने बच्चे को औरों की तुलना में हल्का दिखाते थे। क्योंकि जितना था, उसमें संतोष था, अब संतोष अंतर्धान हो गया है। जब बड़ों में संतोष नहीं है, तो बच्चों में कहां

से आएगा? जो बच्चे भोजन, कपड़े और घर पाकर मस्त थे, अब उनकी लालसाएं आसमान छू रही हैं। माता-पिता भी बच्चों के माध्यम से अपनी समृद्धि का प्रदर्शन करते हैं। कभी शिक्षा संस्थान सादगी, अनुशासन और सदाचार का प्रतीक हुआ करते थे, अब उनका वातानुकूलित होना, स्वीमिंग पूल दे सकना उनके बड़प्पन का प्रमाण है। सरकारी स्कूल, जहां टीचर, मेजकुर्सी और कम्प्यूटर जैसी जरूरत की चीजें नहीं हैं, वहां भी स्वीमिंग पूल बनाए जाने की पेशकश है। बच्चों के लिए न टीचर के पास समय है, न घरवालों के पास। ऐसे बच्चों के संपर्क में जब दूसरे बच्चे आते हैं, जिनके माता-पिता उन्हें प्यार और सख्ती से सहज जीवन देना चाहते हैं, तो वे सोचते हैं कि उनके प्रति ज्यादाती हो रही है। नतीजा यह कि आज बच्चों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो रहा है, जो सब कुछ पाकर भी असंतुष्ट है। वीडियो गेम्स में जीतने के लिए मछलियों से लेकर टैंक तक मारकर, तोड़कर एक अजीब-सी खुशी महसूस करने वाले बच्चे वास्तविक जीवन में भी हिंसा में सुख पाते हैं। उन्होंने बचपन न जाने कब खो दिया। इस भटकाव का दायित्व किस पर डालना चाहिए? ●



स्वामी अवधूतानंद

भगवान शिव के तीन प्रमुख नाम शिव, शंभु और शंकर

भगवान शंकर ही सबसे बड़े नीतिज्ञ है क्योंकि वे ही समस्त विद्याओं, वेदादि शास्त्रों, आगमों तथा कलाओं के मूल स्रोत हैं। इसलिए उन्हें विशुद्ध विज्ञानमय, विद्यापति तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर कहा गया है। भगवान शिव ही समस्त प्राणियों के अंतिम विश्राम स्थान भी है। उनकी संहारिका शक्ति प्राणियों के कल्याण के लिए प्रस्फुटित होती है। जब भी जिसके द्वारा धर्म का विरोध और नीति मार्ग का उल्लंघन होता है, तब कल्याणकारी शिव उसे सन्मार्ग प्रदान करते हैं।

भगवान शिव और उनका नाम समस्त मंगलों के मूल एवं अमंगलों का उन्मूलक है। शिव, शंभु और शंकर ये तीन नाम उनके मुख्य हैं और तीनों का अर्थ है परम कल्याण की जन्मभूमि, संपूर्ण रूप से कल्याणमय, मंगलमय और परम शांतिमय।

भगवान शिव सबके पिता और पार्वती जगदम्बा कहलाती है। अपनी संतान पर उनकी असीम करुणा और कृपा है। उनका नाम उनका भोलापन भक्तों को बहुत ही भाता है। अकारण अनुग्रह करना, अपनी संतान से प्रेम करना भोलेबाबा का स्वभाव है। उनके समान कल्याणकारी व प्रजा रक्षक और कौन हो सकता है।

समुद्र से कालकूट विष निकला जिसकी ज्वालाओं से तीनों लोकों में सर्वत्र हाहाकार मच गया। सभी प्राणी काल के जाल में जाने लगे, किसी से ऐसा सामर्थ्य नहीं था कि वह कालकूट विष का शमन कर सके। प्रजा की रक्षा का दायित्व प्रजापतिगणों का था, पर वे भी जब असमर्थ हो गए तो सभी शंकरजी की शरण में गए और अपना दुख निवेदन किया।

उस समय भगवान शंकर ने देवी पार्वती से जो बात कही, उससे बड़ी कल्याणकारी, शिक्षाप्रद, अनुकरणीय नीति और क्या हो सकती है। विष से आर्त और पीड़ित जीवों को देखकर भगवान बोले- 'देवी! ये बेचारे प्राणी बड़े ही व्याकुल हैं। ये प्राण बचाने की इच्छा से मेरे पास



भगवान शिव और उनका नाम समस्त मंगलों के मूल एवं अमंगलों का उन्मूलक है। शिव, शंभु और शंकर ये तीन नाम उनके मुख्य हैं और तीनों का अर्थ है परम कल्याण की जन्मभूमि, संपूर्ण रूप से कल्याणमय, मंगलमय और परम शांतिमय।

आए हैं। मेरा कर्तव्य है कि मैं इन्हें अभय करूँ क्योंकि जो समर्थ हैं, उनकी सामर्थ्य का उद्देश्य ही यह है कि दोनों का पालन करें।

साधुजन, नीतिमान जन अपने क्षणभंगुर जीवन की बलि देकर भी प्राणियों की रक्षा करते हैं। कल्याणी! जो पुरुष प्राणियों पर कृपा करता है, उससे सर्वात्मना श्री हरि संतुष्ट होते हैं और जिस पर वे श्रीहरि संतुष्ट हो जाते हैं, उससे मैं तथा समस्त चराचर जगत भी संतुष्ट हो जाता है।

भगवान शिव स्वयं नीतिस्वरूप हैं। अपनी चर्चा से उन्होंने जीव को थोड़ा भी परिग्रह न करने, ऐश्वर्य एवं वैभव से विरक्त रहने, संतोष,

संयम, साधुता, सादगी, सच्चाई परिहृत-चिंतन, अपने कर्तव्य के पालन तथा सतत नाम जप-परायण रहने का पाठ पढ़ाया है। ये सभी उनकी आदर्श अनुपालनीय नीतियाँ हैं।

अपने प्राणों की बलि देकर भी जीवों की रक्षा करना, सदा उनके हित चिंतन में संलग्न रहना- इससे बड़ी नीति और क्या हो सकती है। कृपालु शिव ने यह सब कर दिखाया। 'मेरी प्रजाओं का हित हो इसलिए मैं इस विष को पी जाता हूँ।' ऐसा कह वे हलाहल पी गए और नीलकंठ कहलाए। तीनों लोकों की रक्षा हो गई। ●

हकीम लुकमान बचपन में गुलाम थे। एक दिन उनके स्वामी ने एक ककड़ी खानी चाही। मुंह में लगते ही जान पड़ा कि ककड़ी अत्यंत कड़वी है।

स्वामी ने ककड़ी लुकमान की ओर बढ़ा दी- 'ले, इसे तू खा ले!' लुकमान ने ककड़ी ले ली और बिना मुंह बिचकाये वे उसे खा गये। लुकमान के स्वामी ने समझा था कि इतनी कड़वी ककड़ी कोई खा नहीं सकता।

लुकमान इसे फेंक देगा परन्तु जब लुकमान ने पूरी ककड़ी खा ली तो वह आश्चर्यचकित होकर पूछने लगा- 'तू इतनी



ऐसी अवस्था में एक दिन आपके हाथ से कड़वी ककड़ी मुझे मिली तो उसे मैं क्यों

प्रसन्नता ही प्रसन्नता

कड़वी कैसे खा सका।'

लुकमान बोला- 'मेरे उदार स्वामी! आप मुझे प्रतिदिन स्वादिष्ट पदार्थ प्रेमपूर्वक देते हैं। आपके द्वारा प्राप्त अनेक प्रकार का सुख मैं भोगता हूँ।

ऐसी अवस्था में एक दिन आपके हाथ से कड़वी ककड़ी मुझे मिली तो उसे मैं क्यों

आनन्दपूर्वक नहीं खाऊँ।'

वह व्यक्ति समझदार, दयालु और धर्मात्मा था। उसने लुकमान का आदर किया। वह बोला- 'तुमने मुझे उपदेश दिया है कि जो परमात्मा हमें अनेक प्रकार के सुख देता है, उसी के हाथ से यदि कभी दुःख भी आये तो उस दुःख को प्रसन्नतापूर्वक भोग लेना चाहिए। आज से तुम गुलाम नहीं रहे।

-अनू किला, बसंत कुंज, दिल्ली

समृद्धि का मूल स्रोत है गाय



डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

गाय मानवमात्र को ईश्वर द्वारा प्रदत्त किया गया अनमोल तोहफा है। गाय मनुष्य के लिए श्रेष्ठ व पवित्र पशु है। हमारे वेद शास्त्रों में गाय को माता माना गया है। शुरुआत में बच्चा जब बोलना सीखता है तो गाय के बारे में जानकारी माता-पिता अथवा घर के अन्य सदस्यों से इसी शब्द (गाय माता) से बच्चे को बताते हैं। यह मनुष्य की माताओं की तरह बच्चों को दूध पिलाने की तरह जनसाधारण को दूध देती है। इसके शरीर में तैतीस करोड़ देवी-देवताओं का वास माना गया है। गाय भारतवासियों के जीवन का अभिन्न अंग है।

गाय समृद्धि का मूल स्रोत है। आयुर्वेद में गाय को खास स्थान दिया गया है। संसार के सभी देश गाय की महत्ता का बखान, उसके द्वारा प्रदत्त दूध से करते हैं। इसका दूध पौष्टिक व सतोगुण प्रधान है। धर्मशास्त्रों में गोदुग्ध शुचि माना गया है। गाय के दूध से बनी मिठाइयां देव-पूजा में काम आती हैं। गाय का दूध जहां शरीर को पुष्ट बनाता है वहीं इसमें अनेकानेक रोगों को मिटाने की क्षमता भी है। संग्रहणी, सूजन सहित अनेक साध्य-असाध्य रोग गोदुग्ध से मिट जाते हैं। अब आधुनिक वैज्ञानिक भी मानते हैं कि जो गुण गोदुग्ध में होते हैं, वे अन्य पशुओं के दूध में नहीं होते।

आयुर्वेद में पंचगव्य का उल्लेख है, जिसमें दूध, दही, घृत, मूत्र और गोमय (गोबर) को भी सम्मिलित किया गया है। चाहे धार्मिक अनुष्ठानों में या इलाज के मामले में गाय द्वारा पंचगव्य यथा दूध, दही, घृत, गोमय, मूत्र एवं गोरोचन (एक प्रकार का गंधयुक्त पीला द्रव्य जो गाय के पित्त से निकलता है) की महत्ता सभी स्थानों पर व्याप्त है। दूध, दही और घृत सहस्राब्दियों से हमारे जीवन के अभिन्न भाग रहे हैं। भारतीय संस्कृति में सबसे पवित्र पेय गोदुग्ध, गोमूत्र एवं गंगाजल को माना गया है।

भारतीय के हरेक धार्मिक शुभ कार्यों के प्रारंभ में शरीर शुद्धता के लिए पंचगव्य प्राशन का नियम है। गाय से मनुष्य को निम्न उत्पाद प्राप्त होते हैं- दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी, गोबर, गोमूत्र, गोरोचन और स्नेहपूर्वक चाटने पर लार। गाय के स्वतंत्र ये उत्पाद ही नहीं, इसके अंग-प्रत्यंग स्वास्थ्य रक्षक और भेषजीय गुणों से परिपूर्ण है। गोमाता शुचि है, इसके मुख को अपवित्र लेकिन उसके पीठ के पीछे का हिस्सा पवित्र माना गया है। इसलिए गोमूत्र व गोबर



दोनों ही पवित्र हैं।

गाय के बछड़े बड़े होकर भारतीय कृषि का स्तंभ बनते हैं। यहां तक इस पशु का अवशिष्ट (गोबर, मूत्र) तक अधिक लाभकारी है। गाय का गोबर तथा मूत्र गरीबी को समाप्त करने में मददगार बनता है। यह खाद ही नहीं बनाता बरन् यदि गोमय को ठीक ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो प्रदूषण मुक्त ऊर्जा का एक बड़ा आधार भी बन सकता है। रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करने से कुछ समय तक तो खेतों की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है लेकिन उसके पश्चात हर वर्ष ज्यादा खाद का प्रयोग करना पड़ता है, लेकिन गोबर की खाद जमीन की उर्वरता का स्थायी स्तंभ है। गोबर गैस (बायोगैस) से प्राप्त ऊर्जा का ग्रामीण इलाकों में भोजन बनाने एवं बिजली जलाने के अलावा अनेक तरह के प्रयोग किये जा सकते हैं। इससे ईंधन की तो बचत होती ही है, पर्यावरण में भी संतुलन बना रह सकता है।

गोमय वातावरण को पवित्र एवं जमीन को शुद्ध करता है। गांवों में गोबर से घर की दीवारों और आंगन को लीपा जाता है। इससे घर में गंदगी, संक्रमण करने वाले कीटाणुओं का शमन होता है तथा प्रदूषित वायुमंडल का असर भी ऐसे घर में प्रभावहीन होता है। गोबर से लीपी गई जगहों तथा दीवारों को मामूली बरसात का पानी नहीं करता। गोबर लिपे घरों में बिजली नहीं गिरती। गोबर व्याधि का शमन तो करता ही है, उसके उपलों (कंडों) से निकलने वाला धुआं स्वास्थ्य के लिए हानिकर नहीं बल्कि आकाश में भ्रमण करने वाले विषैले कीटाणुओं को नष्ट कर

प्रदूषण को समाप्त करता है। उपलों को जलाने के पश्चात शेष राख को कीटनाशक की भांति उपयोग करते हैं। अनाज में इसकी राख मिलाकर रखने से वह खराब नहीं होता है। राख को फसल पर डालने से कीटाणुओं का नाश होता है। मिट्टी में राख मिलाने से पौधे स्वस्थ तथा तैयार अनाज भी स्वास्थ्यप्रद तथा चमकदार होता है। गोबर की राख से खेतों का मुख्य पोषक तत्व पौटेशियम की पूर्ति हो जाती है। इसके प्रयोग से मिट्टी खराब न होकर बल्कि उसमें पोषक तत्वों में बढ़ोतरी होती है।

शरीर में गोबर का लेप करने से बदन शुद्ध होता है। जुएँ, लीख, रूसी, खुश्की तथा त्वचा रोग समाप्त होते हैं। सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के मौके पर घरों में गोबर का लेप सभी भोज्य वस्तुओं पर, घर के दरवाजों तथा सभी उपयोगी चीजों पर कर दिया जाता है जिससे वे खराब होने से बची रहती है। इटली के चिकित्सा शोधकर्ताओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि गोबर की महक से यक्ष्मा (टी.बी.) के कीटाणु समाप्त हो जाते जाते हैं। इसलिए सेनिटोरियमों में गोबर रखने का सुझाव दिया जाता है।

गोमूत्र का तासीर उष्ण होती है। इसका स्वाद कटु, तीक्ष्ण एवं कसैला होता है। यह अग्नि प्रदीपक होता है तथा वायु, कफ की बीमारियों का शमन करता है। धार्मिक शुभ कार्यों में शरीर शुद्धि हेतु गोमूत्र का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार गाय समृद्धि व प्रचुरता का परिचायक है, यह सृष्टि के पोषण का स्रोत है, वह जननी है।

—जन शिक्षण इंटर कॉलेज
प्रेमपुर बड़ागांव, कानपुर नगर-209402

बरसात में स्वास्थ्य की देवभाल



शिवप्रकाश अरोड़ा

प्रकृति प्रदत्त मौसम अपने समय अनुसार बदलते रहते हैं। हर मौसम अपनी विशेषता लिए हुए होता है एवं अपनी सुगंध बिखेरता है, वर्षा ऋतु में इसकी मनोहर छटा देखते ही बनती है, हर जगह भीनी भीनी सुगंध एवं हरियाली का दृश्य नजर आता है। बरसात की फुहार सबको अच्छी लगती है, इसलिये इसका इन्तजार सबको रहता है। इस मौसम के पूर्व देश के अनेक हिस्सों विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में भीषण गर्मी पड़ती है, जल की कमी सर्वत्र नजर आती है। भारत एक कृषि प्रधान देश होने पर इसकी आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है। बरसात के भीगे-भीगे मौसम में तरह-तरह के गर्म नमकीन खाने की इच्छा एवं काम वासना तृप्ति की इच्छा बलवती हो जाती है। जबकि शरीर में पानी की कमी के साथ आंतरिक शक्ति में भी कमी हो जाती है। बार-बार गर्मी एवं बरसात आने से मौसम भी बदलता रहता है जिससे थोड़ी-सी असावधानी से व्यक्ति बीमार हो जाता है। बदहजमी, गैस, खांसी-जुखाम के अलावा पीलिया व हैजा भी हो जाया करता है। इसलिये इस मौसम में विशेष रूप से सावधानी रखने का प्रावधान भारतीय संस्कृति में रखा गया है।

तन व मन को संयमित रखने के कारण

- वर्षा का पानी पृथ्वी के सम्पर्क में आने से दूषित हो जाता है। जगह-जगह बाढ़, नदी-नालों का पानी 'नगर जल संग्रहण क्षेत्र' में पहुँचकर पानी को और अधिक दूषित कर उसे भारी बना देता है।
- कीटाणुनाशक दवाइयों से पानी प्राकृतिक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के गुणों से रहित हो जाता है, ऐसे पानी से अम्ल व विषाक इत्यादि में शीघ्र वृद्धि होती है, जिससे उदर रोग शीघ्र होने की संभावना रहती है।
- फलों व सब्जियों में स्वतः कीटाणु पनपते हैं। पत्तेदार सब्जियों में तो इनकी बहुतायत रहती है।
- कूलर में संग्रहित पानी में भी मच्छर पैदा हो जाते हैं जो बीमारियाँ फैलाने में सहयोग करते हैं।
- घर के बाहर कूड़े करकट में, गली में रुके हुए पानी में तथा नालियों के पानी में मच्छर व कीटाणुओं की उत्पत्ति सहज में होती है।
- शरीर में आंतरिक रूप से प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाने से सिरदर्द, जुकाम, बदन दर्द, मलेरिया, उल्टी होना, डेंगु ज्वर, पतले दस्त, पीलिया, टाइफाइड इत्यादि बीमारियाँ होने की



संभावनाएं बढ़ जाती है।

कोई भी व्यक्ति बीमार नहीं होना चाहता परन्तु थोड़ी सी असावधानी से बीमारी उसे जकड़ लेती है, ऐसे में यह विचारणीय प्रश्न है कि वह क्या करे व क्या नहीं करे?

क्या करें?

- पानी को उबाल कर ठंडा कर के यानि पूर्ण शुद्ध करके ही पीएं।
- खाना बनाते समय, खाना परोसते समय व खाने के समय हाथ अच्छी तरह साबुन से साफ करें।
- रसोई घर के बर्तन साफ रखें, रसोई घर में धूप को आने दे, एगजोस्ट फैन का उपयोग करें, संभव हो तो कुछ समय के लिए बर्तनों को भी धूप में रखे।
- अपने स्वयं के कपड़े व बिस्तर साफ व स्वच्छ रखे, कीटाणु रहित रखने के लिए आवश्यक पदार्थ का उपयोग करें।
- सब्जियों व फलों को अच्छी तरह से धोने के बाद उपयोग करें, पत्तेदार सब्जियों को 4 या 5 बार नमक के पानी से धोएं, बनाने से पहले यह अवश्य देख ले कि उनमें बहुत छोटे-छोटे कीटाणु तो नहीं हैं।
- घर के आस-पास कीटाणुनाशक दवाइयाँ या फिनायल का प्रयोग करें।
- घर में अपने स्नान घर एवं शौचालय को पूर्ण रूप से साफ रखें, जो शौचालय काम में नहीं आ रहे हैं या बंद हैं उन्हें खोलकर उनमें आवश्यक सफाई करवाकर छिड़काव करें।

बार-बार गर्मी एवं बरसात आने से मौसम भी बदलता रहता है जिससे थोड़ी-सी असावधानी से व्यक्ति बीमार हो जाता है। बदहजमी, गैस, खांसी-जुखाम के अलावा पीलिया व हैजा भी हो जाया करता है। इसलिये इस मौसम में विशेष रूप से सावधानी रखने का प्रावधान भारतीय संस्कृति में रखा गया है।

- पुराने व संग्रहित मसालों को काम में लेने से पहले अवश्य देख ले कि उनमें भी जीव जन्तु तो उत्पन्न नहीं हो गए हैं।
- कूलर को साफ रखे।
- घर की पानी की टंकी ढकी हुई रखे एवं देखे कि उसका पानी काम लेने योग्य है या नहीं।
- अधिक श्रम व सहवास पर संयम रखे।
- रोजाना सबरे का भ्रमण, हल्का व्यायाम, प्राणायाम व ध्यान में कम से कम 40-60 मिनट का समय दें।

भोजन

- वर्षाकाल में भोजन सुपाच्य, ताजा, सात्विक, कम घी व तेल युक्त गरम-गरम लेना चाहिए। भोजन में एक समय खीचड़ी (मूंग की दाल-चावल व सब्जियों के साथ) या दलिया सब्जियों के साथ लिया जाना स्वास्थ्य के लिए ठीक रहता है।
- भोजन के साथ सब्जियों का सूप या मूंग की दाल का सूप भी लिया जा सकता है।
- भूख से कम भोजन करें।
- भोजन करते समय बीच में पानी नहीं पीना चाहिए, बहुत जरूरी हो जाये तो हल्का गर्म पानी थोड़ी मात्रा में लिया जा सकता है।
- चाय या कॉफी के स्थान पर अदरक, तुलसी, पौदिना, मैथी, गुड़ का काढ़ा लिया जा सकता है, जो इस मौसम में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ भूख को भी संतुलित करता है। बाजार में आयुर्वेदिक दवाइयों की दुकान पर प्राकृतिक चाय या प्रज्ञा पेय के नाम से भी इससे मिलता जुलता मिश्रण मिल जाता है।

क्या नहीं करें?

- सार्वजनिक नल के पानी या दूषित पानी का उपयोग सीधे रूप से पीने के लिए नहीं करें।
- बाजार में खुले स्थानों पर चाट पकौड़ी, नमकीन, दही, चटनी के साथ नहीं खाएं।
- सड़े-गले या पुराने फल व सब्जियों को सस्ता देख कदापि नहीं खरीदे न ही उनका उपयोग करें।
- घर के बाहर बच्चों व स्वयं को बरसात के बहते पानी में नहीं नहाएं। किसी कारण चलना पड़े तो नंगे पांव कदापि नहीं चले।
- सत्तू, दही, कोल्ड ड्रिंक्स तथा बाजारी पेय का उपयोग नहीं करें।
- रात में मच्छरों वाली यानी खुली जगहों पर भोजन नहीं करें।

-डी-50 कमला नेहरु नगर-प्रथम जोधपुर 342009 (राजस्थान)



आचार्य सुदर्शन

हमारे जीवन में प्राण का ही महत्व है। प्राण के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं। शरीर तभी तक शुभ माना जाता है। जब तक इसमें प्राण रहता है। बिना प्राण के यह शरीर मिट्टी के सिवा कुछ नहीं है। यह शरीर पांच तत्वों से बना है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। आकाश से वायु का जन्म होता है, वायु से अग्नि का, अग्नि से जल का और जल से पृथ्वी का जन्म होता है। इन्हीं पांच तत्वों से हमारा शरीर बना है। शरीर में प्राण तत्व सूर्य से आता है। सूर्य शक्तिपुंज है। इसलिए सूर्य को प्राण दाता माना गया है। वहीं से प्राणरूपी ऊर्जा का सम्पोषण होता है। हमारे शास्त्रों में प्राण और अग्नि दोनों को एक ही माना गया है। क्योंकि दोनों सूर्य से ही प्राप्त होते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में प्राण ऊर्जा के सम्पोषण के लिए गायत्री मंत्र, जो सूर्य का अस्तवन् है, का जाप और धारण का महत्व बताया गया है।

मंत्र का अर्थ है मन का तंत्र। मन को संचालित करने की विधि। एक तंत्र भी होता है जो शरीर को संचालित करता है और एक यंत्र होता है जो वस्तुओं को अणुप्राणित करके संचालित करता है। इसलिए मात्रिक, तांत्रिक और यांत्रिक का अलग-अलग विधान है। मंत्र शक्ति मन को प्रदीप्त करने की क्रिया है। हमारे संतों ने बहुत गहन अध्ययन कर अनुभव प्राप्त किया और अपने अनुभवों को दिव्य शक्तियों से पोषित करके सूत्र रूप में व्यक्त किया। इसी को मंत्र कहते हैं। मंत्र में थोड़े से शब्द होते हैं और एक-एक अक्षर और शब्दों में दिव्य शक्ति भरी रहती है। उसमें पावर भरा रहता है। इसलिए मंत्रों के शब्द प्रतीक रूप में प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य रूप से उसका अर्थ नहीं लगाया जा सकता क्योंकि वे सभी शब्द प्रतीक के रूप में लिखे गये हैं। जैसे 'ऊँ' हवीं, क्लीं,' इसका अगर अर्थ लगाएँ तो मुश्किल है। क्योंकि ये सब प्रतीक हैं। इनमें शक्ति भरी हुई है। भले ही बाहर से इसका अर्थ नहीं समझ में आता, लेकिन यह है बहुत प्रभावशाली। जैसे-एटमबम को बाहर से एक वस्तु के रूप में दिखाई देता है लेकिन जब इसका विस्फोट होता है तो भयंकर तबाही मच जाती है वैसे ही मंत्र है। मंत्र की शक्ति कितनी है इसका अंदाज लगाना मुश्किल है। जब इसकी विधि का प्रयोग किया जाता है। तभी मंत्रों का विस्फोट होता है।

हमारे देश में अनेक संतों ने मंत्र शक्ति का प्रयोग किया। जैसे गायत्री मंत्र का विश्वामित्र ने सर्वप्रथम सृजन किया, मार्कण्डेय ऋषि ने महामृत्युंजय मंत्र का सृजन

शक्ति के स्रोत हैं मंत्र



किया, वाल्मिकी ने 'रामायण' में, वेदव्यास ने 'गीता' में और तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में और 'विनय पत्रिका' में अनेक मंत्रों की रचना की। दुर्गासप्तशती, रामरक्षास्तोत्र, हनुमत रक्षाकवच जैसे अनेक मंत्रों की रचना की है। प्रत्येक मंत्र का अलग-अलग प्रभाव है महामृत्युंजय मंत्र का जाप अकाल मृत्यु से बचने के लिए किया जाता है, गायत्री मंत्र बुद्धि विकास के लिए राम, हनुमान, महादेव, दुर्गासप्तशती के मंत्रों की जाप सर्वविध कल्याण के लिए विधि पूर्ण किया जाता है।

मंत्रों के जाप के लिए मंदिर को इसलिए चुना जाता है कि मंदिर में बैठकर मंत्रों का उद्घोष करने से गुम्बजाकार मंदिर में शब्द टकराकर पुनः हमारे शरीर पर गिरता है। जिससे शरीर के रोम-रोम को लाभ होता है। घरों में भी एकांत स्थान पर बैठकर मंत्रों के जाप से बहुत लाभ होता है। कुछ भौतिक और पदार्थवादी लोग मंत्रों की प्रमाणिकता पर संदेह प्रकट करते हैं। दरअसल, संदेह प्रकट करने वाले वैसे लोग होते हैं, जिन्हें सृष्टि के रहस्य का, सृष्टि के विज्ञान का कुछ पता नहीं होता, वे किसी साधारण विज्ञान को पढ़कर संदेह प्रकट करते हैं। वे भूल जाते हैं कि विज्ञान विषय में भी गणित संदेह प्रकट करते हैं। वे भूल जाते हैं कि विज्ञान विषय में भी गणित पढ़ाया जाता है तो वहां भी कहा जाता है कि मान लो गणित का प्रारंभ ही 'मान लो' से होता है जब गणित में मान लिया जाता है तो मंत्रों की शक्ति को मानकर हम क्यों नहीं प्रयोग करते। बिना प्रयोग किए हुए कोई निर्णय करना उचित नहीं। दूसरी बात है कि अगर इन मंत्रों में शक्ति नहीं होती तो लाखों वर्षों से इसका प्रचलन और प्रयोग कैसे हो रहा है। इसलिए इसमें तर्क करना महज अज्ञानता है।

रामायण और महाभारत में राम और अर्जुन को अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण और ब्रह्मास्त्र चलाते हुए दिखाया गया है। राम जब बाण चलाते हैं तो उसके पहले हाथ ऊपर कर आंख बंद करके कुछ स्मरण करते हैं। यह क्रिया मंत्र

शक्ति का स्मरण है। मंत्र शक्ति से वे बाणों को शक्ति प्रदान करते हैं फिर साधारण बाण अपार क्षमता वाला बन जाता है। इन बाणों में मंत्र शक्ति से दिव्यता उतर जाती है। यह मंत्र शक्ति का प्रभाव है। इसलिए मंत्र शक्ति की अपार क्षमता का बोध रखना अनिवार्य है। मंत्रों में बड़े छोटे-छोटे शब्द होते हैं। उन शब्दों में अमोघ शक्ति भरी रहती है। 'रामचरितमानस' में गोस्वामीजी ने दोहा और चौपाई के रूप में अनेक मंत्रों की रचना की है। उन मंत्रों को पहचान कर आज भी लोग मनोवांछित फल प्राप्त कर रहे हैं। सुंदरकांड में तो मंत्रों का भंडार है। आज भी लोग जब कहीं जाते हैं तो 'प्रवसिनगर कीजै सब काजा' का पाठ करके जाते हैं और सफलता प्राप्त कर लौटते हैं। कुंवारी लड़कियां माता गौरी का पूजन करती हैं और 'जय-जय-जय गिरिराज किशोरी' का पाठ करती हैं। संकटों से मुक्ति के लिए बीमारी एवं पारिवारिक कलह से मुक्ति के लिए मंत्र बताए गए हैं। विनय पत्रिका में तो ऐसे-ऐसे अमोघ मंत्र हैं जिनका पाठ करने से तुरंत लाभ होता है। भगवान भोलेनाथ से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए चतुर्दशी को उनके प्रिय मंत्रों का पाठ किया जाता है जिससे आज लाखों व्यक्ति लाभ उठा रहे हैं।

मंत्र पाठ के लिए केवल इतना करना पड़ता है कि उसकी विधि का ज्ञान हमें हो और शब्दों का ठीक से उच्चारण करें। स्वयं कर सकते हो तो ठीक है अगर कोई कठिनाई हो तो इसकी विधि अपने गुरु से पूछ कर आज से पाठ प्रारंभ करें और मंत्रों की चमत्कारिक शक्ति का स्वयं अनुभव करें।

मंत्रों के लिए तो विश्वास और भरोसा होना चाहिए तभी मंत्रों के प्रभाव से हम परिचित हो सकते हैं। व्यापार में सफलता, बीमारी से मुक्ति, सुख और शांति के लिए भी अनेक मंत्रों का विधान है। सर्वमंगल सफलता के लिए प्रतिदिन इन मंत्रों का पाठ करें-

“दिव्यं देहि में शक्ति, दिव्यं देहि शांति में दिव्यं देहि आयुष्यम्, यशोर्बुद्धि समुज्ज्वला।”



आचार्य महाश्रमण

नियति और पुरुषार्थ का समन्वय

नियति और पुरुषार्थ, ये दोनों वाद हमारे जीवन में साथ जुड़े हुए हैं। अनेकान्त के आलोक में इन्हें समझा जा सकता है। जैन दर्शन आत्मकर्तृत्व में विश्वास करता है। व्यक्ति के सुख-दुःख में कर्मवाद अथवा आत्मकर्तृत्व का सिद्धांत लागू होता है। किन्तु कुछ स्थितियों में पुरुषार्थ आत्मकर्तृत्व निष्प्रभावी रहता है।

सत्य के शोध में अनाग्रह और सत्य की साधना में आग्रह होना चाहिए। यथार्थ के आकाश में उड़ान भरने के लिए अनाग्रह और आग्रह दोनों पंखों की आवश्यकता रहती है। जिस व्यक्ति ने केवल अंध आग्रह करना ही सीखा है, उसने सत्य के प्रवेशद्वार को बन्द कर दिया। जिसने केवल अनाग्रह को ही सीखा है, उसमें दृढ़ता-शून्यता रहती है। जिसने दोनों को सीखा है और दोनों का समुचित स्थान पर सम्यक् प्रयोग करता है, वह वस्तुस्थिति से अभिज्ञ बन सकता है। यह अनेकान्त का प्रयोग है।

नियति और पुरुषार्थ, ये दोनों वाद हमारे जीवन में साथ जुड़े हुए हैं। अनेकान्त के आलोक में इन्हें समझा जा सकता है। जैन दर्शन आत्मकर्तृत्व में विश्वास करता है। व्यक्ति के सुख-दुःख में कर्मवाद अथवा आत्मकर्तृत्व का सिद्धांत लागू होता है। किन्तु कुछ स्थितियों में पुरुषार्थ आत्मकर्तृत्व निष्प्रभावी रहता है।

जीव के भव्य और अभव्य होने में किसी कर्म का उदय अथवा विलय कारणभूत नहीं है। यह अनादिपारिणामिक भाव है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। कोई भी पुरुषार्थ अभव्य को भव्य नहीं बना सकता। एक पदार्थ जीव है और एक पदार्थ अजीव है। जीव के जीव होने में और अजीव के अजीव होने में किसी कर्म का योगदान नहीं है, यह भी अनादिपारिणामिक भाव है, स्वाभाविक स्थिति है। यह कुछ भी कृत नहीं है, अकृत है। भव्य को अभव्य और अभव्य को भव्य, जीव को अजीव तथा अजीव को जीव बनाना पुरुषार्थ के वश की बात नहीं है। यहां पुरुषार्थ सार्थक नहीं हो सकता। यह पुरुषार्थ की सीमा से बाहर का क्षेत्र है, अपितु यह पुरुषार्थ-निरपेक्ष विशुद्ध

नियति का क्षेत्र है। कोई भव्य है, यह उसकी नियति है। कोई अभव्य है, यह उसकी नियति है। यह पुरुषार्थ-अप्रभावी नियति है।

अनादिपारिणामिक भाव विशुद्ध नियति का क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त आमतौर पर हमारे जीवन-व्यवहार में नियति और पुरुषार्थ दोनों का योग रहता है। किसी एक को एकान्त रूप से ग्रहण नहीं किया जा सकता। जहां तक मैं समझ पाया हूँ नियतिवादी को भी पुरुषार्थ का प्रयोग तो करना ही होता है। क्या नियतिवादी क्षुधा शांति के लिए हाथ से कवल ग्रहण कर मुंह में नहीं रखता? क्या वह शौचार्थ शौच स्थान पर नहीं जाता है? क्या वह अपने शरीर की सफाई नहीं करता है? क्या नियतिवादी अन्य कार्य नहीं करता है? यदि वह करता है तो इसका अर्थ हुआ कि उसे (नियतिवादी को) पुरुषार्थ का सहारा तो लेना ही पड़ता है। हां, यह ठीक है कि जैसा सर्वज्ञ ने जाना-देखा है, वैसा ही हुआ, होता है और होगा। किन्तु इस तथ्य के आधार पर सर्वथा पुरुषार्थहीन नहीं बना जा सकता।

भगवान ऋषभ ने जान लिया कि उनका पौत्र मरीचि इस अवसर्पिणी काल का, भरत क्षेत्र का अन्तिम तीर्थंकर होगा। जैसा जाना, वैसा ही होना था, वह हो गया, किन्तु भगवान ऋषभ ने यह भी तो जाना होगा कि मरीचि साधनामय पुरुषार्थ करेगा, तीर्थंकर नाम कर्म प्रकृति का बंधन करेगा तब कहीं तीर्थंकर बनेगा। यदि ऋषभ मरीचि के

जीव के इस प्रकार के भावी पुरुषार्थ को नहीं देखते तो मरीचि के तीर्थंकर होने की स्थिति को क्या वे अपने ज्ञान से देख पाते? नियति की पृष्ठभूमि में आमतौर से पुरुषार्थ का योग भी किसी न किसी रूप में रहता ही है। पुरुषार्थ का होना भी एक नियति है, ऐसा तो माना जा सकता है, किन्तु पुरुषार्थ को सर्वथा नकारा नहीं जा सकता।

नियति से जो होना है, वह तो होगा ही। भले ही आदमी नियतिवाद को माने या न माने। नियति हमारे हाथ की चीज नहीं है। हमारे हाथ की चीज पुरुषार्थ हो सकता है। इसलिए आदमी को यथासंभव सत्पुरुषार्थ का फल अच्छा ही होता है। इस प्रकार नियतिवाद और पुरुषार्थ वाद-दोनों की आसंभना हो जाती है। नियति से जो होना है, वह तो होता ही है, उसमें कुछ, करने की अपेक्षा नहीं। पुरुषार्थ करने से पुरुषार्थ देवता की भी आराधना हो जाती है। इसलिए व्यक्ति पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ ही करने की चीज है, नियति तो होने की चीज है। पुरुषार्थ है, नियति है। इसलिए पुरुषार्थी व्यक्ति के जीवन में नियति और पुरुषार्थ दोनों का समन्वय हो सकता है। नियति और पुरुषार्थ की सीमा का अवबोध आवश्यक है। 'नियति' शब्द का प्रयोग मैंने भवितव्यता के अर्थ में किया है और 'पुरुषार्थ' शब्द का प्रयोग प्रयत्न और पराक्रम के अर्थ में किया है। ●

स्वास्तिक लाए घर में समृद्धि

स्वास्तिक का अर्थ है शुभ, मंगल एवं कल्याण करने वाला। स्वास्तिक के चारों ओर की चार सीधी रेखाएं चारों दिशाओं का प्रतीक है। यह शुभ प्रतीक अनादिकाल से विद्यमान होकर संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त रहा है।

हमारे भारतीय समाज में सभी व्रत, पर्व, त्यौहार, पूजा एवं मांगलिक कार्यों के अवसर पर सिन्दूर या कुमकुम से स्वास्तिक बनाया जाता है। विष्णु पुराण एवं गणेश पुराण में स्वास्तिक को भगवान विष्णु एवं श्री गणेश का प्रतीक बताया गया है। स्वास्तिक से वास्तु दोष भी दूर होते हैं।

वास्तु शास्त्र भी दोष निवारण के लिए स्वास्तिक का उपयोग मानता है। स्वास्तिक वास्तु दोष दूर करने का महामंत्र है। स्वास्तिक ग्रह शांति में लाभदायक है।

साथ ही धन वृद्धि भी करता है। इसलिए आपको भी अपने धार में वास्तु दोष दूर करने के लिए और धन वृद्धि के साथ स्वास्तिक के सभी लाभ उठाने के लिए अष्टधातु से निर्मित स्वास्तिक पिरामिड यंत्र को पूर्व की तरफ दीवार पर बीच में टांगना चाहिए।

-मुकेश अग्रवाल, दिल्ली



APPROPRIATE COUNSEL FOR PATH OF RIGHTEOUSNESS

Radha Prathi

If one has been observant, one must have often noticed that people have a lot of issues in voicing their opinions during a discussion.

While some of them want to butt in with their views every now and then, there are others who bide their time and then there are yet others who prefer to remain the poster on the wall.

The nature of the discussion could be formal or otherwise but the outlook of the majority is generally taken into consideration.

The arguments and solutions, if any, which follow such debates, may or may not be in the best interests of all concerned.

At such times, one is generally thrown into a quandary for want of appropriate counsel.

The finer points of the case which involve human values, ethos, time, place and circumstances are often overlooked in favour of what appeals to the masses in the light of justice.

Analysing a given situation and arriving at a suitable decision can be a challenging task.

If the matter involves intricacies of dharma which seems to defy plain logic at the outset then it can be excruciatingly difficult to arrive at a palpable conclusion.

It often takes a great mind and a kinder heart for a person to chart out a



course of action that will not swerve from the path of righteousness.

An instance from the Mahabharata highlights the importance of cool and calculated thinking which explores every option before taking the extreme step.

When the Pandavas completed their period of exile and a year in incognito, they discussed their future plans in the court of Virata with the finest of men who were on their side.

Though declaring war against the Kauravas was articulated by the majority, Krishna brushed it aside.

Instead, he suggested trying out peace talks with the enemy camp, despite knowing the vindictive nature of

the Kauravas which would trigger off the impending war.

Most of the warriors on the side of the Pandavas were deeply disappointed with Krishna's suggestion, but deep inside they knew that his decision must be justified and they carried out his plan. This episode can serve as a guide when we are faced with testing times.

We can certainly do well, to analyse a matter threadbare, weigh its pros and cons and approach it with a win-win theme before taking the extreme step.

Then, one can be guilt-free, stay clear of blame games and expect the continued support of one's team that can see us through any situation. ●

PRAYER, A TETE-A-TETE WITH SUPREME POWER

Dorothy Victor

Martin Luther made this observation on prayer: "Prayer is the most important thing in my life. If I should neglect prayer for a single day, I should lose a great deal of the fire of faith." Prayer is the spark from which the fire of faith is ignited bringing light into

our lives.

Prayer which is nothing but a tête-à-tête with a higher power can take various forms. From songs of gratitude to monologues seeking favours, prayers connect man to God, resulting in a lingering peaceful experience.

This is because prayers help man to put his worries into a verbal form. Once

worries are translated into concrete words and presented before a supernatural power, a process of unloading of burdens takes place. Besides, during prayer an invisible energy flows out, from the immortal to the mortal. Scientist Dr Alexis Carrel, said, "Prayer is the most powerful form of energy one can generate. It is like radium, a source of luminous, self-generating energy." And like any other form of energy,

LIVING IN THE PRESENT MATTERS

Leela Ramaswamy

Whoever enters this world comes with a definite time-span. There is, as we all know, 'a time to be born and a time to die'.

This period, moreover, can be divided into the past, the present and the future. How the individual adapts to these will determine the degree of satisfaction and happiness that he or she derives from life.

Generally speaking, it is the past that each of us is most familiar with. It is stored in the memory and one can go back to it with the help of recall and imagination. Reverting to the past certainly has its uses. Good and happy memories can not only bring happiness but also guide and inspire us.

However, what most of us tend to remember and dwell on are the sorrowful events that have taken place and the mistakes that have been made. We brood over them and indulge in self-pity and even despair, quite forgetful of the fact that the past is both unchangeable and irretrievable.

Mulling over what has happened is of little use; it merely makes us prisoners of the past, constantly given to resurrecting things that are best forgotten.

If, however, we are willing to learn from what has been, then we reap one of the finest advantages that the past can confer. We can avoid the mistakes that we



What about the future? Unlike the past, it holds the promise of better things to come. It is yet to be and the beacon of hope we shine on it makes it bright and wonderful.

have made and develop better habits of thought, action and words.

What about the future? Unlike the past, it holds the promise of better things to come. It is yet to be and the beacon of hope we shine on it makes it bright and wonderful. We believe that there is opportunity yet to achieve our heart's desires. But often enough these dreams remain just that – dreams. The future has its own realities and its own way of panning out. It may be far removed from that woven by the imagination. Sadly, some of us

work feverishly, postponing simple joys and pleasures and assiduously preparing for life, while life is really passing us by.

With the past largely redundant and the future uncertain, what we are left with is the present. However, it is indeed the one thing that is within reach and the one that holds inherent meaning and value.

As Longfellow pertinently put it:

**Trust no Future however pleasant,
Let the dead Past bury its dead,
Act, act in the living Present,
Heart within, and God overhead.**



it has the power to enlighten the darkness that engulfs man's life from time to time. Prayer helps man to transcend above any problem. Mahatma Gandhi would often say, "Without prayer, I should have been a lunatic long ago." It is like a soothing balm on a throbbing sore that can relieve

pain, bring therapeutic results and eventually complete healing.

Yet, prayer is seldom used to solve life's many troubles. This is because prayers are normally sought as a last resort and with lukewarm belief in its powers. It is often a one-sided conversation dominated by "requests." In its best form, prayer however, ought to be a two-way communication allowing God to speak to us. In his book, 'The Plain Man's Book of Prayers,' author William Barclay remarks, "Prayer is not a way of making use of God. It is a way of offering ourselves to God in order that He should be able to make use of us. It may be that one of our greatest faults in prayer is that we talk too much and listen too little. When prayer is

at its highest, we wait in silence for God's voice to us."

Tapping the real power of prayer is thus not a highly guarded secret of a few. Rather it is as simple as taking some quiet time in a meaningful dialogue with God. As American Rabbi, Harold S Kushner explains, "People who pray for courage and strength to bear the unbearable very often find their prayers answered. Their prayers helped them tap hidden reserves of faith and courage that were not available to them before." ●





गोपाल शर्मा

संभव है समृद्धि और भाग्य में वृद्धि

जीवन में कई परेशानियां आती हैं। जिससे पार पाना ही जिंदगी का नाम है। परन्तु, कुछ परेशानियां ऐसी होती हैं जो आपको हैरान व परेशान करती हैं। इससे बचने के कुछ टोटके होते हैं। जिसे अपनाकर आप कुछ हद तक बाधाओं से मुक्ति पा सकते हैं।

अज्ञात भय दूर करें: आप किसी अज्ञात भय से दुःखी रहते हैं, तो शुक्ल पक्ष के मंगलवार से रोजाना हनुमान मंदिर जाना शुरू करें और पूरे विश्वास के साथ हनुमानजी की भभूत लगाएं। इस तरह से चालीस दिन तक करें। अज्ञात भय का नामोनिशान तक नहीं रहेगा।

खुद को बचाने के उपाय: कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें दूसरों की नजर जल्दी लग जाती है। ऐसे लोगों को गुंजा की माला या गुंजा ब्रासलेट धारण करना चाहिए। इससे उन पर नजर नहीं लगती है।

मित्रता को बचाने के उपाय: आपको किसी व्यक्ति से गहरी मित्रता है और आप चाहते हैं कि आपकी मित्रता को कोई नजर न लगे, तो आप दोनों को ही एक-दूसरे के जन्म दिन पर स्फटिक से बनी वस्तुएं भेंट स्वरूप देनी चाहिए।

गृह क्लेश से बचने के उपाय: आप गृह-कलह से परेशान हैं, तो सूर्योदय से पूर्व ही घर में झाड़ू-पोछा लगाएं। स्नान करने के बाद सूर्य को जल चढ़ाएं। इस उपाय से कुछ ही दिनों में



गृह-कलह धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है।

सफलता के उपाय: आपकी नौकरी या व्यवसाय में मंदी आ गई है। आप जो भी काम कर रहे हैं, उसमें सफलता नहीं मिल रही है, तो इसका एक कारण शनि की साढ़ेसाती या ढैया भी हो सकता है। आप शनिवार को पीपल पर जल चढ़ाएं तथा पीपल के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएं। शिव मंदिर या पीपल के पेड़ पर काले तिल भी चढ़ाएं आपको इससे काफी लाभ होगा। **अदृश्य बाधाओं से बचने के उपाय:** आपको किन्हीं अदृश्य बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है या आप डरे-डरे से रहते हैं, तो बहते जल में बादाम बहाएं। श्मशान घाट पर पीपल का पेड़ लगावाएं। हल्दी की आठ गांठें, आठ गुरुवार तक

लगातर किसी मंदिर में चढ़ाएं और पूर्णिमा के दिन किसी बुजुर्ग व्यक्ति को आदरपूर्वक भोजन कराएं तथा आठमुखी रुद्राक्ष धारण करें।

जीवन की परेशानियां की दूर करने के लिए: आपके जीवन में बार-बार परेशानी और अड़चने आ रही हों, तो मंगलवार के दिन हनुमानजी के मंदिर में जाकर गुड़ और चने का प्रसाद चढ़ाएं तथा प्रसाद को मंदिर में बांट दीजिए।

धनाभाव दूर करने के लिए: आप धनाभाव की वजह से परेशान हैं, तो मछली और पक्षियों को चावल और ज्वार का दाना खिलाइए। इससे जल्दी ही आप धनाभाव के संकटों से मुक्त हो जायेंगे।

-भजन सम्राट, दिल्ली

आह है सम्पूर्ण उपचार प्रक्रिया



अश्विनी कुमार

**अकारादि-हकारान्तमशेषा कारसंस्थितम्।
अजस्रमुच्चरन्तं स्वमात्मानं समुपास्महे॥**

—माण्डूक्य उपनिषद्

‘अ’ से ‘ह’ तक वर्णमाला के अक्षरों से बनने वाले शब्दों का संक्षिप्त नाम अह है। जिसका अर्थ है- ‘अ’ से ‘ह’ तक। इसी अह अथवा अह का मूल ‘ऊँ’ ब्रह्माण्ड के प्रत्येक शब्द का प्राण तत्व यानी अभिधा है। जिस प्रकार वृक्ष से हर साख, हर पत्ता व हर डाली जुड़ी होती है ठीक वैसे ही ब्रह्माण्ड के संपूर्ण अक्षर, वर्ण, शब्द अथवा वाणी से आबद्ध व सम्बद्ध है। ‘ऊँ’ में प्रयुक्त हर शब्द के उच्चारण से जुड़ा होता है। आह पीड़ा को व्यक्त अवश्यक

करता है पर इसका उच्चारण लोगों को राहत पहुंचाता है साथ ही आस-पास के वातावरण में सहानुभूति के प्रेरक तत्वों को भी क्रियाशील करता है। आह भरने से किसी को दर्द से राहत मिलती है, किसी को आनंद आता है और हो सकता है यह बहुतों के लिए अपशकुन हो, लेकिन मेडिकल साइंस में इसे स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना गया है।

बेल्जियम विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया है कि आह भरने से हमारी श्वसन प्रणाली लचीली हो जाती है जो श्वसन की प्रक्रिया को पुनर्संयोजित करती है। आह भरते समय हवा अंदर की तरफ खींचकर हम अपने फेफड़े को दोगुने आकार में फैला लेते हैं। इसके बाद जब हम सांस छोड़ते हैं तो दिल की धड़कन और सांस की गति दोनों ही संतुलित हो जाती हैं। शोधकर्ताओं का यह भी कहना है कि लगातार एक ही गति से सांस लेने पर फेफड़े सख्त हो जाते हैं। जिससे उनमें ऑक्सीजन लेने की क्षमता घटती है। तनाव, पीड़ा व दुःख में जब हमारी

धड़कनें अनियंत्रित हों तो आह भरना लाभप्रद होता है। इससे फेफड़े के हवा के प्रकोष्ठ ढीले होकर आराम पहुंचाते हैं।

हमने अपने आस-पास कई सारे लोगों व बुजुर्गों को दर्द से कराहते हुए देखा होगा। लोग ऐसा क्यों करते हैं, क्या हमने कभी जानने की कोशिश की है? वस्तुतः देवनागरी लिपि की वर्णमाला अ से लेकर ह तक है। जब हम आह या अह कहते हैं। तो इसमें वर्णमाला के सभी अक्षर शामिल हो जाते हैं, वास्तव में आह देवनागरी लिपि का संक्षिप्त रूप प्रकट करता है जिसके उच्चारण से समस्त वर्णों का ध्वनि-स्फोट एक साथ हो जाता है। आह स्वयं में एक संपूर्ण भावनात्मक अभिव्यक्ति व उपचार है। आह के मूल में ‘ऊँ’ है जो समस्त मंत्रों, तंत्रों और यंत्रों को एक साथ एकाउंट के आधार पर राहत प्रदान करता है। अर्थात् सच्चाई व ईमानदारी से युक्त कर्म करने वाले आह करने से औरों की अपेक्षा अधिक शांति व सुकून का अनुभव करते हैं। ●

समृद्ध सुखी परिवार

सुखी और समृद्ध परिवार का मुखपत्र

विज्ञापन और
सदस्य बनाने
हेतु प्रतिनिधि
संपर्क करें

पत्रिका के स्वयं ग्राहक बनें, परिचितों, मित्रों को ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें



कवर अंतिम पृष्ठ 25,000
कवर द्वितीय/तृतीय 20,000
भीतरी रंगीन पृष्ठ 10,000

वार्षिक शुल्क
300 रुपये
दस वर्ष
2100 रुपये
आजीवन
3100 रुपये

विज्ञापन देकर अपने प्रतिष्ठान को जन-जन तक पहुंचाएं

कृपया निम्नलिखित विवरण के अनुसार मुझे 'समृद्ध सुखी परिवार' सदस्यता सूची में शामिल करें:

नाम.....

पता.....

फोन..... ई-मेल.....

सदस्यता अवधि..... राशि रूपए..... द्वारा मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट संख्या.....

दिनांक.....

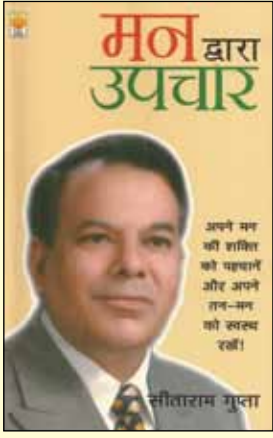
आवेदक के हस्ताक्षर

नोट: सदस्यता शुल्क की राशि का चेक/ड्राफ्ट सुखी परिवार फाउंडेशन, नई दिल्ली के नाम से बनाएं या एक्सिस बैंक खाता संख्या 119010100184519 में सीधा जमा करवाएं। मनी ट्रान्सफर के लिए IFS CODE UTIB000119 का प्रयोग करें।

सुखी परिवार फाउंडेशन

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110 092

फोन: +91-11-26782036, 26782037, मोबाइल: 09811051133



मन द्वारा उपचार

:: ललित गर्ग ::

मन का कोई नाम या रूप नहीं होता। मन एक शक्ति है, एक रोशनी है। मन की एक किरण भी जीवन और जगत की ऊँचाई तक पहुँचाने में सक्षम है। अपने मन की शक्ति को पहचानने और अपने तन-मन को स्वस्थ रखने के लिये बहुचर्चित लेखक सीताराम गुप्ता ने 'मन द्वारा उपचार' पुस्तक का सृजन किया है। यह पुस्तक उनके स्वयं के अनुभव के साथ-साथ मन द्वारा उपचार

की विभिन्न विधियों के गहन अध्ययन-मनन की सार्थक एवं प्रभावी प्रस्तुति है। लेखन की इस विषय में गहरी पकड़ का कारण श्रेष्ठ-मनीषी गुरुओं से प्राप्त प्रशिक्षण एवं उसके आधार पर गहन-गंभीर साधना है। रेकी, विपश्यना, हिप्नोथेरेपी, साइकिक सर्जरी, क्रिस्टल हीलिंग, लामाफेरा, पेंडुलम डाउजिंग, क्रिया-योग जैसी अनेक विधियों पर निरन्तर प्रयोग एवं शोध के पश्चात् मन द्वारा उपचार जैसे गहन आध्यात्मिक एवं गंभीर विषय को लेखक ने लोकव्यापी बनाया है।

इस पुस्तक में जो विषय आते हैं वे हैं- अपना उद्धार स्वयं करें, मन द्वारा उपचार क्या है?, रोगों का मनोदैहिक स्वरूप, मन द्वारा उपचार कैसे संभव है? मन द्वारा उपचार की विभिन्न विधियाँ, विभिन्न पद्धतियों में समान तत्व, प्रमुख सीढ़ियाँ, साधना के लिये समय, स्थान तथा परिवेश, निश्चयात्मक स्वीकारोक्ति की तकनीकें, किस प्रकार की बीमारियों का

उपचार संभव एवं मन द्वारा किनका उपचार इत्यादि ग्यारह लेख। यह पुस्तक मन द्वारा उपचार को परम प्रतिष्ठा देती है क्योंकि संभवतः इतनी सहज और सरल अभिव्यक्ति में मन की इतनी गूढ़ एवं गहन विवेचना का यह अपना एक अनूठा और मौलिक प्रयास है।

डॉ. कर्णसिंह ने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि मन द्वारा उपचार की कला का अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये, भावनात्मक सन्तुलन के लिये, आध्यात्मिक उन्नति के लिये, व्यक्तित्व विकास तथा आर्थिक समृद्धि के लिये, सामाजिक व्याधियों एवं बुराइयों के उपचार के लिये तथा जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिये कारगर रूप से उपयोग कर सकते हैं। सीताराम गुप्ता एक प्रबुद्ध एवं जागृत लेखक हैं। उनके मन में व्यक्ति व समाज के उत्कर्ष की गहरी तड़प है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्यात्म एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये वे निरन्तर प्रयासरत हैं।

प्रस्तुत कृति को पढ़ते हुए सहज ही कहा जा सकता है कि इसमें व्यक्त विचार अनुभवजन्य और प्रायोगिक है। पुस्तक को लेखक ने नायाब बनाया है। यह पुस्तक हर पाठक की जिंदगी बदलने और उसे नया मोड़ देने में सक्षम है। मन की विभिन्न सन्दर्भों में की विवेचना की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जो आम पाठक के साथ-साथ शोधार्थियों के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय है। पुस्तक की छपाई साफ-सुथरी, त्रुटिरहित है। पुस्तक बार-बार पठनीय एवं संग्रहणीय है।

पुस्तक : मन द्वारा उपचार

संकलन : सीताराम गुप्ता

प्रकाशक : फुल सर्कल पब्लिशिंग प्रा. लि.
जे.40, जोरबाग, नई दिल्ली-110003

मूल्य : 95 रुपये, पृष्ठ : 144



उत्तीसगढ़ के साहित्य साधक

:: प्रांजल कुमार ::

वर्तमान की सही पहचान के लिए अतीत की साझेदारी आवश्यक है। अतीत को उलटने पलटने का मकसद उन भूली बिसरी कड़ियों से अपने को जोड़ना है। हम उनकी स्मृतियों से जुड़कर ही साहित्यिक युगबोध की पहचान कर सकते हैं। साहित्य की यही

इतिहास दृष्टि है और यही हमें वर्तमान का भोक्ता बनाती है।

'उत्तीसगढ़ के साहित्य साधक' पुस्तक में लेखक ने 31 साहित्य साधकों के व्यक्तित्व व उनके कृतित्व पर अपनी लेखनी चलायी है, जो आज जीवित नहीं हैं, उनकी साहित्यिक स्मृतियों को कैसे सहेजा जाए, उसके लिए यह सकारात्मक प्रयास है। इस प्रदेश की सृजनशील प्रतिभाएं हिन्दी साहित्य के विकास में अपनी भूमिका निभाती आ रही है। इस पुस्तक के प्रकाशन से निश्चित रूप से उन्हें पढ़ा जायेगा और इस दिशा में प्रयास होगा, ऐसी आशा की जा सकती है।

इस पुस्तक के लेखक प्रो. अश्विनी केशरवानी की इतिहास, साहित्य और उत्तीसगढ़ की परम्पराओं में गहरी अभिरुचि के कारण ही पुस्तक प्रकाशन में संस्कृति विभाग उत्तीसगढ़ शासन का सहयोग मिलना सुखद है। कुल मिलाकर पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है।

पुस्तक : उत्तीसगढ़ के साहित्य साधक

लेखक : प्रो. अश्विनी केशरवानी

प्रकाशक : श्री प्रकाशन, ए-14, आदर्श नगर
दुर्ग (उत्तीसगढ़)

मूल्य : 300 रुपये, पृष्ठ : 192

शमूख सुखी परिवार | जून 2013



कुसी बिन सब सून

:: बरुण कुमार सिंह ::

कविता के बारे में किसी से भी पूछा जाए तो उसका पहला जवाब होता है, कविता विचारों को अभिव्यक्ति करने का माध्यम है। कविता मन की संतुष्टि से नहीं, वरन् आत्मा की परम संतुष्टि से प्रकट होती है। डॉ. गोपाल बाबू शर्मा ने

अपनी लेखनी के माध्यम से 'कुसी बिन सब सून' कविता संग्रह में विभिन्न पक्षों को समेटा है। जिसमें मुख्य हैं- नेता-चिंतन, साधु-राजनेता, यह जिला जेल है, सूखी घास का डर, परम सत्य, कार्रवाई, भयमुक्त समाज, विडम्बना, विदेशी मूल का मुद्दा, करों का भार, पाक दोस्ती, मोहरा, क्रांति की मशालें, कलाई गई खुल, मंत्रीजी का सपूत, वक्त की बात, जनता के नाम पर, हार्दिक बधाई, विदेशी चकाचौंध, उदारीकरण, एक साल और बीता आदि प्रमुख हास्य-व्यंग्य कविताएं हैं। जिनमें कुछ पक्तियाँ हैं-

आज के साधु-संत त्यागी-वैरागी नहीं,
बल्कि नेता और राजनेता भी होते हैं।

बाला और हाला के साथ,

ये रात में सोते हैं और दिन में जागते हैं।

पुस्तक : कुसी बिन सब सून

लेखक : डॉ. गोपाल बाबू शर्मा

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन, डी-31, रमेश विहार
अलीगढ़-202001 (उत्तर प्रदेश)

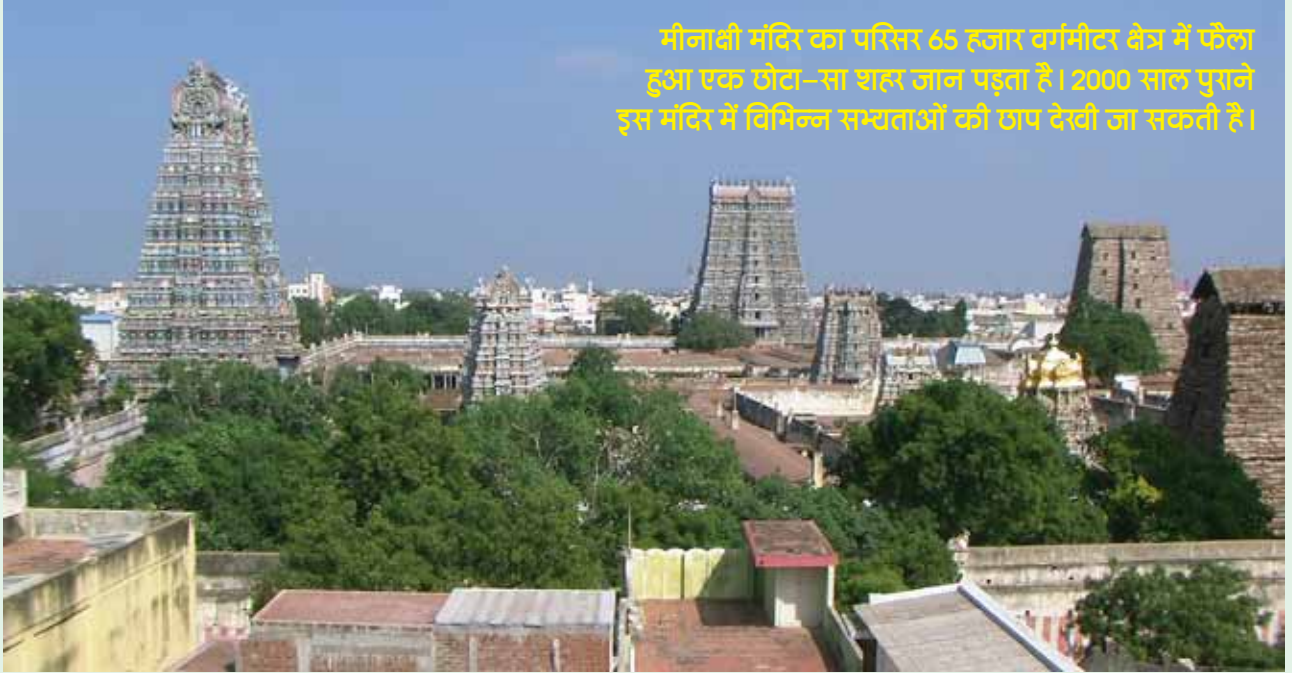
मूल्य : 70 रुपये, पृष्ठ : 64



पुखराज सेठिया

मदुरै

तमिल संस्कृति का गौरव



मीनाक्षी मंदिर का परिसर 65 हजार वर्गमीटर क्षेत्र में फैला हुआ एक छोटा-सा शहर जान पड़ता है। 2000 साल पुराने इस मंदिर में विभिन्न सभ्यताओं की छाप देखी जा सकती है।

मदुरै शहर तमिल संस्कृति का गढ़ माना जाता है, जो कभी दक्षिण पांड्य की राजधानी भी थी। तमिल काव्य परिपाटल में इसकी तुलना कमल से की गई है। मदुरै की सीमाएं उसकी तीन पाहड़ियां-यन्नेमलाई, नागमलाई और पशुमलाई है, जिन्हें पहले क्रमशः हाथी, सर्प और गाय कहा जाता था। मदुरै में कई दर्शनीय स्थल हैं।

मीनाक्षी मंदिर का परिसर 65 हजार वर्गमीटर क्षेत्र में फैला हुआ एक छोटा-सा शहर जान पड़ता है। 2000 साल पुराने इस मंदिर में विभिन्न सभ्यताओं की छाप देखी जा सकती है। मंदिर की चारों दिशाओं पर ऊंची-ऊंची मीनारों से बने द्वार बेहद सुंदर लगते हैं, जिसमें 160 फीट ऊंची दक्षिणी मीनार सबसे खास है। मंदिर में प्रवेश पूर्व दिशा से किये जाने की मान्यता है, जहां श्रद्धालु अष्टशक्ति-मंडप से होकर भीतर आते हैं। सबसे पहले देवी मीनाक्षी मंदिर और बाद में भगवान सुरदेश्वर के दर्शन करना अब प्रथा बन चुकी है।

अष्टशक्ति मंडप में नजरें सबसे पहले उस मनोहर मूर्ति पर पड़ती हैं, जो मीनाक्षी देवी के विवाह को दर्शाती हैं। कलात्मक चित्रकारी आपको पलकें झपकाने की इजाजत नहीं देगी। आज भी वर्षों से गणेशजी और सुब्रह्मण्यजी की मूर्तियां ऐसी लगती हैं, जैसे कल की बनाई गई हों। खंभों पर अष्टशक्ति के चित्रों को उकेरा गया है। दीवारों पर शिवजी की विभिन्न लीलाओं

के चित्र हैं।

मीनाक्षी नायक मंडप का स्थान उसके निर्माता की याद में ही रखा गया है। जो रास्ता अष्टशक्ति मंडप को जोड़ता है, वहीं भगवान शंकर, भील और देवी पार्वती आपको भीलनी के वेश में दर्शन देते हैं। इस मंडप के पश्चिमी कोने में 1008 दीपों की कतार जलती है, जो इस जगह को रोशनी के अलावा किसी उत्सव



का आभास भी कराती है।

स्वर्णपद्म जलाशय को स्वर्ण कमल तालाब कहा जाता है। कहा जाता है कि देवराज इन्द्र पूजा के लिए स्वर्ण कमल यहीं से तोड़ कर ले जाते थे। तालाब के बीचोबीच आज भी स्वर्ण कमल देखा जा सकता है। घाटों की कतार भी तालाब को अधिक आकर्षक बनाती है। यहां से उत्तर की ओर संघ कवियों में मुख्य 24 व्यक्तियों के शिला रूप में दर्शन भी किये जा सकते हैं।

श्री मीनाक्षी प्रतिस्था स्थान में प्रवेश के लिए तिमजिला गोपुरम (द्वार) है। तांबे की मूर्ति द्वारपालकों के असली होने का अहसास कराती है। इसी पवित्र स्थान पर अरुणगिरि नाथ के रचे 'तिरुष्पुकष' के अनेक पद दीवारों पर अंकित किये हुए हैं। यहीं महामंडप में पहुंचने के लिए आरुकाल पीठ से होकर गुजरना होता है, जहां बैठकर कभी कुमारगुरुपरर ने 'मीनाक्षी अम्मै पिल्लै' तमिल काव्य रचा था। महामंडप में ही ऐरावत, विनायकमूर्ति, मुत्तुकुमार का आसन और दिव्य शैयागार भी है।

मीनाक्षी मंदिर से करीब 1.5 किलोमीटर की दूरी पर 1636 में बना यह थिरुमल नायक पैलेस अपनी बढ़िया वास्तुकला के लिए भी जाना जाता है।

-एम-25, लाजपत नगर-2
नई दिल्ली-110024



गणि राजेन्द्र विजय

सर्वधर्म समभाव

धर्म एक समग्र सत्य साधना है। संसार के किसी भी मनुष्य को अच्छा मनुष्य बनने के लिए, श्रेष्ठ सामाजिक व्यक्ति बनने के लिए जिन आदर्शों तथा जीवन मूल्यों को अपने जीवन में धारण करना है, अपने आचरण में उतारना है, वही धर्म है।

सर्वधर्म समभाव में व्यक्ति जब परस्पर स्नेह एवं प्रेमभाव की भूमिका में पहुंचता है तब वह धर्म की वास्तविक परिधि में प्रवेश करता है। धर्मभावना से चेतना का शुद्धिकरण होता है, वृत्तियों का उन्नयन होता है। धर्म व्यक्ति की पाशविकता को समूल नष्ट करके उसमें मानवीयता एवं सामाजिकता के गुणों का उद्रेक करता है। धर्म व्यक्ति को जीने की कला सीखाता है। धर्म व्यक्ति के आचरण को पवित्र एवं शुद्ध बनाता है। इससे सृष्टि के प्राणियों के प्रति करुणा एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है।

मनुष्य को अपने जीवन में जो धारण करना चाहिए, वही धर्म है। धर्म दिखावा नहीं, रूढ़ि नहीं, प्रदर्शन नहीं, किसी के प्रति घृणा नहीं। मनुष्य और मनुष्य के बीच भेदभाव नहीं अपितु मनुष्य में मानवीयता के गुणों की विकासशक्ति है, सार्वभौम चेतना का सत्-संकल्प है। अपनी संपूर्णता में, समग्रता में, यथार्थता में धर्म को टुकड़ों में नहीं बांटा जा सकता, उसे खंडों में नहीं तोड़ा जा सकता। धर्म एक समग्र सत्य साधना है। संसार के किसी भी मनुष्य को अच्छा मनुष्य बनने के लिए, श्रेष्ठ सामाजिक व्यक्ति बनने के लिए जिन आदर्शों तथा जीवन मूल्यों को अपने जीवन में धारण करना है, अपने आचरण में उतारना है, वही धर्म है।

धारण करने योग्य क्या है? क्या हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अपवित्रता, अहंकार, क्रोध, असत्य, असंयम, व्यभिचार, परिग्रह आदि विकार धारण करने योग्य है? यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक हो जाए तो यह संसार चार दिन भी नहीं चल सकता और न इसका अस्तित्व ही कायम रह सकता है। यदि समाज के सभी सदस्य झूठ बोलने लगे तो इसका परिणाम क्या होगा? समाज के सदस्यों में परस्पर विश्वास-भाव समाप्त हो जाएगा। यदि समाज के सभी व्यक्ति यौन-मर्यादा को तोड़ दें तो उस स्थिति में क्या परिवार की कल्पना की जा सकेगी? यदि सभी व्यक्ति असंयमी, परिग्रही एवं व्यभिचारी हो जायेंगे तो इसका परिणाम क्या होगा? इन्द्रिय भोगों की तृप्ति असंख्य भोग-सामग्रियों के निर्बाध सेवन एवं संयम-शून्य कामाचार से संभव नहीं है।

अहिंसा का आधार अपरिग्रह है तथा अपरिग्रह का आधार संयम है। जब व्यक्ति अपने को नियंत्रित एवं अनुशासित करता है, सामाजिक नियमों का पालन करता है, दायित्व बोध की दृष्टि से जीवन व्यतीत करता है तभी उसके अधिकार तथा उसकी स्वतंत्रता कायम रह पाते हैं। जब व्यक्ति भौतिक वस्तुओं के

संग्रह एवं परिग्रह का संयम करता है तभी आर्थिक विषमताओं का अंतराल कम होता है तथा उत्पादित वस्तुएं समाज की प्रत्येक इकाई तक पहुंच पाती हैं, प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो पाती है।

इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। इच्छाएं तो आकाश के समान अनंत हैं। मन की कामनाओं को नियंत्रित किए बिना समाज रचना संभव नहीं है। उपनिषद् साहित्य में आत्मा रथी, शरीर रथ, बुद्धि सारथी, मन प्रगाह, विषय विकार मार्ग तथा इन्द्रियां अश्व के रूप में चित्रित हैं। घोड़ों को यदि लगाम न लगाई जाए तो वे स्वच्छंद रूप में कुमार्ग की ओर भाग सकते हैं। उस स्थिति में रथी, सारथी, रथ सभी नष्ट हो जायेंगे।

हमारी कामनाओं को नियंत्रित करने की शक्ति या तो धर्म में होती है या फिर शासन-व्यवस्था में। व्यक्ति अपनी चेतना के द्वारा अपने को अनुशासित करता है। जब समाज के सदस्यों में यह अनुशासन नहीं रह जाता तो व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य शक्ति निर्ममता के साथ कठोर दण्ड व्यवस्था लागू करती है। धर्म भावना से प्रेरित होकर व्यक्ति आत्मानुशासन करता है। शासन के द्वारा विधि-विधानों तथा दण्ड प्रक्रिया द्वारा व्यक्तियों पर लगाम लगाई जाती है।

धर्म की प्रासंगिकता एवं प्रयोजनशीलता व्यक्ति विशेष का कल्याण करना, व्यक्ति को माया रूपी आवरण से उन्मुक्त कर स्वर्ग या वहिश्त में भेजना, उसे राग द्वेषातीत कराकर मुक्त अवस्था में पहुंचाना तथा निर्वाण दिलाना, मनुष्य को 'इस्लाम' अर्थात् शांति में प्रविष्ट कराना आदि व्यक्ति सापेक्ष प्रक्रियाओं मात्र में नहीं है, शांति, व्यवस्था, स्वतंत्रता, समता, प्रगति एवं विकास से संबंधित समाज-सापेक्ष परिस्थितियों के निर्माण में भी निहित है।

धर्म का संबंध आचरण से है। धर्म आचरण मूलक है। दर्शन एवं धर्म में अंतर है। दर्शन मार्ग



दिखाता है, धर्म की प्रेरणा से हम उस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। हम किस प्रकार का आचरण करें यह रहस्य दर्शन से प्राप्त होता है। जिस समाज में दर्शन एवं धर्म में सामंजस्य रहता है, ज्ञान एवं क्रिया में अनुरूपता होती है उस समाज में सुख, शांति रहती है तथा सदस्यों में परस्पर मैत्रीभाव का आधिक्य रहता है। जिस समाज में दर्शन एवं धर्म परिपूरक न होकर विषम एवं व्यतिरेकी हो जाते हैं उस समाज की व्यवस्था भी संघर्षमूलक हो जाती है।

भारतवर्ष में दर्शन और चिंतन के धरातल पर जितनी विशालता, व्यापकता एवं मानवीयता रही है उतनी आचरण के धरातल पर नहीं रही। जब चिंतन एवं व्यवहार में विरोध उत्पन्न हो गया तो भारतीय समाज की प्रगति एवं विकास की धारा भी अवरुद्ध हो गई। दर्शन के धरातल पर हमारे चिंतकों ने प्रतिपादित किया कि यह जिज्ञासा भी स्थावर जंगम संसार है वह सब एक ही पर ब्रह्म के द्वारा आच्छादित है। उन्होंने संसार के सभी प्राणियों को 'आत्मवत्' मानने एवं जानने का उद्घोष किया। सामाजिक धरातल पर समाज के सदस्यों को उसके गुणों के आधार पर नहीं अपितु जन्मना आधार पर जातियों, उपजातियों, वर्णों, उपवर्णों में बांट दिया गया तथा इनके बीच ऊंच-नीच की दीवारें खड़ी कर दी गयीं। जब सभी जीव एक ही ईश्वर या परमात्मा की संतान हैं अथवा जीवमात्र में आत्मशक्ति है तब सामाजिक धरातल पर इस प्रकार के भेद का क्या औचित्य?

धर्म साधना की अपेक्षा रखता है। धार्मिक साधक को रागद्वेष रहित होना होता है। धार्मिक चिंत प्राणी मात्र की पीड़ा में द्रवित हो जाता है। संभवतः इसी कारण तुलसीदास ने कहा-

पर हित सरिस धर्म नहि भाई,
पर पीड़ा सम नहि अधमाई।



SHREE AADINATH TRADING COMPANY



BLACK DIAMOND MOVERS

COAL CONSULTANTS, COAL CO ORDINATORS, COAL MERCHANTS ,COAL HANDLING AGENTS



HIGHLIGHTS

- ◆ Leading Coal Handling Agents and Coordinators since 45 years.
- ◆ Complete Coal Solutions under one Roof.
- ◆ Handling bulk Coal requirements of Power Plants, Iron and Steel Plants and Paper Mills from the various subsidiaries of Coal India Ltd.
- ◆ Expertise in Coal Linkage from Ministry of Coal and Coal India Ltd.
- ◆ Expertise in Rake Loading/Unloading and Liasioning.



JAIN GROUP

Branches: Assam, Madhya Pradesh
Maharashtra, Uttar Pradesh
Uttarakhand, West Bengal
Jharkhand

CONTACT DETAILS

Black Diamond Movers
Flat 3A, Block 11,
Space Town Housing Society,
V.I.P. Road, Raghunathpur,
Kolkata- 700052
Contact Person:
Amit Jain- +91 9412702749
Ankit Jain- +91 9830773397
blackdiamondmovers@gmail.com

Indian Charity & Welfare Exchange



The mission of ICWE is to achieve Global Excellence in philanthropic services and to dedicate ourselves for worldwide Donor-Donee Exchange, keeping in the view the needs and interests of the society.

ICWE is committed to :-

- ❖ The society by making a sustainable difference in the life of the less privileged children, women, aged, disabled and of those who are living in poverty & injustice.
- ❖ Work as an Exchange between Donor and Donee to facilitate their objective and to support them identifying the potential donor or donee and the opportunities that each side offers to the other side.
- ❖ Provide philanthropic advisory services to donors and NGOs to help them in their aims & objects and to perform their work properly so that they can achieve their ultimate goal to serve the under privileged sections of the society.
- ❖ Maintain a worldwide accessible data bank of NGOs, Donors and Donees to make this field more collaborative.

Advisory Services :

ICWE with its highly qualified and focused team of professionals provides specialized and valuable advisory services to NGOs, Trusts, Corporate and other philanthropic organizations on following area:

- < Legal
- < Financial
- < Management
- < Project
- < Fund Raising
- < Event Management

ICWE Care for All :

ICWE is committed to serving various social causes. It launched various program for underprivileged sections of the society. Main areas are:

- < Children
- < Women
- < Aged People
- < Disabled
- < Education
- < HIV



Register with us :

Donor: ICWE provides a global platform to Donors to identify a cause that is appropriate for their support.

Done: ICWE provides financial assistance to individual and Institutions. It also provide a platform to searching and approaching potential donors for their cause.

Please register on website and explore the world of philanthropy.

www.Indiancharityexchange.com
info@indiancharityexchange.com

Indian Charity & Welfare Exchange
A-56/A First Floor, Lajpat Nagar-II
New Delhi-110024, India
Phone: +91-11-41720778
Fax: +91-11-29847741